Reg. No. 62/dksVk-1993-94
Ph. 0744-2504501-504
Fax No. :0744-2501325

Reg. No. INC02/APR/1205Dt.7.04.05
RNCNO.vkj-,u-lh@ekU;rk-10302Dt.12.04.05

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

Hkkjr fodkl ifj"kn~ lsok laLFkku
izrki uxj] rkrkdMh]dksVk

माधव नर्सिंग स्कूल

(भारत विकास परिषद् सेवा संस्थान का उपक्रम)

सुभाष कोलोनी, गोविन्द धाम, किशोरपुरा, कोटा-३२४००६ (राज.)
दूर.- ०७४४-३२६४५६८ मोबा.६३५१५०५७१८

Courses Conducted

1. GNM -General Nursing Midwifery
2.DPN -Diploma in Practical Nursing
3.DNA -Diploma in nursing Assistant
4.FNA -Female Nursing Assistant
5. VHN -Village health Nurse

MR. O.P.Vijayvargi (Secretary)
MR. K.K. Gupta (Treasure)
MR. P.K. Jain (President)

श्रीराम जन्म भूमि विशेषांक के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

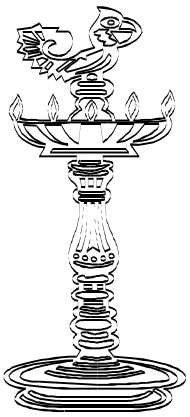

राम दास अग्रवाल

(सांसद राज्यसभा)

आदित्य प्रोपकॉन प्रा.लि.

अरुण अग्रवाल

निदेशक

श्रीरामजन्मभूमि विशेषांक की हार्दिक शुभकामनाएँ

भँवरलाल मांधनियां

उषा सदन,113/12, गाडोदिया नगर, घाटकोपर (पूर्व) मुम्बई -400077

मोबा. 08108642341 दूरभाष. 022-25060528

श्रीरामजन्मभूमि विशेषांक की हार्दिक शुभकामनाएँ

0145-2441714,
9828083522

श्रीमती सुषमा /श्री बी.पी. मित्तल

अभिकर्ता- भारतीय जीवन बीमा निगम

निवास- ''मोती भवन''103, आदर्श नगर, अजमेर,

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

02925 223472
M-9799706477

जय श्री गणेश ट्रेडिंग कम्पनी

जनरल मर्चेन्ट व कमीशन एजेन्ट

कृषि उपज मण्डी, फलोदी ३४२३०१ जोधपुर(राज.)

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Ashok Agrawal

Ph. 0141-2367972
2365093, 2281602
Mob. 9829069909
9351414676

Ashok Trading Company

Deals in : Solvent Printer All Raw Matarial,
Ink, Flax & Arcrelic Sheets

H.O.51, Indira Colony, Opp. Water Box Office, Bani Park, Jaipur
B.O.: B-8, Marwa House Near Singh Dwar, New Colony Indira Bazar, Jaipur
E-mail: atc19655@yahoo.com, atc19655@gmail.com

राजा पार्क व्यापार मण्डल जयपुर

की ओर से दीपावली की

हार्दिक शुभकामनायें।

अध्यक्ष	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
रवी नैय्यर	मेहर परनामी	विनोद सरदाना
93145&04311	93141&60666	98291&72484

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

चक्रपाणि आयुर्वेद क्लिनिक
एवं रिसर्च सेन्टर

8,डायमंड हिल, बिरला मन्दिर केपीछे, तुलसी सर्किल,शांति पथ, जयपुर-4

Qksu&91&141&2624003 QSD1 &91&141&2620746

eksckby&91&98281 02003

chakrapaniayurveda.com . ayu.in . learnayurveda.com

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

SUDEEP MEDICOS

Facilities
- All kind of medicines under one roof
- Free medical information
- Freehome delivery
- Blood pressure check up
- Dressing, injection by qualified

Shope No.1, 7-JHA-1Jawahar Nagar,Jaipur 0141-2653262

ॐ

श्री रामजन्म भूमि विशेषांक के प्रकाशन पर पाथेय कण
के पाठकों को दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

भारतीय शिक्षा समिति धौलपुर द्वारा संचालित

प्राचार्य:- श्री अशोक शर्मा

[illegible]

उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर, धौलपुर रोड, बाड़ी ३२८०२१

प्राचार्य:- श्री भगवान सहाय शर्मा

उच्च प्राथमिक बालिका आदर्श विद्या मन्दिर किरी बाड़ी ३२८०२१

प्राचार्य:- श्री राम कुमार शर्मा

उच्च प्राथमिक आदर्श विद्या मन्दिर, कोटपाडा, बाड़ी ३२८०२१

प्रबंध समितिः-

डॉ. राम विलास गुर्जर	डॉ. शिव दयाल मंगल	शिव शंकर बिन्दल
अध्यक्ष	व्यवस्थापक	कोषाध्यक्ष
मोबा. 9314180633	मोबा. 9351077388	मोबा. 9414710310

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

94481 56437
98808 08404
98449 18152

B. Vinod Kumar, Tara Arya
V. Sandip Kumar, Priya Arya

JYOTHI PAWN BROKERS & JEWELLERS

Opp. Govt. Haspital, GANDASI-573 119,
Arsikere Tq, Hassan Dist.

दीपावली की हार्दिक
शुभकामनाओं सहित

Mo. 09414085950
Ph.01568-220950

खेमाराम मेघवाल

(पूर्व खनिज राज्य मंत्री 'राजस्थान सरकार')

सुजानगढ़ जिला चूरू (राज.)

पाथेय
कण (पाक्षिक)

कार्तिक (शु.) १०, २०६७

युगाब्द ५११२

१६ नवम्बर २०१०(संयुक्तांक)

वर्ष २६ अंक १४

सम्पादक
के एल चतुर्वेदी
v
सहयोगी
मातादीन सिंह
सत्येन्द्र शर्मा
v
प्रबन्ध सम्पादक
माणकचन्द
v
सह प्रबन्ध सम्पादक
ओम प्रकाश
v
व्यवस्थापक
रमाकान्त शर्मा
v
आवरण
राज ब्लॉक
v
पृष्ठ संयोजन
कौशल रावत
v
प्रकाशक
पाथेय कण संस्थान
पाथेय भवन, बी-१६, न्यू कॉलोनी,
जयपुर-१, दूरभाष : २३७६४६४

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	₹ १००/-
१५ वर्षीय	₹१०००/-

प्रबन्धकीय कार्यालय
'पाथेय भवन', बी-१९,न्यू कॉलोनी,
जयपुर- ३०२००१ दूरभाष : २३७४५९०
फैक्स: ०१४१-२३६८५९०
Website : www.patheykan.in
E-mail:- patheykan@gmail.com
pathay_kan@yahoo.com

॥ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ॥ संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है ॥

इस अंक में

६	जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि	-शास्त्री कोसलेन्द्र दास
११	सशक्त भारत का राजमार्ग है श्रीराममन्दिर	-कन्हैया लाल
१५	श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति संघर्ष का इतिहास	-मातादीन सिंह
२१	पूरी अयोध्या राममय थी	-राम अवतार सिंघल
२५	घेरा बन्दी पार कर पहुँचे	-सत्य नारायण गुप्ता
२६	अहिंसक कार सेवकों की हत्याएं	-डॉ. कैलाश कुमार
३१	शवयात्रा में शामिल होकर पुल पार किया	-जयबहादुर सिंह
३६	राजस्थान के बलिदानी कार सेवक	-संकलित
४३	किसे पता है राष्ट्रीय शर्म का मतलब	-शैलेष मटियानी
४७	अयोध्या आंदोलन से जुड़े प्रमुख व्यक्तित्व	-सत्येन्द्र शर्मा
५२	विवादित स्थान श्रीराम जन्मभूमि है	-
५५	हमारी सनातन आस्था का अनुमोदन	-मोहनराव भागवत
५७	मुस्लिम समाज पूर्वजों की गलती न दुहराये	-पू.रामसुखदासजी महाराज

कविताएं

१०	अवध भवन सम दंडक कानन	-रमेश कुमार शर्मा
१२	रामलला आजाइए	-डॉ. मोईनुद्दीन 'शाहीन'

विविध

संघ के कार्यकारी मण्डल के प्रस्ताव-५६, आपने लिखा है -६६

॥ बंदऊँ अवध पुरी अति पावनि, सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ॥

जय विद्या !! जय संस्कृति !! जय भारत !

आदर्श विद्या मन्दिर समिति, भरतपुर

दूरभाष - 222568, 226928

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित एवं भारतीय शिक्षा समिति जयपुर से सम्बद्ध)

दीपावली के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनायें।

बालक - बालिकाओं के सर्वांगीण विकास एवं संस्कार युक्त शिक्षा के लिए आदर्श विद्या मन्दिर में प्रवेश दिलावें।

* उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर – केशवनगर(भरतपुर),रणजीतनगर(भरतपुर)
* माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर – बयाना, वैर, रूपवास, उच्चैन, नदबई, कामाँ, डीग एवं रूदावल
* बालिका माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर – जवाहरनगर (भरतपुर)
* उच्च प्राथमिक आदर्श विद्या मन्दिर – पुराना बयाना बसस्टैण्ड (भरतपुर), भुसावर, खानुआँ, ,कलसाडा, जुरहरा, पहाडी, कुट्टी मौहल्ला कामाँ
* बा.उ.प्रा.आदर्श विद्या मन्दिर – बयाना, रणजीतनगर, डीग, कटरा नदबई
* प्राथमिक आदर्श विद्या मन्दिर – कोडियन मौहल्ला (भरतपुर), उच्चैन, नदबई शहर, नगर, वैर, केशवनगर, गुनसारा, नौनेरा, कुम्हेर, सीकरी, गोपालगढ़
* ब्रज मेवात क्षेत्र विद्यालय – बौडोली, गंगोरा, कैथवाड़ा, पथरोड़ा, छिछरवाड़ी, ऊँधन, नगला खोह, नन्देरावास, उदयपुरी

लक्ष्मीनारायण गुप्ता अध्यक्ष | **श्याम सुन्दर गुप्ता** कोषाध्यक्ष | **डॉ. उदयवीर सिंह जूरैल** व्यवस्थापक

आदर्श विद्या मन्दिर समिति परिवार, भरतपुर

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

एण्ड सोनोग्राफी रिसर्च सेन्टर

उपलब्ध सुविधायें

३०० एम.ए. एक्सरे मशीन, सोनाग्राफी ई.सी.जी. सभी प्रकार की लेबोरेट्री जांच की सुविधा, सभी प्रकार के स्पेशल एक्सरे, सम्पूर्ण स्वास्थ्य जांच सुविधा व मरीज के घर पर ई.सी.जी. सोनोग्राफी एवं सेम्पल लाने की सुविधा

राम सहाय पंचौली | रवि शंकर शर्मा *9828085408* | नरेन्द्र कुमार शर्मा *9887031405*

ब्रांच-।

मेमोरियल हॉस्पीटल

ए-२२, पीतल फैक्ट्री शास्त्री नगर रोड़, जयपुर

फोनः*-2280590*

ब्रांच-॥

अस्थमा भवन

श्री राम मार्ग, सिने स्टार के सामने, सेक्टर-६ विद्याधर नगर, जयपुर

फोनः*-2235005*

समय प्रातः *8.00* बजे से सायंकाल *8.00* बजे तक

gkfrZd 'kqHkdkeukvksa ds lkFk ☎ 07432-234600

संजीवनी व्यास हॉस्पीटल अनुसंधान केन्द्र प्रा.लि.

पाटन रोड़, झालावाड़

विशेष : १०० बेडेड बहुसुविधायुक्त अस्पताल

श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामना सहित

जटाशंकर शर्मा

9352602687

डॉ. राधाकृष्णन् आई.टी.आई., कोटा

विवेकानन्द आई.टी.आई., कोटा

(भारत सरकार एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्यता प्राप्त)

शुभ दीपावली

gkfrZd 'kqHkdkeukvksa ds lkFk

9414180656
9414487770
9672986856

विनोद फिलिंग स्टेशन

(डीलर- भारत पेटोलियम)

पार्थ टेडिंग कम्पनी

ई-508(बी), रोड़ नं.6 आई.पी.आई.ए., कोटा(राज.)

मनोगत

भारतीय इतिहास का एक अद्वितीय आंदोलन

बीते ३० सितम्बर को लखनऊ खण्ड-पीठ का निर्णय आने के बाद श्रीराम जन्मभूमि का विषय फिर से चर्चा में आ गया है। साठ सालों की लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद यह तो प्रमाणित हो गया कि अयोध्या का विवादित स्थल ही प्रभु श्रीराम का जन्म स्थान है। न्यायालय के निर्णय से एक ओर जहाँ जन्मभूमि पर मंदिर के निर्माण का मार्ग साफ हुआ, वहीं दूसरी ओर, निर्णय की उग्र प्रतिक्रिया न होने से देश के लोगों ने राहत की सांस भी ली। सभी पक्ष न्यायालय के फैसले से संतुष्ट से दिखाई दिये। इसी के साथ विवादित स्थल के तीन हिस्सों में बँटवारे के आदेश से असमंजस की स्थिति भी बनी। इसी के परिणाम-स्वरूप कुछ दिनों तक मिल-बैठ कर मामला निपटाने और समझौते के प्रयासों का वातावरण बना, लेकिन बाद में स्पष्ट हो गया कि मुस्लिम पक्ष सर्वोच्च न्यायालय में अपील करेगा। शेष पक्षों ने भी सुप्रीम कोर्ट की शरण लेने का निर्णय कर लिया है।

अयोध्या आन्दोलन उस समय प्रारम्भ हुआ जब उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री स्व.दाऊदयाल खन्ना ने १९८३ में एक सभा में अयोध्या, मथुरा और काशी के जन्म-स्थानों की मुक्ति की आवश्यकता बताई। गहन विचार-विमर्श के बाद उस समय के समाज के नेतृत्व ने तय किया कि सबसे पहले अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिये जन-आन्दोलन किया जाना चाहिये। तब तक आम-जन को यह पता ही नहीं था कि प्रभु श्रीराम के जन्मस्थान पर एक मस्जिद-नुमा ढांचा खड़ा है जिसके बीच के मुम्बद के नीचे श्रीराम लला का विग्रह विराजमान है और जो हमेशा सींखचों के पीछे ताले में बन्द रहते हैं। भारत के लोगों को तब तक यह भी पता नहीं था कि मुगल औरंगजेब द्वारा ध्वस्त किये गये पवित्र काशी-विश्वनाथ मंदिर की टूटी दीवारों पर ज्ञानवापी मस्जिद खड़ी है और मथुरा में योगेश्वर श्रीकृष्ण के जन्म-स्थल के ठीक ऊपर भी एक मस्जिद है, जिसे 'मस्जिद जन्म-स्थान' कहा जाता है।

वर्ष १९८४ में श्रीराम जानकी रथ-यात्राओं के साथ अयोध्या आन्दोलन का सूत्र-पात हुआ। उसके बाद १८ वर्षों तक चले ऐतिहासिक जन-आन्दोलन ने देश में राष्ट्रीयत्व याने हिन्दुत्व का एक ज्वार ला दिया। ६ दिसम्बर,१९९२ के दिन विवादित ढांचे के धराशायी होने के समय यह ज्वार अपने चरम पर था। पूरे देश में 'जय श्रीराम' के गगनभेदी उद्घोष गूंज रहे थे। आम-जन अपनी जड़ों की ओर लौटने लगा, लोगों को अपनी पहचान का भान हुआ और अपने 'स्व' का अभिमान उनमें जाग्रत हुआ। ३० अक्टूबर १९९० को जब कार-सेवक मुलायम सिंह का चक्रव्यूह भेद कर जन्मभूमि पर पहुँचे और वहां भगवा फहरा दिया तो पूरे देश में दिवाली के बाद एक और दिवाली मनी। समाज का उत्साह ठाठें मारने लगा। उस दिन 'कार-सेवा' और 'कार-सेवकों' को एक नई परिभाषा मिल गई।

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि अयोध्या-आन्दोलन भारत के इतिहास का अद्वितीय और एक महत्वपूर्ण आन्दोलन सिद्ध हुआ। राष्ट्र-भाव का जागरण इसकी अनुपम उपलब्धि थी। आज की पीढ़ी उस ऐतिहासिक जन-आन्दोलन के समय शैशावावस्था में थी। उन्हें नहीं पता कि सन् १९८९ से ९२ तक के तीन वर्षों में राष्ट्र और समाज कैसे एक नई करवट ले रहा था। कैसे गाँव-गाँव में श्रीराम शिलाओं का पूजन हुआ, कैसे श्रीराम-ज्योति अयोध्या से देश के हर घर में पहुँची और किस श्रद्धा से श्रीराम की चरण-पादुकाओं का पूजन किया गया। नई पीढ़ी को उस काल के अद्भुत वातावरण से परिचित कराने तथा अन्य सभी की स्मृतियों को जाग्रत करने के उद्देश्य से हमने यह विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय किया। पृष्ठों की सीमित संख्या में आन्दोलन के सभी पक्षों एवं वर्तमान स्थितियों को समाहित करने का प्रयत्न इसमें किया गया है।

दो दशक पूर्व लगभग इन्हीं दिनों अयोध्या और पूरे देश का वातवरण बड़ा गर्म था। धर्माचार्यों ने ३० अक्टूबर (देवोत्थान एकादशी) १९९० को कार-सेवा की तिथि घोषित कर देश भर के रामभक्तों को अयोध्या पहुँचने का आह्वान किया था। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने किसी भी कीमत पर कारसेवा न होने देने की ठान ली थी। कार-सेवकों ने भी कार-सेवा का संकल्प कर लिया था। दस दिन पहले से अयोध्या की ओर जाने वाली सभी रेलगाड़ियाँ और बसें बन्द कर दी गईं । उत्तर प्रदेश की सीमा में प्रवेश करने वाली प्रत्येक ट्रेन और बस की तलाशी ली जाती थी, कि कहीं इनमें कारसेवक तो नहीं हैं। अयोध्या पहुँचने वाले प्रत्येक मार्ग पर पुलिस की जबर्दस्त चौकसी थी। ऐसे में रामभक्त ढाई सौ-तीन सौ कि.मी. पैदल चल कर खेतों में यात्रा करते हुए, रेल पटरी के सहारे-सहारे चलते हुए अयोध्या पहुँचे। मार्ग में पड़ने वाले गाँवों में इन रामभक्तों की कैसी आवभगत की गई, सब तरह का जोखिम उठा कर ग्राम-वासियों ने किस तरह रामभक्तों का सहयोग किया, यह कभी न भुलाये जा सकने वाला अनुभव है।

ऐसे कुछ अनुभवों को हमने इस अंक में सम्मिलित किया है। तीन दिन पश्चात् कार्तिकी पूर्णिमा को हुए नरसंहार के प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुभव भी इस अंक में संजोये गये हैं। इसके दो वर्ष बाद विवादित ढांचे के धराशाही होने का विवरण भी इसमें है। हेतु यही है कि उस समय के राम-मय वातावरण की एक झलक पाथेय-कण के सभी पाठकों को मिल सके।

जिन पाठकों ने अपने अमूल्य अनुभव हमें प्रेषित किये , हम उनके आभारी हैं। अंक पर अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करायें।

आपका
सम्पादक

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि

q शास्त्री कोसलेन्द्र दास

भारत के प्राचीन वांगमय में अयोध्या का श्रीराम की जन्मभूमि के रूप में अनेक स्थानों पर उल्लेख है। हिन्दू संस्कृति में मोक्षदायिनी एवं अत्यन्त पवित्र जो सात नगरियाँ मानी गई हैं उनमें सबसे महत्वपूर्ण अयोध्या ही है। हजारों वर्षों से अयोध्या भारत के लोगों की श्रद्धा-केन्द्र रही है। इस नगरी का यही महत्व प्रस्तुत आलेख में दर्शाया गया है-(सं.)।

यह भारत माता की पवित्र धरा है, जहां भगवान स्वयं अनेक रूपों में अवतरित होते हैं। इसीलिए इस भक्ति-ज्ञान-कर्मभूमि भारत माता की महिमा हमारे सभी धर्मग्रंथों में लिखी हुई है। इस पूरी भारत भूमि में भी परमात्मा जिस जगह प्रकट होते हैं या लीला करते हैं वह पवित्र भूमि हमारी सर्वस्व एवं हमारे श्रद्धा, आस्था व विश्वास की प्रतीक होती है। अब चाहे वह काशी हो, अयोध्या हो या मथुरा व वृंदावन । ये वे तीर्थ हैं, जहां भगवान स्वयं अपनी कृपा लीला संपन्न करते हैं।

इन सभी दिव्य भूमियों में भी अयोध्या की महिमा सर्वाधिक है और इसका प्रमुख कारण यह है कि यहीं श्रीराम ने जन्म लिया तथा शासन भी किया। आज भी अयोध्या के कण-कण में रामराज्य व श्रीराम की बाल-लीलाओं के दर्शन होते हैं। अयोध्या शब्द का सामान्य अर्थ तो है, 'वह स्थान जहां कभी युद्ध न हुआ हो।' दूसरा अर्थ यह है कि जिसे युद्ध में कोई भी जीत न सके।

अयोध्या सर्वप्रथम

अयोध्या का नाम ७ तीर्थों में सबसे पहले आया है।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावतीचैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

कहने वाले कह सकते हैं कि छंद में अयोध्या का नाम पहले आना उसके प्राधान्य का प्रमाण नहीं। परंतु यह ठीक नहीं, एक प्रसिद्ध श्लोक और है जिससे प्रकट है कि अयोध्या तीर्थ-रूपी विष्णु का मस्तक हैः-

विष्णोः पादमवन्तिकां गुणवतीं मध्ये च कांचीपुरीम्
नाभिं द्वारवतीन्तथा च हृदये मायापुरीं पुण्यदाम्।
ग्रीवामूलमुदाहरन्ति मथुरां नासाच्च वाराणसीम्
एतद्ब्रह्मविदो वदन्ति मुनयोऽयोध्यापुरी मस्तकम्॥

शेष ६ तीर्थों में से अनेक की बड़ाई इसी कोशल राजधानी के संबंध से हुई है। श्रीकृष्ण जी के जन्म से पहले मथुरा को शत्रुध्न ने बसाया था, जिनको श्रीरामचन्द्र ने यमुना तट पर बसे हुए तपस्वियों के सताने वाले लवण को मारने के लिए भेजा था। माया या मायापुरी हरिद्वार का नामांतर है जहाँ अयोध्या के राजा भगीरथ की लाई हुई गंगा पहाड़ों से निकलकर मैदान में आती है और काशी अयोध्या की श्मशान-भूमि है।

ऋग्वेद में भगवान को 'त्रिपाद्विभूति' कहा गया है। वे परमात्मा निरन्तर अपने पार्षदों व भक्तों के साथ विभूतिरूप अयोध्या में निवास करते हैं। इसी अयोध्या का मूल स्वरूप ' साकेत' कहलाता है। भगवान का वह साकेत धाम प्राकृतिक गुणों व काल तथा प्रलय के प्रभाव से परे है। उसी साकेत धाम का भौतिक स्वरूप हमें पृथ्वी पर अयोध्या के रूप में प्राप्त होता है। जैसे समस्त वनस्पतियों में तुलसी, समस्त जीवों में गौमाता व सभी वृक्षों में पीपल श्रेष्ठ है, ठीक उसी तरह समस्त तीर्थों में अयोध्या अन्यतम है।

नित्य लीलास्थली

शिवसंहिता के पंचम पटल में बीसवें अध्याय में कहा गया है-

अयोध्या नन्दिनी सत्यनामा साकेत इत्यपि ।
कोसला राजधानी च ब्रह्मपूरपराजिता ॥
अष्टचक्रा नवद्वारा नगरी धर्मसम्पदाम् ।
दृष्टैवं ज्ञाननेत्रेण ध्यातव्या सरयूस्तथा ॥

अर्थात 'अयोध्या नगरी के अनेक नाम हैं- जैसे नन्दिनी, सत्या,साकेत,कोसला, राजधानी, ब्रह्मपुरी और अपराजिता। यह अयोध्या अष्टदल कमल के जैसी है तथा नौ द्वारों से युक्त है। यह धर्म के धनी लोगों की नगरी है। इसे ज्ञानरूपी नेत्रों से देखना चाहिए तथा नित्य सरयू नदी को प्रणाम करना चाहिए।

भोगस्थानं परायोध्या लीलास्थानं त्वियं भुवि ।
भोगलीलापती रामो निरंकुश विभूतिकः ॥

अंतरिक्ष में स्थित अयोध्या श्रीराम के दिव्य निवास की व पृथिवी पर स्थित अयोध्या उनकी नित्य लीलास्थली है। वसिष्ठ संहिता में ' ब्रह्मज्योतिरयोध्यायाः ' अर्थात् अयोध्या ब्रह्म की ज्योति को धारण करती है, ऐसा बताया गया है । 'साकेत सुषमा' ग्रंथ में अयोध्या नगरी नित्य है। वह आनन्दरूप है। वैकुण्ठ एवं गौलोक भी अयोध्या के ही नाम हैं। इस नगरी की उत्तर दिशा में सरयू बहती है।

अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्दरूपिणी।

सनत्कुमारसंहिता में तो श्रीराम के अयोध्या निवास का बड़ा ही मनोहारी वर्णन है-

अयोध्यानगरे शुभ्रे रत्नमण्डपमध्यगे।
स्मरेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम् ॥

'शुभ्र अयोध्यानगरी में रत्ननिर्मित मण्डप के मध्य में विराजमान श्रीराम को हम प्रणाम करते हैं । अगस्त्य संहिता में तो वर्णन है कि अयोध्या ही धरती पर सबसे पहले प्रकट हुई थी - स्वयमभून्मूलं त्वयोध्यापुरी।

वेदों मैं अयोध्या

तात्पर्य यह है कि सारे वेद-पुराण अयोध्या की अलौकिक महिमा से भरे पड़े हैं। अथर्ववेद कहता है-

प्रभ्राजमानं हरिणीं यशसा सम्परवृताम् ।

पुरं हिरण्मयीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम् ॥

'सर्वान्तर्यामी श्रीराम जी अत्यंत प्रकाशमयी, मन को हरण करने वाली अथवा सभी दोषों को नष्ट करने वाली व अत्यन्त कीर्ति से युक्त तथा सभी पुरियों में अजेय अयोध्या में विराजमान हैं।

स्कन्दपुराण में श्रीराम जन्म भूमि का बड़ा सुंदर विवेचन प्राप्त होता हैं-

तस्मात्स्थानादैशाने रामजन्म प्रवर्तते ।

जन्मस्थानमिदं प्रोक्तं मोक्षादिफलसाधनम् ॥

अर्थात अयोध्या श्रीराम की जन्मभूमि है। यहां दर्शन-पूजन, मोक्ष आदि सभी फलों को देने वाला है।

यद् दृष्टवा च मनुष्यस्य गर्भवासजयो भवेत् ।

विना दानेन तपसा विना तीर्थैर्विना मखै ॥

श्रीराम जन्मभूमि के दर्शन मात्र से बिना दान के, बिना तप के , बिना तीर्थयात्रा के तथा बिना यज्ञ किये ही मनुष्य की मुक्ति हो जाती है व उसे पुनर्जन्म भी प्राप्त नहीं होता। प्रतिदिन हजारों गायों के दान से जो फल मिलता है वही फल जन्मभूमि के दर्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है।

वास्तव में धर्म की स्थापना व अधर्म का नाश करने जब परमात्मा प्रकट होते हैं तो उनकी लीलास्थली की रक्षा करना ही हमारा सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य है।स्वयं प्रभु श्रीराम कहते हैं-

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि।

उत्तर दिसि बह सरजू पावनि॥

बौद्ध–मत की जन्मभूमि

२४ तीर्थंकरों में से २२ इक्ष्वाकुवंशी थे और उनमें से सबसे पहले तीर्थंकर आदि नाथ (ऋषभदेव जी) का और ४ तीर्थंकरों का जन्म यहीं हुआ था।

बौद्धमत की तो कोशल जन्मभूमि ही माननी चाहिए। शाक्यमुनि की जन्मभूमि कपिलवस्तु और निर्वाणभूमि कुशिनगर दोनों कोशल में थे। अयोध्या में उन्होंने अपने धर्म की शिक्षा दी और वे सिद्धांत बनाए जिनसे जगत प्रसिद्ध हुए और कुशिनगर में उन्हें वह पद प्राप्त हुआ जिसकी बौद्धमत वाले आकांक्षा करते हैं और जिसे निर्वाण कहते हैं ।

सूर्यवंश के अस्त होने पर ८० वर्ष तक अयोध्या शक्तिशाली गुप्तों की राजधानी रही। ❑

अवध भवन सम दंडक कानन

❑ *रमेश कुमार शर्मा*

अवधपुरी का वैभव तजकर, वन में विचर रहे धनु ताने
असुरविहीन मही करने की, मन में महाप्रतिज्ञा ठाने
कंटक पथ, प्रसून सम पदतल, मिल-मिल सकल संत सम्माने
सबकी सुधि लेते करुणानिधि, गिद्ध, रिक्ष, कपि बांधव माने।

क्योंकि विमाता कैकेयी को, दिये वचन रख सकें पिताजी
राम चले वन, चले साथ में, बन्धु लखन भार्या सीताजी
अवध भवन सम दंडक कानन, कानन-जन परिजन सम जाने
सबकी सुधि लेते करुणानिधि, गिद्ध, रिक्ष, कपि बांधव माने।

संस्कृत किये पिता सम खगपति, सीताहित प्राणों के दाता
शबरी के फल चख प्रभु बोले, 'आज मिलीं कौसल्या माता'
लंका जला सिया-सुधि लाये, भ्राता सम कपिवर उर लाने
सबकी सुधि लेते करुणानिधि, गिद्ध, रिक्ष, कपि बांधव माने।

लंकापति की खाकर ठोकर, लंका से विस्थापित होकर
प्रभु की शरण विभीषण आये, प्रभु-सेवा का स्वप्न सँजोकर
उन्हें बना दलनायक रघुवर, लगे भाल जयतिलक लगाने
सबकी सुधि लेते करुणानिधि, गिद्ध,रिक्ष, कपि बांधव माने।

सेतुबंध का श्रेय नील, नल सहित गिलहरी तक ने पाया
लंका पर जय कर रघुवर ने, कपिदल प्रति आभार जताया
श्रद्धावनत सुने वनितासुत, रामचरित कागर्षि बखाने
सबकी सुधि लेते करुणानिधि, गिद्ध,रिक्ष, कपि बांधव माने।

मुक्ताप्रसाद नगर, बीकानेर

सशक्त भारत का राजमार्ग है श्रीराममंदिर

q कन्हैया लाल

ग्वालियर से प्रकाशित होने वाले मासिक 'बी पी एन टुडे' (अक्तू.१०) में एक घटना का उल्लेख है। लेखक डॉ. उमाशंकर पचौरी के ही शब्दों में वह प्रसंग इस प्रकार है-'' *एक स्कूल जाने वाले बच्चे ने मुझसे पूछा? अंकल ये रामजन्मभूमि विवाद क्या है? मैंने उसे समझाया। यह विवाद यह है कि अयोध्या में रामजन्मभूमि पर श्रीराम मन्दिर बने अथवा बाबरी मस्जिद। इस पर किसका हक है? इसका मालिक कौन है? उस मासूम बच्चे ने बड़े आश्चर्य से मेरी ओर देख कर कहा, अंकल इसमें विवाद क्या है? सब जानते हैं कि श्रीराम अयोध्या में जन्मे थे। देश के लाखों लोग हर वर्ष वहाँ दर्शन करने जाते हैं। परिक्रमा करते हैं। वहाँ अभी तक मंदिर नहीं बना है क्या?*''

अर्थात् एक स्कूल जाने वाले बच्चे को भी पता है कि अयोध्या श्रीराम की जन्मभूमि है और उनके जन्म स्थल पर भव्य मंदिर होना ही चाहिये। यह पूरे देश को पता है, पूरी दुनिया को भी पता है। थाईलैण्ड के नरेश आज भी अपने को श्रीराम का वंशज मानते हैं और राजधानी को 'अयोध्या' कहते हैं। दक्षिण-पूर्व के एशियाई देशों सहित पूरे यूरोप के देश श्रीराम को भारत की पहचान और अयोध्या को उनका जन्म स्थान मानते हैं। इसलिये यह दुनिया का आठवाँ आश्चर्य ही है कि भारत के एक न्यायालय को यह बताना पड़ा कि अयोध्या का विवादित स्थल ही श्रीराम की जन्मभूमि है। आस्था के विषयों में कानून का दखल स्वस्थ परम्परा नहीं है। किसी भी समाज और राष्ट्र के लिये यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आस्था के प्रश्न कानून से हल किये जायें।

आस्था बनाम कानून

ईसाई समुदाय की आस्था है कि प्रभु यीशू का जन्म कुमारी मेरी के गर्भ से हुआ जो कुँवारी थीं। ईसाई यह भी मानते हैं कि येरुशलम में ईसा को सूली पर लटकाया गया था और मृत्यु के बाद वे एक बार पुनः प्रकट हुए थे। जेरुसलम में जहाँ ईसा का अंतिम संस्कार हुआ माना जाता है और जहाँ वे प्रकट हुए माने जाते हैं, वहाँ एक विशाल चर्च बना हुआ है जो पूरे विश्व के ईसाइयों के लिये अत्यंत पवित्र है। लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है कि प्रभू यीशू उसी स्थान पर दफनाये गये या प्रकट हुए थे । ईसा के शिष्यों मैथ्यू और ल्यूक ने जो कथांए लिखी हैं उनके आधार पर माना जाता है कि ईसा वहीं दफन हैं जहाँ वह चर्च बना है । यह आस्था का विषय है तथा कोई कानून इसे चुनौती नहीं दे सकता।

जेरुसलम में ही एक मस्जिद बनी है जिसका नाम 'डोम ऑफ आर्क' या अल अक्सा मस्जिद है। इस्लाम में यह मान्यता है कि इसी स्थान से पैगम्बर मोहम्मद ने स्वर्ग को प्रस्थान किया था। इसका भी कोई ऐतिहासिक या पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। यदि कोई प्रमाण माँगने का दुस्साहस कर बैठे तो हो सकता है कि खून की नदियाँ बह जायें। लेकिन यह मक्का और मदीना के बाद मुस्लिम समुदाय के लिये सबसे पवित्र स्थान है। यह उनकी श्रद्धा है, आस्था है और इसका पूर्ण सम्मान किया ही जाना चाहिए। दुनिया की कोई अदालत, कोई कानून कोई विधान केवल प्रमाणों के आधार पर यह तय नहीं कर सकता कि हजरत मोहम्मद साहब ने 'अल-अक्सा' से ही स्वर्गारोहण किया था। यह स्वयंसिद्ध है, इसको सिद्ध करने के लिये किसी कानून की जरूरत नहीं है।

इसीलिये कि आखिर कोई कानून भी 'बहु-जन हिताय' के लिये बनता है। समाज ठीक से चल सके, अधिकतम लोगों का हित-संवर्द्धन हो, अधिक से अधिक लोग संतोष व प्रसन्नता का अनुभव कर सकें, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये विधान या कानून बनते हैं। ऐसे विधान ही फिर जनता की श्रद्धा का विषय बनते हैं। जो 'जन-रंजन' न कर सके वह कानून उपयोगी नहीं होता। इसलिये बहु-जन की आस्था और आकांक्षा कानून का रूप लेती है। यही होना भी चाहिये।

रामलला आजाइए

दुष्टों के दुष्कर्म से, दुःखी हुआ संसार
रामलला आजाइए, फिर लेकर अवतार

जिससे नरसंहार हो, क्यूँ हो ऐसा काम
रामलला के नाम को, मत करना बदनाम

रामलला का इस कदर, होता है सत्कार
मर्यादा पुरुषोत्तम उनको, कहता है संसार

रामराज्य की कल्पना, हो जाए साकार
आदर्शों पर राम के, चले अगर संसार

रामलला की शख्सियत, बड़ी अजीमुश्शान
रामलला के नाम पर, जानो-दिल कुर्बान

भक्तों पर क्यूँ भक्त ही, लगा रहे इल्जाम
ऐसा करना ठीक है ?, कुछ तो बोलो राम

मिलता है संसार में, उसे मान-सम्मान
राम सरीखा हो अगर, कोई निष्ठावान

मानवता की वो नहीं, करता है तौहीन
जिसके दिल में राम हों, बसे हुए 'शाहीन'

डॉ.मोईनुद्दीन 'शाहीन'
मोहल्ला व्यापारियान, बीकानेर

अतः यह हमारे लिये दुर्भाग्यपूर्ण है कि श्रीराम मन्दिर तथा श्री रामसेतु जैसे विषयों पर निर्णय के लिये उच्च-न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय के द्वार खटखटाने पड़ते हैं।

यह मज़हब का प्रश्न नहीं

जो भी हो, किन्तु प्रयाग उच्च न्यायालय ने भी अब असंदिग्ध रुप से मान लिया है कि लगभग पाँच सौ वर्षों से संघर्ष का कारण बन रहा अयोध्या का विवादित स्थान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का ही जन्म स्थल है। गत ३० सितम्बर को दिये गये लखनऊ खण्ड-पीठ के निर्णय से सम्पूर्ण देश की जनता को प्रसन्नता इसलिये हुई कि आखिर न्यायालय ने भी वह स्वीकार किया जो ' ध्रुव-सत्य' है और जिसमें देशवासियों की आस्था है। इस आस्था पर षड़यंत्रपूर्वक प्रहार किये गये हैं, अब भी किये जा रहे हैं और जो सेकुलर बिरादरी देश को खण्ड-खण्ड करना चाहती है , जिसे राष्ट्रीय एकता और एकात्मता शूल की तरह चुभती है, वह आगे भी करेगी।

यहाँ यह भी ध्यान रखा जाना चाहिये कि श्रीराम जन्मभूमि का मुद्दा कोई मज़हबी विषय नहीं है, किसी रिलीजन से ही इसका सम्बन्ध नहीं है, यह राष्ट्रीय स्वाभिमान का विषय है, भारत राष्ट्र के प्रति हमारी निष्ठा का विषय है। जब से भारत पर इस्लाम को मानने वाले तुर्क, तातार, अफगान आक्रमणकारियों के हमले शुरु हुये तभी से देश के पूजा-स्थलों का ध्वंस भी प्रारम्भ हुआ। पुस्तक प्रकाशक 'वायस ऑफ इण्डिया' ने दो खण्डों में भारत में ध्वस्त किये गये मंदिरों की सूची प्रकाशित की है। जिनका पता चल सका तथा जिनके साक्ष्य उपलब्ध हैं, उन्हीं पूजा-स्थलों के बारे में इनमें जानकारी दी गई है । उनके अतिरिक्त भी हजारों मन्दिर आक्रान्ताओं ने नष्ट किये। कश्मीर में तो आज भी यह विध्वंस चल रहा है। कुछ वर्षों पहले वामियान (अफगानिस्तान) में तालिबानी जिहादियों ने भगवान बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा को तोप के गोलों से ध्वस्त कर दिया।

बाबर, औरंगजेब या महमूद जैसे जिहादियों ने ये मंदिर ध्वस्त क्यों किये और उन पर मस्जिदें क्यों बनवाईं? हिन्दू समाज को यह समझाने के लिये कि भारत हारा है और इस्लाम विजयी हुआ है। श्रीराम, श्रीकृष्ण और भगवान शंकर के प्राकट्य-स्थलों को ध्वस्त कर वहाँ मस्जिदें खड़ी करने का प्रयास हिन्दू समाज को हारा हुआ सिद्ध करने के लिये ही था। भारत राष्ट्र को पराजित सिद्ध करने के लिये ही ये कुकृत्य किये गये थे। 'देखो तुम्हारे राष्ट्र-नायकों के स्मारकों को हमने मिटा दिया है और मज़हब इस्लाम की विजय-पताका हमने फहरा दी है ' यह भारत राष्ट्र को हमेशा याद रहे इसीलिये काशी और मथुरा में जन्मस्थलों पर मस्जिदें खड़ी की गईं और अयोध्या में एक ढांचा खड़ा किया गया। ढहाये हुए मन्दिरों की ही सामग्री से वहीं बनाई गई मस्जिदें विदेशी हमलावरों की जीत और भारत राष्ट्र की हार के स्मारक हैं। ये दासत्व की निशानियाँ हैं, पराजय के चिन्ह हैं, पूरे राष्ट्र के लिये 'शर्म' का विषय हैं।

पराजय के निशान हटें

कोई भी जाग्रत तथा स्वाभिमानी राष्ट्र पराजय के स्मारकों को सुरक्षित नहीं करता। बड़ी अजीब बात है देश का वर्तमान नेतृत्व इन गुलामी के कलंकों, पराजय के स्मारकों और स्वाभिमान पर चोट करने वाले ढांचों को बनाये रखना चाहता है ! इनकी सुरक्षा के लिये संसद में कानून बना दिये गये हैं, जनता का अरबों रुपया इनको सहेज कर रखने में व्यय किया जा रहा है। यह भारत में ही हो सकता है, ऐसा नपुंसक नेतृत्व सेकुलरवाद की ही उपज हो सकता है। विश्व-प्रसिद्ध इतिहासकार आर्नल्ड टायन्बी वर्ष १९६० में अब्दुल कलाम स्मृति व्याख्यान में बोलने भारत आए थे और तीन भाषण उन्होंने दिये थे। अपने एक भाषण में उन्होंने आश्चर्य जताया कि काशी, मथुरा और अयोध्या में जन्म-स्थलों पर अभी भी मस्जिदें खड़ी हैं और उन्हें हटाने का कोई प्रस्ताव भी नहीं किया गया है।उन्होंने इस संदर्भ में पोलैण्ड का उदाहरण भी दिया। प्रथम विश्व युद्ध में रूस ने पोलैण्ड पर अधिकार कर लिया तो जीत के बाद उन्होंने वहाँ की राजधानी वार्सा के मुख्य चौक पर एक चर्च बनवाया। सन १९१८ में जब पोलैण्ड रूस के चंगुल से मुक्त हुआ तो वहाँ के लोगों ने पहला काम उस चर्च को ढ़हाने का ही किया। पोलैण्ड के लोग भी ईसाइयत को मानते हैं, वहाँ अनेक चर्च और भी थे, लेकिन रूसियों के बनाये चर्च को इसलिये हटाया गया कि वह गिरिजाघर उनके लिये पूजा-स्थल न हो कर रूस की जीत का स्मारक था। पोल लोगों का अपमान करने वाला 'चर्च' एक पूजा-स्थल कैसे हो सकता था? विशुद्ध राजनैतिक कारणों एवं साम्राज्यवादी मन्सूबों के कारण वह चर्च बनाया गया था।

इतिहास में ऐसे पचासों उदाहरण हैं। पराधीनता से मुक्त होते ही सभी राष्ट्रों ने पहला काम गुलामी के कलंकों को हटाने का ही किया। एकमात्र अपवाद भारत है जहाँ ऐसे 'कलंकों की सुरक्षा का प्रबन्ध किया जाता है। राष्ट्रीयता के अभाव में ऐसा होता है। जहाँ के नेतृत्व में प्रखर राष्ट्रीय स्वाभिमान का भाव है, उस देश में पराजय के कलंकों को तनिक भी सहन नहीं किया जाता। सरदार पटेल में यह भाव था, इसीलिये प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार पं. जवाहर लाल नेहरू की आपत्तियों के बाद भी उन्होंने कराया।

राष्ट्र नायक हैं श्रीराम

श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर का निर्माण एक राष्ट्रीय प्रश्न है। श्रीराम राष्ट्र-नायक हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, हमारे राष्ट्र के उसी प्रकार आदर्श पुरुष हैं जैसे अमरीका के लिये जार्ज वाशिंगटन। अमरीका का राष्ट्र जीवन मात्र चार सौ सालों का है, जब कि हम धरती के सबसे प्राचीन राष्ट्र हैं। हजारों वर्षों से एक राष्ट्र के रूप में हम धरती पर विद्यमान हैं । श्रीराम हमारे राष्ट्र जीवन के प्राण हैं। इसलिये राम मन्दिर का निर्माण राष्ट्रीय स्वाभिमान की पुनर्प्रतिष्ठा से जुड़ा है। इस देश में रह रहे मुस्लिम बन्धुओं के लिये भी यह उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वाभिमान का मुद्दा है। आखिर सभी मुसलमान अरब देशों से आये हुए तो नहीं हैं। वे भी श्रीराम और श्रीकृष्ण से उसी प्रकार जुड़े हैं जैसे हिन्दू समाज। कुछ पीढ़ियों पहले उनके पुरखे भी हिन्दू ही थे। मज़हब बदलने से राष्ट्रीयता नहीं बदलती। इसके अनेक उदाहरण भी हैं।

एक उदाहरण क्रांतिकारी **अशफाक उल्ला खान** का है। क्रांतिकारी आन्दोलन में काफिरों का साथ देने के लिये कट्टरपंथियों ने उनकी लगातार अलोचना की, लेकिन वे डिगे नहीं। फांसी से पहले अपनी अंतिम इच्छा के रूप में उन्होंने कहा-**रख दे कोई जरा सी खाके वतन कफन में।** यानि उनके कफन में भारत भूमि की पवित्र मिट्टी रख दी जाये। कैसी उदात्त भावना, कैसा मातृभूमि के प्रति उत्कट प्रेम। दूसरा उदाहरण **हकीम खाँ सूरी** का है। यह जांबाज महाराणा प्रताप की सेना में सेना नायक था। हल्दी घाटी के युद्ध में उसने प्रताप से प्रार्थना की कि उसे सेना के हरावल अर्थात् सबसे आगे रखा जाये। कारण पूछने पर राष्ट्रभक्त हकीम खान ने कहा कि *अकबर मुगल आक्रमणकारी है और हमारी मातृभूमि को पद-दलित कर रहा है , उसे पाठ पढ़ाने के लिये वह अग्रिम मोर्चे पर रहना चाहता है।* कैसा अद्भुत दृश्य रहा होगा। एक ओर उस काल का सेकुलरवादी मानसिंह था और उसके सामने भारत माँ का सच्चा सपूत हकीम खान तलवार ताने खड़ा था। उस ऐतिहासिक युद्ध में अकबर की सेना को छटी का दूध याद दिला कर उस सपूत ने वीरगति प्राप्त की।

हसन खाँ मेवाती की राष्ट्र निष्ठा

इतिहास में हसन खाँ मेवाती का नाम भी स्वर्णाक्षरों में अंकित है। यह वीर महाराणा सांगा का सेना-नायक था। वह भी बाबर को विदेशी आक्रांता और इस देश को अपनी मातृभूमि मानता था। खानवा के मैदान में बाबर और राणा सांगा का युद्ध शुरु होने के पहले मुगल बाबर ने हसन खाँ मेवाती को संदेश भेजा- *'हमारा मज़हब एक है, मैं खुदा का बन्दा हूँ और हिन्दुस्तान की सरज़मीन को दारुल-इस्लाम बनाने आया हूँ, काफिरों का साथ छोड़ कर मेरे साथ आ जाओ।'* इस पर हसन खान ने उत्तर दिया -***'हिन्दोस्तान मेरा मादरे वतन है और तुम हमलावर हो, तुम्हारी खैर इसी में है कि चुप-चाप अपने वतन लौट जाओ।'*** युद्ध शुरु होते ही हसन खान कहर की तरह बाबर पर टूट पड़ा। मुगलों के छक्के छूट गये , पर तोपों की मार वह वीर सहन नहीं कर पाया और बलिदान हो गया। आज भी हरियाणा में लगी हसन खाँ मेवाती की प्रतिमा उसकी राष्ट्रभक्ति की गाथा कह रही है।

M/S Agrawal Stone Export

भारत के मुसलमानों को भी तय करना है कि उनके लिये बाबर विदेशी हमलावर है या हम-मज़हब है? उनका आदर्श बाबर है या दशरथ नन्दन श्रीराम? इस प्रश्न का उत्तर मिलते ही अयोध्या विवाद का समाधान हो जायेगा। आज मुसलमान तो इस प्रश्न का सटीक उत्तर देने को तैयार हैं। उनके तथाकथित नेता उन्हें उत्तर नहीं देने दे रहे।

सबसे बड़ी त्रासदी नेता हैं

लखनऊ खण्ड-पीठ के फैसले के बाद अंग्रेजी दैनिक 'डीएनए' (६ अक्तू.२०१०) में श्री फीरोज बख्त अहमद का एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं- '' *इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के बाद उन्हीं पुराने चेहरों, तथाकथित मुस्लिम नेताओं जो मुसलमानों का प्रतिनिधि होने का दावा कर रहे थे, को दूरदर्शन के चैनलों पर देख कर मुझे धक्का लगा। ये वही बिगड़ैल मुल्ला और बुद्धिजीवी हैं जो बाबरी मामले को सड़कों तक लाने, साम्प्रदायिक तनाव बढ़ाने, एक ऐतिहासिक मस्जिद को विध्वंस होने देने और फिर मुसलमानों को अपने रहमो-करम पर छोड़ देने के जिम्मेदार हैं। उन्हीं के कारण भारत का दूसरा बहुसंख्यक (अल्पसंख्यक नहीं) समुदाय चौराहे पर खड़ा है।* ***सच्चाई यह है कि मुसलमान श्रीराम में श्रद्धा रखते हैं और अयोध्या में राम मन्दिर के निर्माण पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।''*** *इकबाल ने राम के अस्तित्व की वकालत करते हुए एक शानदार गजल लिखी थी-*

है राम के वजूद पर हिन्दोस्तान को नाज
अहले नजर उसको समझते हैं इमामे हिन्द।

श्री फिरोज बख्त पहली केन्द्र सरकार के शिक्षामंत्री अब्दुल कलाम आजाद के पड़पोते हैं। उन्होंने आगे लिखा है कि, **'' भारतीय मुसलमानों की सबसे बड़ी त्रासदी उनके नेता हैं।''**

भारत के मुसलमान यह समझें और स्वेच्छा से श्रीराम मन्दिर के निर्माण में सहयोग करें। **उच्च न्यायालय ने विवादित स्थल का जो एक तिहाई भाग उन्हें दिया है उसे वे आगे आकर मन्दिर के लिये हिन्दू समाज को सौंप दें।** यदि ऐसा होता है तो यह राष्ट्रीय एकात्मता की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगा। राम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का बनना राष्ट्र की पुनर्प्रतिष्ठा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा और इसी के साथ सशक्त भारत के निर्माण का भी मार्ग प्रशस्त होगा। **q**

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
SURESH JINDAL
Manufacturer & Supplier of:
KOTA STONE & MARBLE
M/S Agrawal Marble Industry
282, Shopping Centre KOTA-(Raj)
324007 Mob.98290 15295
Manufacturers of All Kinds of Natural Stones
for Domestic &Export use.
Stockist:- Gwalior Mint Stone
G-418(D) I.P.I.A. Road No. 7
Kota (Raj.)☎ 324007 Mob. 9829038025

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं

आदर्श विद्या मंदिर, ब्यावर

(विद्या भारती संस्थान द्वारा संचालित)

भैया– मोहित गर्ग
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
राजस्थान माध्यमिक परीक्षा
२००८ की सूची में प्रथम स्थान

भैया–गजेन्द्र नवाल
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान
माध्यमिक परीक्षा२०१० की
वरीयता सूची में १५ वां स्थान

आशापुरा माता धाम, उदयपुर मार्ग ब्यावर
जिला अजमेर दूरभाष 01462-224111
ई मेल–avm_beawar@yahoo.com

संचालित विद्यालय

* स्वतंत्र शिशु वाटिका
* प्राथमिक विद्यालय
* माध्यमिक विद्यालय
* बालिका माध्यमिक विद्यालय

विशेषताएं–

१. भारतीय पद्धति से शिशुओं की शिक्षा- शिशु वाटिका
२. स्पोकन इंग्लिश, संस्कृत सम्भाषण एवं संगीत शिक्षा
३. सुसज्जित कम्प्यूटर लेब का संचालन
४. राष्ट्रीय स्तर की खेलकूद स्पर्धाओं में प्रतिभाग- कब्बडी, योगदान, बैडमिन्टन, टेबल-टेनिस, हैण्ड बॉल, कुश्ती एवं शतरंज

निवेदकः–

भंवर लाल रांका	रामेश्वर लाल पारीक	सुरेश चन्द सेन
अध्यक्ष	सचिव	प्रधानाचार्य

ॐ

पाथेयकण के ''**श्रीराम जन्मभूमि**'' विशेषांक हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ

आदर्श शिक्षण संस्थान, जोधपुर

शाखा मथानियां

क्र.सं.	श्रेणी	आचार्य	भैया–बहिन
१.	आदर्श विद्या मन्दिर माध्यमिक, मथानियां	१५	४०६
२.	बालिका आदर्श विद्या मन्दिर, मथानियां	१६	५४७
३.	आदर्श शिशु वाटिका, मथानियां	१०	३०६
४.	बाबा रामदेव संस्कार केन्द्र, मथानियां	१	२७
५.	माधव संस्कार केन्द्र, मथानियां	१	२५
	योग	४६	१३१७

m विद्या भारती के राष्ट्रीय शिक्षा प्रारूप को क्रियान्वित करता विद्यालय
m संस्कारयुक्त गुणात्मक शिक्षा देने में संलग्न
m लक्ष्य-हिन्दुत्व का जागरण, राष्ट्रभक्ति का विकास, इतिहास के प्रति गौरव-भाव निर्माण, पूर्वजों पर गर्व एवं अपनी सनातन परम्पराओं को बालकों में प्रत्यारोपित करता विद्यालय।
m अंग्रेजी सम्भाषण एवं कम्प्यूटर शिक्षण की श्रेष्ठ व्यवस्था।
m स्टूडेन्ट्स गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय खेलकूद हेतु बालकों को अवसर।
m भैया-बहिनों हेतु संस्कृति ज्ञान प्रश्न मंच, वैदिक गणित एवं विज्ञान प्रश्न मंच में तथा विज्ञान प्रदर्शनी और विभिन्न बौद्धिक प्रतिस्पर्धाओं में सहभागिता करने का अखिल भारतीय स्तर तक अवसर।

व्यवस्थाप्रमुख
आदर्श शिक्षण संस्थान, जोधपुर
शाखा मथानियां

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति–संघर्ष का इतिहास

q मातादीन सिंह

त्रेता युग में चैत्र शुक्ल नवमी को अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम का अवतरण हुआ था। यही कारण है कि अयोध्या भारत के सात पवित्र एवं मोक्षदायी स्थानों में से एक है और अवधपुरी के नाम से विख्यात है। राम के पुत्र कुश ने उनके जन्म स्थान पर काले पत्थर(कसौटी) के ८४ खम्भों का एक भव्य मंदिर बनवाया था। हजारों वर्षों तक यहाँ हिन्दू समाज पूजा-अर्चना करता रहा।

युगाब्द २७५२ (ईसा से १५०वर्ष पूर्व)कुषाण हमलावर मिनिंदर ने अयोध्या पर अधिकार कर मंदिर ध्वस्त कर दिया। इसके तीन माह बाद ही शुंग वंश के राजा द्युमत्सेन ने मिनिंदर पर आक्रमण कर उसे मार भगाया। इसके बाद कुषाणों से वे लगातार युद्धरत रहे अतः मंदिर का जीर्णोद्धार नहीं हो सका। आज से लगभग २१०० वर्ष पूर्व उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य ने उसी कसौटी के खम्भों पर पुनः वैसा ही भव्य मंदिर बनवाया।

मंदिर को मस्जिद बनाने का प्रयास

युगाब्द ४६२८ सन् १५२७ में तुर्क हमलावर बाबर अयोध्या आया। उसने सूफी जलाल शाह के उकसावे में श्रीरामजन्मभूमि पर बने मंदिर को ध्वस्त कर उस पर मस्जिद बनाने का आदेश अपने सेनापति मीर बाकी को दिया। भीती नरेश महताब सिंह ने उससे भीषण युद्ध किया और मंदिर की रक्षार्थ एक लाख से अधिक योद्धाओं ने अपने प्राण गंवाये। लाशों के ढ़ेर पर ही मीर बाकी तोपों से मंदिर को ध्वस्त करने में सफल हो सका। मंदिर की ही सामग्री से उसने एक मस्जिद बनाने का प्रयास किया।

उसके इस कार्य का हिन्दुओं ने लगातार विरोध जारी रखा। हंसवर के राजगुरू पण्डित देवीदीन पाण्डे, राजा रणविजय सिंह और महारानी जयराज कुमारी ने मीर बाकी से युद्ध किये। मकरही के राजा संग्राम सिंह ने भी मंदिर की रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। लगातार युद्धों के कारण मीरबाकी मस्जिद तो नहीं बना पाया किन्तु अयोध्या पर मुगलों का अधिकार अवश्य हो गया।

बाबर की मृत्यु के बाद १५३० से १५५६ ई.(हुमायूँ का कार्यकाल) के बीच रामभक्तों ने मंदिर की मुक्ति के लिए कई बार आक्रमण किये। सिरसिण्डा और राजपुर आदि गांवों के सूर्यवंशी राजाओं ने संगठित होकर आक्रमण किया किन्तु जन्मभूमि को प्राप्त नहीं कर पाये। जन्मभूमि प्राप्ति तक उन्होंने सिर पर पगड़ी व पांवों में जूतियाँ नहीं पहनने का संकल्प किया, जिसे आज तक उनके वंशज निभा रहे हैं। रानी जयराज कुमारी स्त्री सेना लेकर तथा सन्यासी महेश्वरानन्द साधु सेना लेकर जन्मभूमि मुक्ति के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये।

चबूतरे पर पूजा अर्चना

श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति का संघर्ष लगातार जारी रहा। अकबर के समय भी मंदिर की मुक्ति के लिए बीस बार युद्ध हुए। स्वामी बलरामाचार्य (महेश्वरानन्द के शिष्य) अकबर की सेना से लड़ते-२ वीरगति को प्राप्त हुये। उसी समय सूर्यवंशी राजाओं ने अकबर की शाही सेना को खदेड़कर जन्मभूमि स्थान पर एक चबूतरा बना दिया और पूजा-अर्चना करने लगे। हारकर अकबर ने अपने मंत्री बीरबल एवं

अंग्रेजों ने विफल किये प्रयास

यदि हम इतिहास पर गौर करें तो जान पाएंगे कि १८४७ से १८५७ के बीच नवाब वाजिद अली शाह ने अयोध्या के विवादित स्थल के झगड़े को समाप्त करने के प्रयास किए थे और उन्होंने तीन सदस्यीय समिति का गठन किया था, जिसमें एक मुसलमान, एक हिन्दू और एक ईस्ट इंडिया कम्पनी का सदस्य था। इस समिति ने उक्त स्थल के बारे में बताया ''**मीर बाकी ने किसी भवन को तोड़कर इसे बनवाया था क्योंकि इस पर साफ तौर पर लिखा है यह फरिश्तों के अवतरण का स्थल है। इसमें भवन का मलबा भी लगा है।**'' १८५७ के समय अमीर अली तथा बहादुर शाह जफर ने फरमान जारी किया जिसके अनुसार ''**हिन्दुओं के खुदा रामचन्द्र जी की पैदाइश की जगह जो बाबरी मस्जिद बनी है वह हिन्दुओं को बाखुशी सौंप दी जाए क्योंकि हिन्दू-मुसलमान नाइत्तफाकी की सबसे बड़ी जड़ यही है।**'' सुल्तानपुर गजेटियर के पृष्ठ ३६ पर कर्नल मार्टिन ने लिखा है कि अयोध्या की बाबरी मस्जिद को हिन्दुओं को (मुसलमानों द्वारा) वापस देने की खबर से हममें (अंग्रेजों में) घबराहट फैल गई और यह लगने लगा कि हिन्दुस्तान से अंग्रेज खत्म हो जाएंगे। १८५७ की क्रांति असफल होने के बाद अंग्रेजों ने **१८ मार्च, १८५८ को कुबेर टीला में इमली के पेड़ पर अमीर अली तथा बाबा राम चरण दास को हजारों हिन्दुओं तथा मुसलमानों के सामने फांसी दे दी।** इस संदर्भ में मार्टिन लिखते हैं ''जिसके बाद फैजाबाद में बलवाइयों की कमर टूट गई और तमाम फैजाबाद जिले में हमारा रौब गालिब हो गया। इस प्रकार राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद समाप्त होते-होते रह गया।''

पंजाब केसरी (१० सित.२०१०)

राजा टोडरमल की सलाह पर चबूतरे पर श्रीराम की प्रतिमा स्थापित करवा कर एक छोटा सा मंदिर बनवा दिया।

१६५८ में अत्याचारी औरंगजेब ने गद्दी पर बैठते ही चबूतरे एवं मंदिर को नष्ट करने का आदेश दिया। इसके विरोध में समर्थ रामदास के शिष्य बाबा विष्णुदास के नेतृत्व में दस हजार चिमटाधारी साधुओं की सेना ने उर्वशी कुण्ड पर सात दिन तक संषर्घ कर शाही सेना को भगा दिया। बाबा विष्णुदास ने पुनः युद्ध की तैयारी की और सहयोग के लिए दशमेश गुरु गोबिन्द सिंह से आग्रह किया। पुनः औरंगजेब ने पचास हजार सैनिकों के साथ सैयद हसन अली को मंदिर नष्ट करने भेजा। गुरु गोबिन्द सिंह, ठाकुर जगदम्बा सिंह एवं कुंवर गोपाल सिंह ने मिलकर मुगल सेना से लोहा लिया और हसन अली को मार गिराया। युगाब्द ४७६६(सन् १६६४) में मुगल सेना ने अचानक आक्रमण कर दिया। हजारों वीर बलिदान हुए किन्तु चबूतरा एवं मंदिर नहीं बचा पाये। श्रीराम जन्मभूमि के लिए यह ६४ वां युद्ध था।

अवध के नबाब सआदत अली के समय अमेठी के राजा गुरुदास सिंह और पिपरापुर के राजकुमार के नेतृत्व में पाँच आक्रमण किये गये। सन् १८५६ में गोंडा के राजा देवीबक्श सिंह के नेतृत्व में अवध के रजवाड़ों ने मिलकर नबाब पर आक्रमण कर जन्मभूमि पर अधिकार कर लिया। नष्ट किया गया चबूतरा व मंदिर फिर बनाये गये किन्तु जन्मभूमि मुक्त नहीं हो सकी।

अंग्रेजों की धूर्तता

तब तक ईस्ट इंण्डिया कम्पनी भी भारतीय मामलों में हस्तक्षेप करने लगी थी। नबाब वाजिद अली ने एक हिन्दू, एक मुसलमान और एक ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रतिनिधि का तीन सदस्यीय कमीशन अयोध्या के स्थाई समाधान के लिए बनाया। उक्त कमीशन ने माना कि श्रीराम जन्मस्थल पर कभी मस्जिद नहीं थी। मंदिर को तोड़कर मीर बाकी ने एक ढांचा बनाया था। मुस्लिम समाज ने श्रीरामजन्मभूमि सहर्ष हिन्दुओं को सौंपने का मानस बना लिया किन्तु अंग्रेजों की धूर्तता इसमें आड़े आ रही थी। अंग्रेजों ने १८५६ के बाद जन्मभूमि पर पूजा-पाठ बंद करवा दी। अमीर अली एवं बाबा रामचरण दास के मध्य जन्मभूमि हिन्दुओं को देने का समझौता हुआ था। अतः उन दोनों को अंग्रेजों ने १८ मार्च १८५८ को फांसी दे दी।

न्याय की प्रतीक्षा–

सन् १८८५ में फैजाबाद के जिला न्यायालय में श्रीराम जन्मभूमि की पुनःप्राप्ति के लिए पहला मुकदमा महंत रघुवर दास ने दायर किया। मार्च १८८६ में न्यायाधीश शेमियार ने उस स्थान का स्वयं निरीक्षण किया और माना कि पवित्र भूमि पर मस्जिद का निर्माण दुर्भाग्यपूर्ण है किन्तु इसे हिन्दुओं को सौंपे जाने का निर्णय नहीं हुआ। इसके बाद १९३४ में अयोध्या के सन्यासियों ने जोरदार आक्रमण कर उस स्थान को अपने अधिकार में ले लिया और वहाँ भगवान राम एवं माता सीता की मूर्तियाँ स्थापित कर पूजा-अर्चना शुरू कर दी। अंग्रेजी सेना ने बलपूर्वक साधुओं को वहाँ से हटा दिया। १९४४ तक विवाद चलता रहा। इस अनिर्णय की स्थिति में साधुओं ने फिर जन्मस्थान पर रामायण पाठ व कीर्तन शुरूकर दिये।

इस प्रकार १५ अगस्त १९४७ तक श्रीराम जन्मभूमि को मुक्त करवाने के लिए छिहत्तर युद्धों में लगभग साढ़े तीन लाख रामभक्त अपने प्राणों की आहूति दे चुके थे।

भये प्रकट कृपाला

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति संघर्ष गाथा में एक नाटकीय मोड़ २३ दिसम्बर १९४९ (युगाब्द ५०५१) को तब आया, जब ढांचे के बीच के गुम्बद के नीचे रामलला की मूर्ति प्रकट हुई। यह समाचार सुनते ही भारी संख्या में रामभक्त जन्मभूमि पर एकत्र हो गए। इससे मुसलमान भी चौकन्ने हुए। पुलिस में रपट हुई तथा नगर दण्डनायक ने पूरे परिसर को सरकारी संरक्षण में ले लिया। गुम्बद के भीतर प्रकट हुई श्री रामलला की मूर्ति पर ताला लगा दिया गया। लेकिन रामभक्तों को ताले में बन्द श्रीरामलला की पूजा-अर्चना की छूट दी गई।

१६ जनवरी १९५० को अयोध्या के निवासी गोपाल सिंह विशारद ने फैजाबाद के सिविल जज के यहाँ वाद दायर कर विधिवत पूजा अर्चना की अनुमति मांगी। इसकी प्रतिक्रिया में मुसलमानों ने भी २१ फरवरी १९५० को एक वाद दायर कर मूर्तियाँ हटाकर इसे मस्जिद घोषित करने की मांग की। ३ मार्च १९५० को अदालत ने आदेश दिया कि विवादित स्थल से मूर्तियाँ नहीं हटेंगी तथा उनकी विधिवत पूजा होती रहेगी। साथ ही मुस्लिम समुदाय को पूजा-अर्चना में बाधा न पहुँचाने की निषेधाज्ञा भी जारी की।

५ अगस्त १९५० को पूज्य स्वामी परमहंस रामचन्द्र दास ने भी जन्मभूमि मुक्ति हेतु वाद दायर किया। उक्त निषेधाज्ञा की मुसलमानों की अपील पर अप्रेल १९५५ में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने भी सिविल अदालत के फैसले को बहाल रखा।

रामानन्द सम्प्रदाय के निर्मोही अखाड़े ने १९५९ में एक मुकदमा दायर कर मंदिर में पूजा-व्यवस्था का अधिकार मांगा। दिसम्बर १९६१ में सुन्नी सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड ने भी एक वाद दायर किया जबकि उसका उस स्थान से कोई सम्बन्ध नहीं था। वक्फ बोर्ड ने मांग की कि पूजा सामग्री हटाकर इसे सार्वजनिक मस्जिद घोषित किया जाये तथा परिसर का कब्जा सुन्नी वक्फ बोर्ड को दिया जाये। परिसर के चारों ओर के खाली भू-भाग को कब्रिस्तान घोषित करने की भी वक्फ बोर्ड ने माँग की।

जन्मभूमि मुक्ति अभियान

अदालत में तो जन्मभूमि सम्बन्धित मामले चल ही रहे थे किन्तु अब इस मामले को जनता की अदालत में लाया गया। उत्तर प्रदेश के पूर्व केबिनेट मंत्री दाऊदयाल खन्ना ने मार्च १९८३ में हिन्दू जागरण मंच की एक सभा में जोरदार शब्दों में माँग की कि श्रीराम जन्मभूमि अविलम्ब हिन्दुओं को सौंपी जाये। इस सभा में पूर्व मंत्री गुलजारी लाल नन्दा व संघ के तत्कालीन सरकार्यवाह प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) भी उपस्थित थे।

१६ मार्च १९८३ को तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस ने विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ श्रीराम

जन्मभूमि की मुक्ति के लिये अभियान चलाने के बारे में विचार विमर्श किया । उसके बाद ७-८ अप्रेल १९८४ को नई दिल्ली में प्रथम धर्म संसद में देश के पाँच सौ से अधिक प्रमुख धर्माचार्यों ने तीनों जन्मस्थानों की मुक्ति के लिए अभियान चलाने का निर्णय किया। १८ जून १९८४ को विश्व हिन्दू परिषद के प्रयासों से अयोध्या में साधु संतो की बैठक हुई जिसमें अयोध्या, मथुरा, काशी मुक्ति अभियान समिति का गठन हुआ।

पहले चरण के रूप में अयोध्या के लिए दाऊदयाल खन्ना को संयोजक बनाकर श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति का अभियान शुरू किया गया। २२ जुलाई को साधु-संतों का मार्गदर्शक मण्डल बना तथा इसी दिन 'बजरंग दल' का गठन हुआ। रथ यात्राओं एवं हिन्दू सम्मेलनों से जनजागरण होने लगा।

रामलला के ताले खुले

३१ अक्टूबर १९८४ को कर्नाटक के उडुप्पी में हुई द्वितीय धर्म संसद में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति संघर्ष को तेज करने पर जोर दिया गया। पूरे देश में जनाक्रोश बढ़ रहा था, तभी १ फरवरी १९८६ को फैजाबाद के जिला न्यायाधीश ने रामलला के द्वार पर लगे ताले खोलने का आदेश दिया। पूरे देश में इससे प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

अब मुसलमानों ने भी शहाबुद्दीन के नेतृत्व में **बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी** बनाकर संषर्घ की घोषणा कर दी। १२ मई १९८६ को सुन्नी वक्फ बोर्ड ने एक और वाद दायर कर ताले खोले जाने के आदेश को रद्द करने की मांग की। वह भी खारिज हो गया।

शिलान्यास हुआ

जनवरी ८९ में प्रयाग कुंभ के अवसर पर **संत सम्मेलन एवं तृतीय धर्म संसद में तय हुआ** कि भारत के हर गांव से राम शिला (ईंट) और हर हिन्दू से सवा रुपया लेकर मंदिर का निर्माण शुरु किया जाये। यह भी घोषणा हुई कि १० नवम्बर ८९ को राम मन्दिर का शिलान्यास होगा। इसी बीच इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीश **देवकी नन्दन अग्रवाल** ने जुलाई ८९ में राम लला विराजमान तथा रामजन्म स्थान को वादी बनाते हुए अदालत में एक और वाद दायर किया।

उच्च न्यायालय ने १४ अगस्त को विवादित स्थल पर यथास्थिति बनाये रखने का अन्तरिम आदेश दिया किन्तु देशभर में शिलापूजन कार्यक्रम यथावत चलता रहा। इससे पूरे देश का वातावरण राममय हो गया। देशभर के तीन लाख स्थानों से पूजित रामशिलाएं अयोध्या पहुँची। ११ करोड़ लोगों ने पवित्र राम शिलाओं की पूजा की। भारत के अतिरिक्त ३४ अन्य देशों से भी पूजित राम शिलाएं अयोध्या पहुँची । देश में पहली बार इतने व्यापक स्तर पर किसी आन्दोलन में जन सहभाग हुआ था। देवोत्थान एकादशी, ९ नवम्बर १९८९ को पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार परमहंस रामचन्द्र दास ने अयोध्या में जन्म स्थान पर भूमि उत्खनन शुरु किया। १०नवम्बर को पहली शिला बिहार के हरिजन बन्धु कामेश्वर चौपाल ने रखी। ११ नवम्बर को सात हजार से अधिक संत व कार-सेवक कुदाल फावड़े लिए कारसेवा के लिये आये किन्तु जिलाधीश ने उच्च न्यायालय का निर्णय होने तक निर्माण स्थगित रखने का आदेश दिया, जिसे मानते हुए सभी अपने-अपने स्थानों को लौट गये।

सरकारी दमन

२७-२८ जनवरी ९० को प्रयाग के संत सम्मेलन में मंदिर निर्माण की आगामी तिथि १४ फरवरी तय की गई। इस बीच प्रधानमंत्री स्व. विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कुछ समय और मांगा जो उन्हें दिया गया। किन्तु बातचीत का कोई परिणाम नहीं निकलता देख सन्तों ने प्रबोधनी एकादशी (३० अक्टूबर १९९०) को शुभ मुहूर्त में श्रीराम मंदिर पुनर्निर्माण हेतु कारसेवा करने की घोषणा कर दी। इसी के साथ भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ से अयोध्या की रथयात्रा शुरु कर दी। वे पूरे उत्तरी भारत को 'जय श्री राम' से गुंजाते हुए जब २३ अक्टूबर को समस्तीपुर (बिहार) पहुँचे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

उधर उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने किसी भी कीमत पर कारसेवा नहीं होने देने की घोषणा कर दी। कार सेवा के निर्धारित समय से ७ दिन पहले से ही लखनऊ और फैजाबाद जाने वाली रेलगाड़ियाँ रद्द कर दी गईं। प्रतिवर्ष होने वाली चौदह कोसी और पंचकोसी परिक्रमा पर भी रोक लगा दी गई।

उत्तर प्रदेश की सीमा पर कड़ी चौकसी की व्यवस्था थी। रेलों और बसों से लखनऊ की ओर जाने वाले लोगों की पूरी जाँच-पड़ताल की जाने लगी और अयोध्या में किसी का भी प्रवेश रोकने के लिये सात-सात सुरक्षा घेरे बना दिये गये। इसके बाद मुख्यमंत्री ने गर्वोक्ति की, कि अयोध्या में परिंदा भी पर नहीं मार सकता।

लेकिन 'परिंदा भी पर नहीं मार सकने' की मुलायम सिंह की डींग को हजारों कारसेवकों ने अयोध्या में पहुँचकर एवं कारसेवा कर बेअसर कर दिया। सैकड़ों कारसेवकों ने ३० अक्टूबर को जन्मभूमि परिसर में घुस कर गुम्बदों पर भगवा ध्वज फहरा दिया। कार्तिक पूर्णिमा (२नवम्बर) को पुनः कारसेवा का निर्णय हुआ। यद्यपि ३० अक्तूबर को भी कुछ कारसेवक गोलियों से हताहत हुए थे, किन्तु २ नवम्बर को शांति से आगे बढ़ते कारसेवकों पर विशेष सुरक्षा बल के जवानों ने बर्बरता से गोलियाँ बरसाईं। सैंकडों कारसेवक शहीद हो गये। राजस्थान के श्री महेन्द्रनाथ अरोड़ा, सेठा राम, रामावतार सिंहल, राजकुमार व शरद कोठारी भी बलिदान हुए। अब संतों ने कार सेवा रोक देने का फैसला किया। ५-६ नवम्बर तक चले श्रीराम महायज्ञ में भाग लेकर कार सेवक अपने घरों को लौटे।

पुनः कारसेवा

सात नवम्बर को वोट क्लब (दिल्ली) पर रामभक्तों ने विशाल जनसभा की। इसी दिन संसद में वी.पी. सिंह की सरकार गिर गई और कांग्रेस के समर्थन से चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने।

२-३ अप्रेल १९९१ को दिल्ली में धर्म-संसद और ४ अप्रैल को रामभक्तों की आधुनिक भारत की विशालतम रैली हुई। इसके बाद के आम चुनाव में केन्द्र में कांग्रेस और उत्तर प्रदेश में भाजपा की

दिसम्बर को १२ बजकर १५ मिनट पर कार-सेवा प्रारम्भ होनी थी। अब तक कार-सेवक पूरी तरह अनुशासित थे, लेकिन बार-बार की वार्ताओं के निष्फल होने तथा केन्द्र सरकार की टाल-मटोल की नीति से क्षुब्ध भी थे। मन-मार कर सरयु तट की पवित्र माटी से सांकेतिक कार-सेवा करने सभी कार-सेवक शिलान्यास स्थल पर पहुँचे। श्रीराम जन्मभूमि पर दिन के १२ बजे बड़ी संख्या में कार-सेवक एकत्रित हो गये थे। कुछ दूरी पर बने मंच से आंदोलन से जुड़ा नेतृत्व रामभक्तों से अनुशासन में रहने का आग्रह कर रहा था। अचानक कुछ कार-सेवक विवादित ढांचे में घुस गये और जो मिला उसी से ढांचे पर प्रहार करने लगे। देखते-देखते सैकड़ों कार-सेवक ढांचे के गुम्बदों पर चढ़ गये और ढांचे को ध्वस्त करने लगे। सूर्यास्त होते-होते पूरा ढांचा ढहा दिया गया। रात में कार-सेवकों ने श्रीराम लला का अस्थायी गर्भ-गृह बना कर मूर्तियों को उसमें प्रस्थापित कर दिया। इस प्रकार अपमान और गुलामी का एक चिन्ह भारत-भूमि से हटा दिया गया। ❑

श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक

आखिरकार निर्णय आया

ढांचा ढहाये जाने के बाद मुस्लिम समाज हिंसा पर उतारू हो गया तथा देशभर में दंगे फैल गये। इन दंगों में लगभग २००० लोगों की जान गई और देश के १३५ शहरों-कस्बों में कर्फ्यू लगा। जन्मभूमि परिसर की पूरी ६७.७ एकड़ जमीन को केन्द्र सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया। पूर्णरूप से बौखलाई केन्द्र सरकार ने १० दिसम्बर १९९२ को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके ३ दिन बाद ही १५ दिसम्बर को राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश की भाजपा सरकारों को बर्खास्त कर दिया गया। … श्रीराम लला के दर्शनों पर रोक लगा दी गई।

… केन्द्र सरकार के … रोक के विरोध में साधु-संतों ने आमरण अनशन किया फिर भी सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया तो साधु-संतों का जेल भरो आंदोलन शुरू हुआ। … सरकार को आदेश … ही मंदिर बनाने तथा … कोई भी मस्जिद नहीं … लिए जनवरी-फरवरी … या। १० करोड़ लोगों … कर साधु-संतों की …

उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में जन्मभूमि सम्बन्धित मामलों की एक साथ सुनवाई के लिए तीन न्यायाधीशों की एक पूर्ण पीठ बनाई गई थी, जिसने १९९५ में सुनवाई शुरु की। … लखनऊ पीठ ने उक्त स्थल का 'ग्राउण्ड पेनेटेटिंग राडार सर्वे' करवाने का आदेश दिया।

अगस्त २००२ में हुए इस भूमिगत सर्वे में मंदिर के साक्ष्य के रूप में कुछ स्तंभों के आधार, फर्श एवं दीवारें देखी गई। इसके सत्यापन के लिये भारतीय पुरातत्व विभाग ने खुदाई करवाकर भी साक्ष्य जुटाये। खुदाई में भी फर्श, दीवारें एवं स्तंभों के आधार मिले … एक शिव मंदिर भी देखा गया। उक्त दोनों जांचों की रपट उच्च न्यायालय के अभिलेखों में दर्ज है।

५ जुलाई २००५ को आतंकवादियों ने … पर विस्फोटों से भरी जीप के साथ आक्रमण कर दिया किन्तु हमारे सुरक्षा बलों ने ५ आतंकवादियों को वहीं ढेर कर हमले को विफल कर दिया। रामलला की कृपा से विस्फोटक फटे नहीं।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण समिति ने भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए … आयोजित किये। प्रयाग के अर्द्धकुंभ … धर्म संसद ने उसी स्थान पर … प्रारूप के अनुसार ही मंदिर निर्माण का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया। …

६ अप्रेल २०१० को हरिद्वार के महाकुंभ में आयोजित संत सम्मेलन में भी श्रीराम मंदिर निर्माण का संकल्प दोहराया गया। इस संकल्प की पूर्ति के लिये देशभर में हनुमत शक्ति जागरण के कार्यक्रम भी हुये। जुलाई २०१० में लखनऊ पीठ ने श्रीराम जन्मभूमि विवाद की सुनवाई पूरी कर … २४ सितम्बर को सुनाने की बात कही। इस बीच फैसला स्थगित रखे जाने की अपील भी उच्चतम न्यायालय में हुई जिसे २३ सितम्बर को खारिज कर दिया गया। ३० सितम्बर को … न्यायालय ने श्रीराम … कर दिया।

सरकार बनी। राज्य सरकार ने विवादित ढाँचे को छोड़कर शेष भूमि अपने कब्जे में ले ली और ४२ एकड़ भूमि राम जन्म भूमि न्यास को पट्टे पर दे दी।

उधर उज्जैन कुंभ में १३ मई १९९२ को संतों ने घोषणा की कि ९ जुलाई ९२ से श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण शुरु करेंगे। निश्चित समय पर ५० हजार कारसेवकों ने शिलान्यास स्थल से कारसेवा शुरु की। तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहराव ने संतों से विवाद सुलझाने के लिए … समय माँगा तो संतों ने कारसेवा का स्थान बदलकर शेषावतार मंदिर कर दिया। १४ दिन की कारसेवा में सीमेंट का प्लेटफार्म बनकर तैयार हो गया लेकिन … फिर धोखा हुआ और प्रधानमंत्री के माँगे गये समय में कुछ भी नहीं हुआ।

जय श्री राम हो गया काम

२९-३० अक्टूबर १९९२ को दिल्ली में हुई पाँचवी धर्म संसद में संतों ने घोषणा की कि ६ दिसम्बर से अधिकृत २.७७ एकड़ भूमि पर कारसेवा की जायेगी। ३ दिसम्बर को रामजन्मभूमि मुकदमे में प्रयाग उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ का फैसला आने वाला था जिसे अचानक ११ दिसम्बर कर दिये जाने से असमंजस की स्थिति बन गई। एक लाख कार सेवक १ दिसम्बर को अयोध्या पहुँच चुके थे। केन्द्र सरकार ने भी २५ हजार अर्द्ध सैनिक बल फैजाबाद भेज दिये। ५ दिसम्बर को ढाई लाख कारसेवक अयोध्या में मौजूद थे। लखनऊ पीठ का निर्णय … आने से कारसेवकों में काफी रोष था।

न्यायालय के निर्णय की प्रतीक्षा करने के उद्देश्य से श्री राम कार सेवा समिति ने मात्र सांकेतिक कार सेवा का निर्णय लिया। ६

an ISO 90001: 2000 certified co.
नव वर्ष एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित
शुभ दीपावली
सोनामुखी क्रय-विक्रय एवं उत्पादनकर्ता
अरविन्द कुमार द्विवेदी मो.09314663449
देवन्द्र द्विवेदी मो.09460088779
14-15 औद्योगिक क्षेत्र, प्रथम चरण, सोजत सिटी जिला पाली (राज.) पिन 306104
दूरभाष 02960-222279 एवं 222179
E-mail: info@shivagroindustries.com
Web. www.shivagroindustries.com

रोगों से मुक्त … रहें … 9352002220
रिसर्च का लाभ प्राप्त करें।
अमृतांजलि दिव्य चिकित्सा केन्द्र
ए-13, रोड नम्बर 9, इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र, कोटा-324005
जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, गर्दन दर्द, साइटिका, एलर्जी दमा, माइग्रेन, अल्सर, कैन्सर, ब्रेन ट्यूमर, … चर्म रोग …

कोटि कोटि हिन्दू जन का, हम ज्वार उठाकर मानेंगे।
सौगंध राम की खाते हैं, हम मन्दिर वहीं बनायेंगे।।
शुभ दीपावली
रक्षिका
शिक्षा, संस्कार, शारीरिक विकास को समर्पित
१. अभिनव विद्या मन्दिर उच्च माध्य. विद्यालय
कक्षाएं वाटिका से द्वादस, संकाय-विज्ञान, वाणिज्य
२. HERITAGE PUBLIC SCHOOL
only english medium (Nur. to V)
निदेशक

राम अवतार सिंघल
चित्रगुप्त कॉलोनी (सुभाष सर्किल) कोटा-9
०१४४-२३३१-५५

श्री राम जन्मभूमि विशेषांक पर हार्दिक बधाई
आदर्श शिक्षण समिति, बाड़मेर
द्वारा संचालित
आदर्श विद्या मन्दिर
उ.मा. विद्यालय:- गड़रारोड, बाड़मेर, चौहटन
मा. विद्यालय:- बालिका बाड़मेर, बालोतरा, …
उ.प्रा. विद्यालय:- बाड़मेर, राणासर, हरसाणी, बालिका चौहटन, बालिका बायतु, शिव, भाडखा, गागरिया, गिराब
प्रा. विद्यालय:- ढाणी बाजार बाड़मेर, पुराना गांव बायतु, सुन्दर नगर गड़रारोड, चौहटन, जैसिन्धर धनाऊ, …
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं:-
रिखबदास बोथरा 9414329563 अध्यक्ष आदर्श शिक्षण समिति बाड़मेर
मनोहर लाल बंसल 94141… मंत्री आदर्श शिक्षण समिति बाड़मेर

दिसम्बर को १२ बजकर १५ मिनट पर कार-सेवा प्रारम्भ होनी थी। अब तक कार-सेवक पूरी तरह अनुशासित थे, लेकिन बार-बार की वार्ताओं के निष्फल होने तथा केन्द्र सरकार की टाल-मटोल की नीति से क्षुब्ध भी थे। मन-मार कर सरयु तट की पवित्र माटी से सांकेतिक कार-सेवा करने सभी कार-सेवक शिलान्यास स्थल पर पहुँचे। श्रीराम जन्मभूमि पर दिन के १२ बजे बड़ी संख्या में कार-सेवक एकत्रित हो गये थे। कुछ दूरी पर बने मंच से आंदोलन से जुड़ा नेतृत्व रामभक्तों से अनुशासन में रहने का आग्रह कर रहा था। अचानक कुछ कार-सेवक विवादित ढांचे में घुस गये और जो मिला उसी से ढांचे पर प्रहार करने लगे। देखते-देखते सैंकड़ों कार-सेवक ढांचे के गुम्बदों पर चढ़ गये और ढांचे को ध्वस्त करने लगे। सूर्यास्त होते-होते पूरा ढांचा ढहा दिया गया। रात में कार-सेवकों ने श्रीराम लला का अस्थायी गर्भ-गृह बना कर मूर्तियों को उसमें प्रस्थापित कर दिया।इस प्रकार अपमान और गुलामी का एक चिन्ह भारत-भूमि से हटा दिया गया । ❑

शुभ दीपावली

रोगों से क्यों दुःख पा रहे हैं?
रिसर्च का लाभ प्राप्त करें।

9352602226

अमृतांजलि दिव्य चिकित्सा केन्द्र

ए-13,रोड़ नम्बर १, इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र, कोटा-324005

जोड़ो का दर्द, कमर दर्द, गर्दन दर्द, साईटिका, एलर्जी दमा, माईग्रेन, अल्सर, कैन्सर, ब्रेन टयूमर, पाइल्स, चर्म रोग, चश्मे के नम्बर कम करे। लम्बाई बढ़ाने की दिव्य औषधि, कायाकल्प करवाकर सभी रोगों से लाभ करवाया जायेगा।

कोटि कोटि हिन्दू जन का, हम ज्वार उठाकर मानेंगे।
सोगंध राम की खाते हैं, हम मन्दिर वहीं बनायेंगे॥

शुभ दीपावली

संप्रेषण
शिक्षा, संस्कार, शारीरिक विकास को समर्पित

१. अभिनव विद्या मन्दिर उच्च माध्य.विद्यालय
कक्षाएं वाटिका से द्वादस, संकाय-विज्ञान, वाणिज्य

२. HERITAGE PUBLIC SCHOOL निदेशक
only english medium (Nur. to V)

चित्रगुप्त कॉलोनी
(सुभाष सर्किल) कोटा-9

राम अवतार सिंघल
०६४१३२२१८४४

an ISO 90001: 2000 certified co.

नव वर्ष एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

शुभ दीपावली

सोनामुखी क्रय-विक्रय एवं उत्पादनकर्ता

अरविन्द कुमार द्विवेदी
मो.09314663449

देवेन्द्र द्विवेदी
मो.09460088779

14-15 औद्योगिक क्षेत्र, प्रथम चरण,
सोजत सिटी जिला पाली (राज) पिन **306104**
दूरभाष **02960 222279** एवं **222179**
E mail : info@shivagroindustries.com
Web. www.shivagroindustries.com

श्री राम जन्मभूमि विशेषांक पर हार्दिक बधाई

आदर्श शिक्षण समिति, बाड़मेर

द्वारा संचालित

आदर्श विद्या मन्दिर

उ.मा. विद्यालय :-गडरामार्ग बाड़मेर, चौहटन
मा. विद्यालय:- बालिका बाड़मेर, बायतु, धोरीमन्ना, गडरारोड़
उ.प्रा. विद्यालय:- बाड़मेर, रामसर, हरसाणी, बालिका चौहटन, बालिका बायतु, शिव, भाडखा, गागरिया, गिराब
प्रा. विद्यालय:- ढाणी बाजार बाड़मेर, पुराना गांव बायतु, सुन्दर नगर गड़रारोड, चौहटन, जैसिन्धर धनाऊ, ढोक, नवातला जैतमाल, गूंगा

की ओर से पाथेय कण के श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक पर
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ:-

रिखबदास बोथरा
9414529565
अध्यक्ष
आदर्श शिक्षण समिति बाड़मेर

मनोहर लाल बंसल
9414107861
मंत्री
आदर्श शिक्षण समिति बाड़मेर

वर्ष 1999 से निरन्तर
आपके साथ

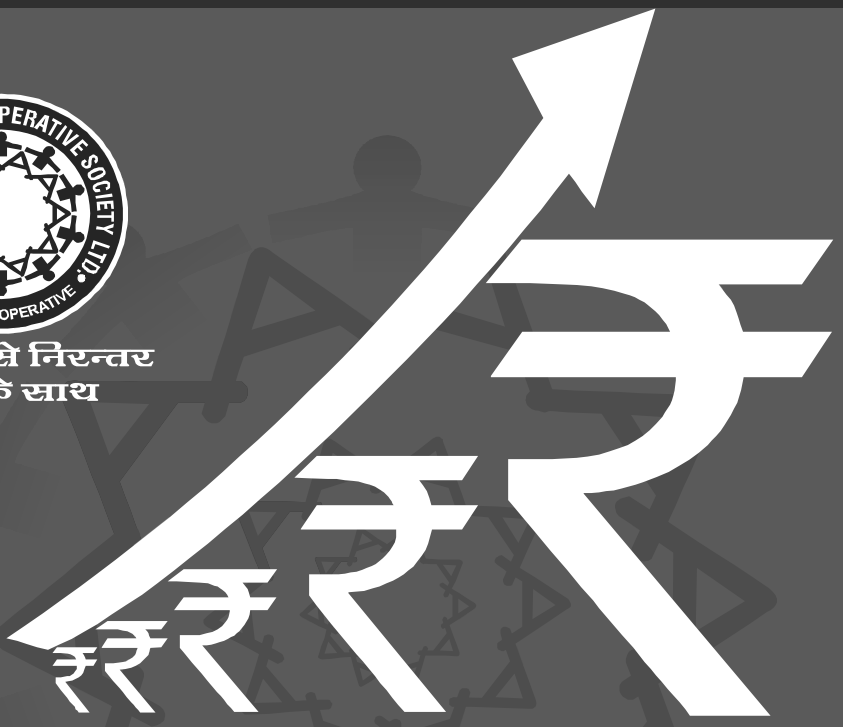

सावधि जमा योजना (FD) सर्वाधिक ब्याज दर – 12.50%

मासिक आय योजना (MIS) सर्वाधिक ब्याज दर – 11.50%

आवर्ती जमा योजना (RD) सर्वाधिक ब्याज दर – 11.00%

TRULY® Co-operative

आदर्श बचत पत्र
6 वर्ष में जमा धन दोगुना

आदर्श ट्रिपल
10 वर्ष में जमा धन तीन गुने से अधिक

आदर्श दशाब्दी बॉण्ड
12 वर्ष में जमा धन चार गुना

आदर्श गोल्डन बॉण्ड
14 वर्ष में जमा धन पाँच गुना

आदर्श राजलक्ष्मी बॉण्ड
16 वर्ष में जमा धन छः गुना

*नियम एवं शर्तों के अधीन

आदर्श क्रेडिट को–ऑपरेटिव सोसाइटी लि.®

(उत्तर भारत की सबसे बड़ी मल्टीस्टेट क्रेडिट को–ऑपरेटिव सोसाइटी)

कार्यक्षेत्र : राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, छत्तीसगढ़, दिल्ली, कर्नाटक
जम्मू–कश्मीर, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडू, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश

पंजीयन संख्या MSCS/CR/269/2008, पंजीकृत कार्यालय : सिरोही, राजस्थान

केन्द्रीय कार्यालय : 295, आदर्श टॉवर, सेक्टर–11, हिरण मगरी, उदयपुर–313002 (राज.)

दूरभाष : 0294–2484085, 2483281

Visit us : www.adarshcredit.com E-mail : info@adarshcredit.com

*केवल सदस्यों के लिये।

ऐतिहासिक कार-सेवा के अनुभव के अनुभव

पूरी अयोध्या राममय थी

❑ राम अवतार सिंघल

३० अक्तूबर १९९० के ऐतिहासिक दिन कारसेवकों के शौर्य से अयोध्या की घेरेबंदी ध्वस्त हो गई और कार-सेवा हुई। कोटा के रामभक्त श्री रामावतार सिंघल ने उस दिन सबसे पहले श्रीरामलला के दर्शन किये थे। अयोध्या तक की रोमांचकारी यात्रा तथा कार सेवा का वर्णन उन्हीं के शब्दों में यहाँ प्रस्तुत है-(सं)

***श्री** राम जन्मभूमि के उद्धार हेतु चलाये जा रहे आन्दोलन के घटक के रूप में मुझे भी कारसेवा हेतु अयोध्या जाने का गौरव प्राप्त हुआ। दिनांक २२ अक्टूबर से ४ नवम्बर १९९० तक का समय अनेक प्रकार से रोमांचकारी और कल्पनातीत रहा ।*

२२ अक्तूबर ९० को जाने वाले कार-सेवकों के जत्थे में दादाबाड़ी कोटा का पच्चीस सदस्यीय दल सम्मिलित हुआ। सभी को अवध एक्सप्रेस से लखनऊ के लिए प्रस्थान करना था। रेलवे स्टेशन कोटा पर उस दिन ऐसा लग रहा था जैसे अवध एक्सप्रेस से केवल कार सेवक जा रहे हैं। कोटा विभाग से लगभग एक हजार पाँच सौ कारसेवकों ने उस दिन अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। सभी के पास मनकापुर स्टेशन के टिकट थे, जहां उतर कर हमें परशुराम प्रखण्ड पहुँचना था। कोटा से अवध एक्सप्रेस सही समय पर आगे बढ़ी। सभी कार सेवकों ने अपने तिलक, मालाऐं और केसरिया दुपट्टे हटा लिये। गाड़ी राजस्थान की सीमाओं को सकुशल पार कर उत्तर प्रदेश की सीमाओं में घुसी ही थी कि फतेहपुर सीकरी में पुलिस डिब्बे में घुस गयी। एक पुलिस अधिकारी ने नीचे उतरने के लिये कहा। अब हम सभी पच्चीस सहयात्री बाहर प्लेटफार्म पर थे। हमारे चारों ओर पुलिस बल था जो बाहर खड़े पुलिस वाहनों में बैठाने हेतु हमें बाहर ले चला। रात के लगभग बारह बजे थे। सभी कारसेवक बाहर उतार लिये गये थे। परन्तु कारसेवक इस बात पर अड़ गये कि जब तक हमें बाकी मार्ग का किराया नहीं मिलता, हम स्टेशन से नहीं हटेंगे।

बारातघर में

इसी उहापोह में ट्रेन चार घंटे लेट हो गयी। तभी अवसर पा कर एक सिपाही के सहयोग से हमारे जत्थे के बारह लोग फिर से गाड़ी में सवार हो गये और कुछ समय उपरान्त गाड़ी गन्तव्य की ओर बढ़ चली। इटावा और उन्नाव में पुलिस आयी अवश्य लेकिन हम उनके प्रभाव से बचे रहे। लखनऊ में उतरते समय हम बारह साथी एक साथ थे। वहां वि.हि.प. की योजनानुसार आर्य नगर स्थित बारातघर में हमें ठहराया गया। इस प्रकार २३ अक्तूबर की रात हमने जम्मू कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, उ०प्र०, केरल, कर्नाटक के कारसेवकों के साथ बारातघर में व्यतीत की। रात में ही हमें विहिप के कार्यकर्ताओं ने बताया कि प्रशासन की किलेबंदी बहुत मजबूत है, अयोध्या जाना कठिन है, अतः कल प्रातः यहीं विधान सभा भवन पर गिरफ्तारी देंगे।

लेकिन दूसरे दिन दिनांक २८ अक्टूबर की प्रातः हमारी टोली के चार साथियों कोटा के कीर्ति प्रकाश शर्मा, कीर्ति स्वरुप शर्मा, रवि शर्मा और हरि मेहरा ने अयोध्या जाने की अनुमति चाही । मैंने उन्हें परिस्थिति बताई और न जाने का परामर्श दिया परन्तु उनका विशेष आग्रह देख शुभकामना दे उन्हें विदा किया। मेरे हृदय में उनकी इस निष्ठा से प्रकाश उत्पन्न हुआ और मैंने शेष साथियों से कहा कि यदि गिरफ्तार होना है, तो कारसेवा के प्रयास में होगे और हम सब पैदल अयोध्या चलेंगे। लक्ष्मी नारायण गौतम, सेवानन्द जी, बलराम जी और श्याम जी ने भी इसका समर्थन किया। हम पाँच साथी चिनहट की ओर चल पड़े। अयोध्या मार्ग पर लखनऊ से निकलते ही पहला कस्बा यही था। यहाँ से अयोध्या तक का सड़क मार्ग भारी पुलिस घेरे में था। सामान्य व्यक्ति तो क्या, स्वीकृति ले कर जाने वालों का भी जाना मुहाल था। स्टेण्ड से कुछ पूर्व विहिप के दो कार्यकर्ता बैठे थे, उन्होंने हमें संकेत से बुला कर मुख्य सड़क के दायें या बायें खेतों के बीच में चलने का सुझाव दिया। हम सावधानी पूर्वक सड़क के दांयी ओर खेतों के बीच में चल पड़े। मार्ग में जय श्री राम का घोष हमारे और ग्रामवासियों के मध्य का सम्पर्क सूत्र बनता गया। दुष्टात्मा मुलायम सिंह द्वारा बिछाये जाल के प्रति हम बहुत सावधान थे।

जवान छुट्टी पर

एक खेत में एक नौजवान हल चलाता मिला। बात हुई तो ज्ञात हुआ। वह पी.ए.सी. का जवान है और रामभक्तों के विरुद्ध कुछ करने नहीं जायेगा। इसलिये मेडिकल छुट्टी ले कर घर बैठा है।

लगभग पन्द्रह कि.मी. पैदल चल कर हम **परेठिया** ग्राम में पहुँच गये। हमसे पूर्व लगभग १५० कारसेवक वहाँ पहुँचे हुए थे। गांव के लोगों ने हार्दिक स्वागत किया और हमें पच्चीस के समूह में भोजन हेतु बुलाया गया । ग्राम के ब्राह्मण और वैश्य परिवारों ने मुख्य रूप से सब व्यवस्थायें संजोये रखी थी।अनेक महिलायें भोजन बना रही थी और पुरुष अत्यधिक श्रद्धा भाव से भोजन करा रहे थे। दिनांक २५ अक्टूबर प्रातः ५ बजे अंधेरे में हम आगे की यात्रा पर चल पड़े। अन्धेरे में रेलवे लाइन के सहारे-सहारे संभलते हुए आगे बढ़े, मार्ग में अन्यान्य दिशाओं में आ रहे कितने ही कारसेवक मिलते गये लेकिन सभी अपने

छोटे बड़े समूह में आगे बढ़ रहे थे।

दिन के लगभग एक बजे **गोछवरा** (बाराबंकी) नामक गांव के एक किसान परिवार में हम ले जाये गये। वे प्रातः से ही आने वाली प्रत्येक टोली का स्वागत कर विदा कर रहे थे। उन्होंने हमें बड़े प्रेम से दोपहर का भोजन करवाया, साथ ही उन्होंने विश्वास दिलाया कि देश जाग चुका है, अब राष्ट्र विरोधियों की दाल हम किसी भांति देश में नहीं गलने देंगे। उन्होंने हमारे लिये गर्म पानी और सरसों तेल ला कर दिया ताकि पैरों की कुछ थकान निकल जाये। इस समय तक हम लगभग चालीस कि.मी. मार्ग तय कर चुके थे। वहाँ से हमने लगभग ढाई बजे प्रस्थान किया। बड़े प्रेम से गाँव के लोगों ने विदा किया और साथ में एक परिजन को कुछ दूर तक मार्ग दर्शन हेतु भेजा। हमें बताया गया कि सामने टेर व टिकरा नाम के दो गाँव हैं, जो मुस्लिम बहुल हैं और वहां के निवासी भारी तस्करी का धंधा करते हैं। स्थिति ऐसी थी कि हमें टेरा गांव के निकट से निकलना पड़ा। तभी उस गांव का एक लड़का दौड़ कर हमारे पास आया और बताने लगा कि कुछ समय पूर्व गांव के मुसलमानों ने पुलिस को बुलाकर कुछ कारसेवकों को पकड़वा दिया है।

संन्यासिनी दौड़ कर आईं

संध्या होने को आयी, अतः हमने निकटस्थ ग्राम **बरैया** में विश्राम का मानस बनाया और चल पड़े ग्राम में स्थित मंदिर की ओर। मन्दिर में पहुँचे तो एक महात्मा जी और एक संन्यासिनी जी के दर्शन हुए। उन्होंने हम सभी के लिये चाय, चबेने की व्यवस्था की। रात्रि को महात्मा जी ने स्नेह सिक्त भोजन तैयार कर खिलाया और ग्राम के प्रधान जी जो यादव थे, ने बड़े प्रेम से दूध ला कर सत्कार किया। प्रातः पुनः कलेवा और भोजन के उपरान्त महाराज ने प्रस्थान की आज्ञा दी और सफलता का आशीर्वाद दिया। कोटा से चलते समय मेरे पैर में बालतोड़ बन गया था और बेलाडोना प्लास्टर कहीं नहीं मिला था। महात्मा जी के सिर में बेलाडोला लगा देख मैंने संन्यासिनी जी से यह माँगा लेकिन चलते समय लेना भूल गया। सवेरे प्रस्थान के उपरान्त एक कि.मी. जाने के बाद संन्यासिनी जी दौड़ी हुई आईं और मुझे बेलाडोना दे गयी। बड़ा आश्चर्य हुआ।

अब हम तेज गति से आगे की ओर बढ़ चले। मार्ग में कुछ उत्साही युवक कृषक खेतों में काम कर रहे थे। हमारे द्वारा जय श्रीराम कहने पर उन्हें प्रसन्नता हुई और एक वृद्ध हमारे साथ चल पड़े, जो लगभग चार कि.मी. तक साथ रहे। हम आगे बढ़े तो नहर पटरी पर एक वृद्ध राम सुहावन जी मिले जो श्रद्धापूर्वक हमें अपने गांव ले गये। उनके सारे परिवार ने प्रेम से हमारा स्वागत किया । गांव का नाम था **संतोषपुरवा**। जीवन में ऐसा सरल व शुद्ध स्नेह कभी नहीं मिला। हम सभी कार सेवकों के भोजन की सुचारु व्यवस्था थी।

हल्दी घाटी सुनाई

बताया गया कि रात्रि विश्राम **चौरी** गांव में करें। परन्तु उससे पहले ही नहर की पटरी पर ठाकुर जसवन्त सिंह जी निवासी **'बहरैला डीह तिवारीपुर'** जिला बाराबंकी ने हमसे अपने घर चलने और विश्राम करने का विनम्र आग्रह किया। रात्रि में हमारे लिये गर्म पानी और मालिस हेतु सरसों तेल की व्यवस्था की गयी। साथ ही ठाकुर परिवार पैर दबाने को तैयार थे। स्वाभाविक रूप से इसके लिये हमारे बीच में कोई तैयार होने वाला नहीं था। रात्रि में ठाकुर साहब के बड़े पुत्र ने श्याम नारायण पाण्डेय द्वारा रचित हल्दी घाटी कविता का पंचम पुष्प बड़े ओजपूर्ण ढंग से पढ़ कर सुनाया। दूसरे दिन सवेरे हम आगे बढ़े और दोपहर में **'बहरामऊ'** पोस्ट बलपुर जिला बाराबंकी पहुँचे। ग्रामवासियों के साथ साथ पाण्डेय परिवार स्वागत के लिये तैयार खड़ा था। डा. विजय कुमार पाण्डेय अपने परिजनों और मित्रों के साथ दिन भर आने वाली समस्त टोलियों का मुक्त हृदय से स्वागत करते थे। अत्यन्त आग्रह पूर्वक भोजन कराते और भोजन भी ऐसा कि विवाह का भोज फीका पड़ जाये।

अब लखनऊ से हम लगभग एक सौ कि.मी. दूर आ चुके थे। स्वागत व विश्राम उपरान्त पाण्डेय परिवार के पांच सदस्य ग्राम के निकट बहती नदी को नाव से पार करा कर, चारों ओर स्थित मुस्लिम ग्रामों से सुरक्षित कर **तालगांव** ले गये। ग्राम के मान्य सज्जन सेक्रेटरी साहब ने हम सभी का भावपूर्ण स्वागत किया। पाण्डेय परिजनों से विदा होने का दृश्य हृदय को विदीर्ण कर गया। आँखें आसुंओं से भीग रही थी। लगता था कि कभी राम से भरत इसी प्रकार विदा हुए होंगे। २७ अक्तूबर थी, हम लगभग बीस-पच्चीस कार सेवक थे, रात्रि विश्राम **तालगांव** में किया। दूसरे दिन प्रातः अपने ट्रेक्टर से मान्य सज्जन लगभग १२ कि.मी. दूर तक छोड़ कर आये। एक गाँव में मातायें भोजन लिये गृह द्वार पर खड़ी थी और जाने वाले प्रत्येक कार सेवक को भोजन पैकेट दे रही थी।

घरों में छिपाया

लगातार कारसेवकों की संख्या बढ़ती जा रही थी। अब हमारा रात्रि विश्राम **किन्होपुर** के निकटस्थ एक ग्राम में हुआ। सवेरा हुआ दिनांक २९ अक्टूबर और लखनऊ से लगभग १५० कि.मी. दूरी पैदल पार हो चुकी थी। अब हम आगे बढ़े। गांव पश्चात गांव छोड़ते हुए 'गऊघाट' पहुँचे। सारा गांव समस्त स्त्री पुरुष आबाल-वृद्ध कारसेवकों के स्वागत में पलक पावड़े बिछाये हुए थे। घर-घर तिलक निकाले जा रहे थे और पोलीथीन में जलपान दिया जा रहा था। बीच में चौक में भोजन की विशेष व्यवस्था की गयी थी।उसी समय श्रीमान मुलायम सिंह जी का हेलीकॉप्टर चक्कर लगाता हुआ दिखाई दिया। हम सभी कार सेवक दम घोट कर खेतों में छुप गये। अब हम आगे बढ़े कार सेवकों की संख्या इतनी हो गयी कि लगता था कि मनुष्यों की दीवारें चली जा रही हैं। आगे मानापुर गांव में पहुँचते ही पुलिस बल के पहुँचने का समाचार मिला और हम सभी को ग्रामवासी अपने घरों में तब तक छुपाये रहे जब तक भय दूर न हुआ। हम लगभग एक घंटा घरों में छिपे रहे बाद में ज्यों ही बाहर निकले कि भारी संख्या में पुलिस दिखाई दी। हम सभी भाग कर गन्ने के ऊँचे खेतों के बीच जा छिपे।

उस समय संध्या के ६ बजे थे। रात्रि ११ बजे तक चन्द्रमा के धुंधले प्रकाश और ठंडी रात में बिना खांसे और छींके सभी कारसेवक

खेतों में चुपचाप पड़े रहे। बाहर सड़क पर डी.आई.जी. साहब घेरा डाल कर चहल कदमी कर रहे थे। वातावरण में थोड़ी शान्ति देख कर धीरे से छुप कर हम गांव में पहुँचे। ग्रामवासियों ने भोजन की तैयारी की हुई थी। रात्रि के लगभग बारह बजे थे। सभी कारसेवकों को सब्जी पूड़ी का प्रेमपूर्वक भोजन करा कर ग्रामवासी आगे भेज रहे थे । बाद में पता चला कि डी.आई.जी.महोदय ने राम कार्य में अवरोध न होने का बहुत दुख प्रकट किया एवं पश्चाताप किया। रात्रि में डेढ़ बजे एक बगीचे में विश्राम किया।

अयोध्या में

प्रातः साढे तीन बजे ही हम चल पड़े लक्ष्य की ओर। लखनऊ से हमारी दूरी एक सौ सत्तर कि.मी. हो चुकी थी। उस दिन की तिथि थी ३० अक्टूबर। मन में भारी उत्साह था और विश्वास था कि अब हम अयोध्या पहुँचेंगे। गांव पर गांव पार करते हम साठ सत्तर कार सेवकों ने इच्छानुसार अल्पाहार लिया और आगे बढ़े। अब अयोध्या केवल चार कि.मी. दूर थी, मार्ग में **महोबरा** गांव आया। महोबरा में मुख्य मार्ग पर पुलिस चौकी थी। अधिकारी बैठे थे, सड़क पार कर उनके सामने से ही हजारों कारसेवक आगे बढ़ रहे थे लेकिन कोई विरोध नहीं। हाँ तीन फायर अवश्य किये गये। कारण संभवतः प्रशासन को भ्रम में रखना रहा होगा।

अब अयोध्या की रेलवे लाइन हमसे लगभग आधा-कि.मी. दूर थी। काफी लोग अयोध्या से लौटते हुए दिखाई दे रहे थे। चेहरे पर उद्विग्नता, चिन्ता, बदहवासी और वापिस लौटने की भावाभिव्यक्ति स्पष्ट दिख रही थी। कुछ कह रहे थे- बस हमने तो यहीं से जन्म भूमि के दर्शन कर लिये अब वापिस लौट चलते हैं। हमारी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा सब क्यों हो रहा है। आगे बढ़ रेलवे लाइन तक पहुँचे तो सब स्पष्ट हो गया। टेड़ी बाजार रेलवे फाटक के दूसरी ओर सड़क पर पत्थर बिखरे पड़े थे। उपस्थित भारी भीड़ में से कुछ लोगों द्वारा ज्ञात हुआ कि यहाँ लाठी चार्ज हुआ था। संभवतः इसीलिए कुछ लोगों ने अयोध्या से हटना शुरु कर दिया था। टेड़ी बाजार फाटक पर हम ३० अक्तूबर को लगभग प्रातः साढे दस बजे पहुँचे थे। जहां रेलवे लाइन पर उपस्थित लगभग चार सौ कार सेवकों का समूह किंकर्तव्य विमूढ़ खड़ा था, बड़ी उद्विग्नता थी। मैं किसी स्थानीय व्यक्ति के मार्ग दर्शन में अकेले ही रेलवे फाटक पार कर लक्ष्य की ओर चल पड़ा। थोड़ा आगे बढ़ कर पीछे घूम कर देखा तो लगभग डेढ़ सौ लोग बिना डंडे पत्थर के आगे बढ़ रहे थे। अयोध्या स्टेशन से आगे गलियारे में हम दो पक्तियाँ बना कर श्रीराम का जय-घोष लगाते हुए आगे बढ़ने लगे।

पुलिस का सहयोग

खटीकों के मन्दिर पर मुख्य सड़क आ गयी। दोनों ओर बल्लियों के बेरीकेड्स लगे थे। भारी पुलिस बल हथियारों के साथ उनके पीछे खड़ा था। हम जय श्रीराम का उद्घोष कर रहे थे और पुलिस कर्मियों में से भी कुछ जोर से तो कुछ धीमे से जयघोष दोहराते थे। इस प्रकार लगभग एक कि.मी. चलने के उपरान्त भारी भीड़ सामने दिखाई दी। लोग उत्तेजना में थे। गगनभेदी जयघोष कर रहे थे। पुलिस की बसें सैंकड़ों की संख्या में आड़े तिरछे खड़ी थी। कारसेवक और पुलिस बल के बीच काफी नोंकझोंक हो रही थी। कुछ ही आगे हनुमान गढ़ी चौराहा था और हम आगे बढ़ने के लिए भीड़ के बीच से मार्ग बनाने लगे। कारसेवक आगे बढ़ते गये और सभी बसों की हवा निकालते गये ताकि पुलिस बल बन्दी बना कर ले जाने में असमर्थ हो सके। हनुमानगढ़ी की गली में प्रविष्ट हो कर हम आगे बढ़े परन्तु पुलिस उधर से आगे नहीं बढ़ने दे रही थी। ठीक तभी दो अयोध्यावासी हमें सड़क छोड़ कर बायीं ओर के उबड़ खाबड़ भाग की ओर से आगे ले चले। साढे पाँच फुट ऊँची चारदीवारी को हमने फलांग कर पार किया।

इस समय हमारी संख्या लगभग अस्सी थी। आगे संकरी गली थी जो श्री राम गुलेला चौक पर पहुँची थी। ठीक तभी पाँच चारपाइयों पर गोलियों से आहत या हत कारसेवकों को कुछ लोग ले कर आये और श्रीराम चिकित्सालय की ओर बढ़ गये । मेरे साथी लक्ष्मी नारायण जी, मैं और साथ में दो अन्य कार सेवक जिनमें एक अयोध्या का कार सेवक वासुदेव गुप्त (शहीद)था , निःसंकोच आगे बढ़े और श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर की अन्तिम सड़क पर पहुँच गये। कुछ आगे चल कर देखा कि सामने लगभग सौ मीटर दूरी पर पुलिस बल सभी शस्त्रों से परिपूर्ण दीवार के समान खड़ा था।

पुलिस द्वारा दी जाने वाली बार-बार की चेतावनी को हमारे द्वारा अनसुना करने पर पुलिस अधिकारी ने क्रोध से हमें अपनी ओर पुकारा और गोली मारने की पोजीशन लेने लगे। मैंने सीना खोल कर कहा कि मार दो गोली। इस समय दिन के लगभग साढे ग्यारह बजे थे। पीछे से जय श्रीराम का उद्घोष सतत सुनाई दे रहा था।

जन्मभूमि के दर्शन

तभी पीछे से सत्तर-अस्सी कारसेवकों की भारी भीड़ विशेष उत्साह के साथ अबाध आगे बढ़ी चली आ रही थी जिसमें वृद्ध व्यक्ति, वृद्ध महिलाएं और साधु लोग दिखायी दिये। गगन भेदी नारों से सारा वायुमण्डल राम नाम से गूँज रहा था। हमने उचित अवसर जानते हुए खड़े-खड़े या बैठ कर जैसे ठीक समझा पुलिस को धकेलना शुरु कर दिया।

इस समय वातावरण बहुत उन्मादी हो गया था। एक नागा साधु का कम्बल उतर गया तो वह नग्नावस्था में ही उद्घोष लगा लगा कर नाचने लगा। इतनी ही देर में न जाने कैसे सामने से पुलिस बल हट गया और कार सेवकों का सैलाब आगे बढ़ने लगा। लगभग बीस कदम पर ही ऊँची सीढियों के पार जन्म स्थान मन्दिर दिखायी दिया और उसके बाहर तथा आजू बाजू सब ओर सभी तरह से सन्नद्ध पुलिस बल खड़ा था। हम उसी मन्दिर को श्री राम जन्मभूमि समझते हुए उस की ओर आगे बढ़े। लेकिन सामने खड़े पुलिस के जवान ने दायें हाथ से बायीं ओर इंगित कर कहा- उधर जाओ इधर आ कर क्या करोगे। अब हम श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के ठीक सामने थे। कंटीले तार और लोहे के पाइप चारों ओर लगे थे। वायुमण्डल बहुत गर्म था। ठीक तभी चार कारसेवकों ने रस्से से एक कंटीले अवरोध को खींच कर गिरा

दिया ।

अब हम काफी कारसेवक अन्दर और चैनल गैट के सामने थे। चैनल गेट का ताला अन्दर से बन्द था। तभी अन्दर खड़े सिपाहियों में से एक सिपाही ने उत्तर प्रदेश के सेवानिवृत्त और विहिप के अधिकारी श्रीशचन्द दीक्षित के कहने पर ताला खोल कर थोड़ा सा (लगभग एक फुट) चैनल गेट खोला और एक सिपाही को अन्दर लिया। इसे सुअवसर जानकर मैने और एक साधु ने चैनल गेट के बीच खड़े हो कर उसे और चौड़ा कर दिया। अब लगभग पन्द्रह कार सेवक चैनल गेट के अन्दर पहुँच गये। अन्दर काफी पुलिस बल था। हमारे ऊपर तुरन्त अश्रु गैस के गोले छोड़े गये और लाठी चार्ज शुरु कर दिया गया।

हो गया काम

अचानक न जाने कैसे लाठी चार्ज रुक गया और एक सिपाही ने संकेत से एक लघु मार्ग में प्रवेश करने को कहा। हम सभी दौड़ पड़े अन्दर की ओर जहाँ दृश्य बड़ा रमणीय था। चबूतरे पर बैठा साधु-मण्डल जो कीर्तन कर रहा था खड़ा हो कर नाचने लगा। हमने तुरन्त अन्दर पहुँचकर श्री राम लला के सम्मुख दण्डवत प्रणाम किया। बाहर आंगन में आ कर देखा तो लगभग १५० कार सेवक प्रांगण में प्रविष्ठ हो गये थे और बाबरी ढांचे को साधनहीनता की स्थिति में भी कुछ न कुछ हानि पहुँचाने का प्रयास कर रहे थे। असीमित आह्लाद, आनन्द और विजयातिरेक सभी के चेहरों पर था। बाहर कुछ प्रौढ़ कारसेवक लाठियों से ईंटें निकाल निकाल कर चारदीवारी की खिड़कियां तोड़ रहे थे, कुछ कारसेवकों ने प्लास्टर उखाड़ना शुरु कर दिया था। हमारी इच्छा थी कि श्रीराम लला के भव्य स्थान के ऊपर बने गुम्बद के बाहर लिखे फारसी लेख को मिटा दिया जाय। परन्तु ऊँचाई अधिक थी साधन नहीं था। अतः हमने एक चाकू से मध्य द्वार के एक ओर लगे प्लास्टर को छीलकर सांकेतिक कारसेवा का उपक्रम पूरा किया। इसी बीच भवन के बाहर तीन फायरिंग हुए। पुलिस ने गुम्बद पर भगवा पताका फहराते एक कारसेवक को बलिवेदी पर चढ़ा दिया था।

इसी समय बहुत तेज गति से पुलिस ने भवन में घुस कर लाठी चार्ज शुरु कर दिया। लक्ष्मी नारायण जी गौतम की कनपटी पर लाठी की मार पड़ी और वे घायल हो गये। एक लाठी मुझे भी मारी गयी। चार दीवारी के बाहर एक सिपाही ने कहा कि देखो जो तुम्हे करना था वह कर लिया, **'अब जाओ आगे स्थिति बिगड़ने वाली है।'** मैंने उचित समझा कि अब बाहर चल देना ठीक रहेगा। कुछ समय उपरान्त लक्ष्मी नारायण जी गौतम आये , उनका चेहरा खून से लथपथ था। मैं उन्हें श्रीराम चिकित्सालय ले गया तथा उनकी मरहम पट्टी करायी। उसके पश्चात हम दोनों सरयू स्नान हेतु सरयू मैया की ओर चल पड़े। लगभग तीन कि.मी. बाजार सामने था। श्रीराम मन्दिर पर कार सेवा हो गयी है , इस समाचार से सभी के हृदय में प्रसन्नता की सीमा नहीं थी। हृदय गद्-गद् थे। मुलायम सिंह के कर्फ्यू की धज्जियाँ उड़ गयी थी, अपार जन सागर मुख्य बाजार के साथ-साथ समस्त गलियों में हिलोरे ले रहा था, काफी दूकानें खुल गयी थीं। अयोध्यावासी रामभक्तों के लिए पलक पावड़े बिछाये खड़े थे, अनेक स्थानों पर दूकानदारों ने अपना सर्वस्व लुटाने की होड़ लगा रखी थी। प्रत्येक आने-जाने वालों को आग्रह पूर्वक रोकना और मिष्ठान खिला कर जल पिलाना जैसे उनका कर्तव्य हो गया था। पुलिस बल के जवान भी उनका सत्कार प्रेम भाव से स्वीकार कर रहे थे। समस्त अयोध्या राम मय थी। ❑

४एच१४, महावीर नगर विस्तार कोटा-६

श्री राम जन्मभूमि विशेषांक पर हार्दिक बधाई

विद्या भारती शिक्षा संस्थान
से सम्बद्ध

आदर्श शिक्षण संस्थान

बालोतरा

-संस्थान द्वारा संचालित ११ विद्या मन्दिर
-अध्ययनरत भैया २३६० बहिनें ११६४
-आचार्य १४४
-प्रति वर्ष उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम

सुविधायुक्त उत्तम छात्रावास

अखिल भारतीय खेलकूद समारोह में दो भैया रजत पदक एवं कास्य पदक विजेता

शिक्षा ! संस्कार !! स्वावलम्बन !!!

मूलचन्द सालेचा अध्यक्ष | **नरेन्द्र कुमार गर्ग** व्यवस्थापक | **पूनम चन्द पालीवाल** सचिव

श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक के प्रकाशन पर शुभकामनाएँ

डॉ. शिवचरण सिंह कुशवाह
(एम.एस.)

सम्पर्क सूत्र:
05642-223457

गुरुद्वारा मार्ग, धौलपुर (राजस्थान)

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. आर.एस. गर्ग
M.B.B.S., M.S., FAIS
सर्जन
Life Member of Association of Surgeons of India
Life Member of Association of Gestroendo Surgeon
Life Member of Indian Medical Association
Life Member of Association of Gastroenterology (Raj Chapter)
Ex. Surgeon of Raj. Govt.

ऐतिहासिक कार-सेवा के अनुभव

घेराबन्दी पार कर पहुँचे अयोध्या

❑ सत्य नारायण गुप्ता

जयपुर के श्री सत्यनारायण गुप्ता उन सौभाग्यशाली कारसेवकों में से हैं जो उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह की घेरेबन्दी को तोड़कर अयोध्या पहुँचे। गुप्ता जहाँ ३० अक्टूबर को हुई सफल कारसेवा से उत्पन्न हर्षोल्लास के गवाह बने, वहीं २ नवम्बर को कारसेवकों का बर्बर हत्याकांण्ड भी उन्होंने अपनी आँखों से देखा। यहाँ सत्यनारायण गुप्ता की जयपुर से अयोध्या (वर्ष १९९०) तक की यात्रा और कारसेवा का अनुभव प्रस्तुत किया जा रहा है-

वर्ष १९९० में दीपावली के २ दिन बाद से पूरे देश से कारसेवक अयोध्या जाने लगे थे। किन्तु २२ अक्टूबर को आडवानी जी की बिहार में गिरफ्तारी के पश्चात् २३ तारीख से जयपुर में कर्फ्यू लग चुका था जिसके कारण शहर की चार दीवारी में रहने वाले उत्सुक कारसेवकों का अयोध्या जाना सम्भव नहीं हो पाया। इसी कारण जहां एक ओर प्रतिदिन हजारों कारसेवक जयपुर से रवाना हो रहे थे वहां २५ अक्तूबर को जयपुर से सिर्फ १४ कारसेवक रवाना हो सके। इसी बलिदानी जत्थे में मैं भी था। हम रात को पैसेन्जर से चल कर २६ की सुबह दिल्ली पहुंचे। वहां से काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस द्वारा दोपहर २ बजे लखनऊ के लिए रवाना हुए। हमारे जत्थे के हम ८ लोग अलग डिब्बे में बैठ गये। हम लोगों ने तय कर लिया था कि **हमें चाहे कितनी ही मुसीबतों का सामना करना पड़े, हमें हर हालत में अयोध्या पहुँचना है।**

इसी क्रम में हमने केसरिया दुपट्टा दिल्ली में ही त्याग दिया जिससे कि अधिकतर कार सेवक पकड़े जाते थे। पहले हमने मुरादाबाद तक का टिकट लिया ताकि पुलिस को शक नहीं हो कि हम लखनऊ होते हुए अयोध्या जा रहे हैं। ज्योंही गाड़ी ने उत्तर प्रदेश की सीमा में प्रवेश किया तो गढ़ मुक्तेश्वर से थोड़ा पहले जंगल में गाड़ी को रोक कर तलाशी ली जाने लगी और दुपट्टा पहने करीब एक हजार कारसेवकों को गाड़ी से नीचे उतार दिया गया । यहीं हमारे दूसरे ६ साथियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में मुरादाबाद स्टेशन पर करीब १००-१५० पुलिस वालों ने कारसेवकों को पकड़ना शुरू किया और उसमें मेरा भी नम्बर आ गया। ईश्वर की कृपा से पुलिस वालों से बच कर मैं अपने पूर्व डिब्बे में आकर बैठ गया।

अयोध्या के लिए पैदल रवाना

गाड़ी आगे चली और बरेली तथा हरदोई में और भी सख्त चैकिंग हुई। लेकिन अब हम सभी ने एक तरकीब अपना ली थी। ज्योंही गाड़ी धीरे होती हम प्लेटफार्म की विपरीत दिशा में उतर जाते और जब गाड़ी रवाना होती तो वापस चढ़ जाते। इस तरह पुलिस की आंखों में धूल झोंकते हम लखनऊ की तरफ बढ़े जा रहे थे। मुरादाबाद निकलने के पश्चात् हमने टिकट लखनऊ तक का करवा लिया था। हमें ज्ञात हो चुका था कि लखनऊ जंक्शन पर तगड़ी चैकिंग है और वहां से बचना बहुत मुश्किल है अतः हमने लखनऊ से करीब ४-५ किलोमीटर पहले रात्रि २ बजे गाड़ी को चैन खींचकर रोक लिया और सभी आठों साथी भाग खड़े हुए।

चिनहट में हम सबने बैठकर विचार किया कि आगे की सब बसें,ट्रेनें बन्द हैं तथा हम अपने लक्ष्य तक कैसे पहुंच सकते हैं, **तो हमने पैदल ही अपनी यात्रा तय करने की सोची जो निश्चित ही दुस्साहसिक कदम था**। चिनहट से अगला शहर बाराबंकी करीब २० कि.मी. दूरी पर था लेकिन इस मार्ग पर पुलिस बैरियर कई जगह बने हुए थे। इसलिए बजाय एक साथ टोली बनाकर चलने के हमने २००-३०० गज की दूरी पर अकेले अलग-अलग चलने का क्रम बनाया ताकि पुलिस को शक न हो सके और ज्यों ही पुलिस का बैरियर हमें सड़क पर दिखता हम बगल के खेत में होकर बैरियर के आगे निकल जाते थे। बाराबंकी पहुंचने पर हम सभी **कैलाश आश्रम** में पहुंचे और वहां अन्दर खड़े एक शुभ्र वेशधारी महाशय को प्रणाम कर हमने अपनी समस्या बताई। उन्होंने कारसेवक का परिचय पत्र देखकर अपनी तसल्ली की तथा हमारे भोजन व विश्राम की व्यवस्था की।

बाराबंकी से आगे का रास्ता हमने बजाय सड़क के रेलवे लाइन के सहारे चलकर तय करने की सोची क्योंकि यह रास्ता अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित था। स्थिति यह थी कि रेल्वे लाइन के दोनों तरफ कोई पगडंडी नहीं थी और इस कारण हमें रोड़ी पर ही चलने को मजबूर होना पड़ा जो समतल नहीं होने के कारण चलना बड़ा कष्टप्रद था।

४६ साइकिलें

लगभग १० बजे एक गांव के रेल्वे फाटक के पास चाय आदि की दूकान दिखी। हम लोग वहां पर गये तो पता चला कि चाय बनाने वाला तथा अन्य जो ४-५ व्यक्ति वहां खड़े थे सभी मुसलमान हैं। हम लोगों को बड़े सम्मानजनक तरीके से उन मुस्लिम बन्धुओं ने चाय पानी पिलाया तथा पैसे भी नहीं देने दिये तथा अपने स्थानीय कार्यकर्त्ता के साथ गांव के आश्रम में भिजवा दिया, जहां २-३ संत रहते थे। उन संतों ने स्वयं भोजन बनाकर बड़े प्रेम से हम लोगों को दोपहर का भोजन करवाया। यह गांव था **करिमुल्लापुर** । वहां से खेतों के रास्ते छोटे-छोटे कई गांवों में होते हुए रात्रि को एटोरा गांव में पहुंचे।

दोपहर को हम मंझोला गांव में पहुंचे तो देखा कि यहां भी वो

ही स्थिति । दोपहर का भोजन कर कुछ विश्राम किया तो सभी के पैरों ने जवाब दे दिया। उस समय वहां ४६ कार सेवक हो चुके थे और कोई भी चलने की स्थिति में नहीं था। अगला स्थान सूजागंज लगभग ३० कि.मी. था। हमें सकते में डालते हुए वहां के गांव वालों ने आधा घंटे में ४६ साइकिलों तथा साइकिल सवारों की व्यवस्था कर दी हमें सूजागंज छोड़ने के लिए। इतनी दूर ये लोग साइकिल चलाकर हमें छोड़कर वापिस अपने गांव आये। **हिन्दुत्व की ऐसी जागृति के कारण ही हम लोगों में उत्साह का संचार हो रहा था ।** हम लोग जो २ कि.मी. प्रतिदिन नहीं चलते थे वो ५० कि.मी. प्रतिदिन चले और वह भी लगातार ५ दिन तक ।

सूजागंज में शाम की चाय लेकर करीब रात्रि ८.०० बजे **राम नगर** के लिए रवाना हुए। वहां पहुंचते-पहुंचते हमें रात्रि के १२ बज गये। वहां के कार्यकर्ता इस समय तक लगभग १०० कारसेवकों को भोजन कराकर सुला चुके थे कि हम लोग पहुंच गये। फिर भी उन लोगों ने तपने के लिए आग जलाई , चाय पिलाई और भोजन कराकर हम लोगों के सोने की व्यवस्था की। इस तरह उन्हें रात्रि का करीब १.३० बज गया। सुबह हम उठे तो फिर वही कार्यकर्ता चाय लेकर हाजिर थे।

कारसेवा की खुशी

अक्टूबर की ३० तारीख हो चुकी थी और हम अयोध्या नहीं पहुंच सके थे । इस बात का हमें बेहद दुःख था। रामनगर से सुबह रवाना होकर दोपहर में **दिनकरपुर** पहुंचे जहां पाण्डे जी के यहां भोजन व्यवस्था थी। रास्ते में गांवों में जगह-जगह वो ही आदर सत्कार। लोग यह कहते थे, कि क्या करें भैया हमारे राज्य में ऐसा पापी मुख्यमंत्री हुआ है जो आप लोगों को इतनी तकलीफ दे रहा है। हम आपका सत्कार करके पापों का प्रायश्चित कर रहे हैं। दिनकरपुर पहुंचते ही मेरी हालत बिगड़ गई। बुखार-जुखाम हो गया तथा पैरों में मोटे-मोटे छाले पड़ गये। चलने की स्थिति बिल्कुल नहीं रही। दवाई लेकर वहां कुछ विश्राम किया और फिर कुछ चावल दाल खाया। उस समय दिनकरपुर में लगभग ६० कारसेवकों का भोजन था।

दोपहर के रेडियो समाचार सुने तो हम लोगों का मन उदास हो गया कि आज सुबह कारसेवा प्रारम्भ नहीं हो सकी। लेकिन करीब ४ बजे दिनकरपुर से रवाना होकर ज्योंही सड़क पर आये **तो प्रेस की एक गाड़ी से कारसेवा प्रारम्भ के समाचार जानकर हम लोग खुशी से झूम उठे। चारों तरफ सड़क पर जय श्रीराम के घोष लग रहे थे।** इस उत्साह के नये संचार ने मेरा बुखार व पैरों का दर्द गायब कर दिया और हम तेज गति से आगे बढ़ने लगे। रात्रि को हम **सुचिन्तगंज बाजार** पहुंचे। वहां लगभग डेढ़-दो सौ कारसेवक पूर्व में आये हुए थे और हम ६० कार सेवक और पहुंच गये। वहां दो होटल वालों ने अपनी तरफ से लंगर चला रखा था। एक परचूनी के दूकानदार के बारे में लोग बता रहे थे, कि वैसे तो बड़ा कंजूस है लेकिन अभी उसने कह रखा है कि कारसेवकों के भोजन के लिए जो सामान, जितना चाहिए उसके यहां से ले जायें।

अयोध्या के दर्शन

सुबह चाय नाश्ता करके हम लोगों ने अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। इस क्रम में मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि *प्रत्येक गांव वालों ने अगले गांव तक रास्ता बताने की दृष्टि से कोई न कोई व्यवस्था कर रखी थी,साथ ही वे चारों तरफ की ताजा जानकारी रखते थे ताकि कारसेवक पकड़े ना जा सकें। वहां के स्थानीय लोगों के इतने प्रबल सहयोग और प्रेम के कारण ही हम अयोध्या पहुंच सके।* जयपुर से साथ में रखी हुई सूखी खाद्य सामग्री उपयोग में ही नहीं आई क्योंकि आगे से आगे व्यवस्था तैयार रहती थी और वह व्यवस्था कई दिनों से निर्बाध रुप से चल रही थी। सुचितागंज बाजार से रवाना होकर हम पंडितपुर गांव में पहुंचे। चूंकि अभी सुबह ९ ही बजे थे अतः वहां से सभी ने भोजन के पैकिट साथ लिये क्योंकि आगे नहर के किनारे चलना था जहां भोजन व्यवस्था नहीं थी। रास्ते में दिन का भोजन किया। इस तरह ५ दिन में लगभग २५० कि.मी. पैदल चलकर शाम होते-होते हम अयोध्या पहुंच

राम से बढ़ कर रामभक्त

प्रत्येक गांव के लोग पलक-पाँवड़े बिछाये कारसेवकों की टोली का इन्तजार करते थे और ज्योंही कोई टोली गांव के अन्दर पहुंचती चारों तरफ ''जयश्रीराम, जयश्रीराम'' के घोष लगने शुरू हो जाते। लगभग हर गांव के बीच पेड़ों की छांव में ५-१० खाट बिछी रहती थी। जहां कारसेवक बैठकर अपने पसीने सुखाते फिर उन्हें कुछ मीठा व पानी दिया जाता। कई जगह चावल की खील व चीनी खाने को मिलती। ज्योंही हम **एटोरा** गांव में घुसे कुछ लोग हमें बड़े प्रेम से उस स्थल पर ले गये जहां कारसेवकों की व्यवस्था थी। रात हो चुकी थी और बिजली नहीं थी, तो उन्होंने पेट्रोमेक्स का प्रबन्ध किया और फिर तुरन्त नमक राई मिला गरम पानी भरकर तसलों में ले आये पैरों को धोने के लिए । उन्हें पता था कि ये लोग काफी थके हुए हैं और इससे उनकी थकान कुछ दूर होगी और इस दौरान जो भाव वो लोग व्यक्त कर रहे थे हम लोग शायद ही उसके काबिल हों। **वे कह रहे थे कि राम से बढ़कर हमारे लिए रामभक्त हैं।** आप लोग अपनी जान को जोखिम में डालकर इतने कष्ट सहते हुए आ रहे हैं तो क्या हम इस लायक भी नहीं हैं। पैरों को सेकने के लिए आग जलाई गई और फिर **वहां के ही एक व्यक्ति ने हमारी टोली के कई लोगों के पैरों में सरसों के तेल की, मालिश की। सब कुछ अद्‌भुत था।** ऐसा दृश्य मैंने अपने जीवन में पहली बार देखा। तुरंत ही गर्म चाय की व्यवस्था की गई और फिर वहां के ही प्रधानाध्यापक के यहां भोजन की व्यवस्था हुई। सोने के लिए अन्य सुरक्षित स्थान को भेजा गया। सुबह उठकर दैनिक कार्य आदि से निवृत हो चाय लेकर गांव वालों से विदाई लेते हुए आगे रवाना हुए।

गये। अयोध्या के अंदर पहुंचने में भी उत्तरप्रदेश पुलिस ने सहयोग किया।

अयोध्या में पहुंचते ही लगा मानो **राम की नगरी** कारसेवकों का सत्कार करने के लिए उमड़ पड़ी हो। जगह-जगह चाय भोजन की व्यवस्था । चारों तरफ कारसेवक ही कारसेवक नजर आ रहे थे। रात्रि को भोजन कर एक आश्रम में विश्राम किया तथा ३० तारीख की कार्रवाई की जानकारी ली। १ नवम्बर को सुबह मनीराम छावनी में कई लोगों के भाषण प्रवचन का श्रवण किया। ५ दिन पश्चात् दोपहर में सरयू नदी के पवित्र जल में स्नान कर अपनी थकान मिटाई। जयपुर से आये समस्त कार सेवक **गोला घाट** रुके हुए थे उनके पास जाकर भोजन कर वहीं विश्राम किया। इसी बीच जयपुर मंदिर जानकी घाट में मेरे श्रद्धेय गुरुजी से मिलने गया। उन्हें गर्व हुआ कि उनका शिष्य जन्मभूमि की कारसेवा के लिये आया है। लेकिन २ नवम्बर की जो घटना मैंने अपनी आंखों से देखी वह ऐसा काला पृष्ठ है, मानो मुलायम सिंह ने जनरल डायर, बाबर व औरंगजेब को भी बहुत पीछे छोड़ दिया हो। इतना क्रूर कोई हो भी सकता है ऐसा इतिहास ने सोचा भी न होगा।

काला अध्याय

२ नवम्बर को बिल्कुल स्पष्ट एवं सीधी साधी योजना थी कि दो जुलूस बनाकर अलग अलग रास्तों से जन्मभूमि की तरफ जायेंगे। निहत्थे रामधुनी करते हुए जाना है। (यदि किसी के हाथ में छोटी लकड़ी भी थी तो वह ले ली गयी थी) जहां जुलूस को रोक दें वहीं सबको बैठ जाना है और रामधुनी करते रहना है। यह सब तक तक करते रहना है जब तक कि सरकार हमें जन्मभूमि के दर्शनों को नहीं जाने दे। सावधानी के तौर पर सब गीला कपड़ा अपने साथ रखें ताकि यदि आंसू गैस छोड़ी जाये तो आंखों पर लगा लें। हम सभी लोग **हनुमान गढ़ी** की तरफ जाने वाले जुलूस में थे। दूसरा जुलूस साध्वी उमा भारती के नेतृत्व में गया था। प्रत्येक तरफ के जुलूस में लगभग २० हजार कारसेवक थे। लगभग ९.४५ पर हमारा जुलूस जन्मभूमि से लगभग डेढ़ किलोमीटर पहले पुलिस ने यह कहकर रोक लिया कि आप आगे नहीं जा सकते। तो सब लोग बैठकर रामधुनी करने लगे। किसी प्रकार का कोई नारा नहीं लगाया गया और ना ही आगे बढ़ने की जबरदस्ती की गई और ना ही पुलिस पर पत्थर फेंके गये।

बैठते ही तुरन्त पुलिस ने आंसू गैस के कई गोले एक साथ छोड़े, लाठियां बरसानी शुरु कर दी और साथ ही एल.एम. जी. तथा स्टेनगन से गोलियां बरसानी शुरु कर दी। यह क्या और क्यों हुआ , किसी के समझ में नहीं आया। मुलायम सिंह सरकार ने ३० तारीख की अपनी पराजय का बदला लेने की पहले ही ठान रखी थी और इसी कारण पुलिस वेश में अपने कुछ पेशेवर गुंडे तथा अन्य सम्प्रदाय के क्रूर पुलिस वालों को उन्होंने मशीनगनें देकर मकानों की छतों पर तैनात कर दिया था। उत्तर प्रदेश की पुलिस से ३० अक्तूबर को दिये गये सहयोग के कारण पहले ही या तो बन्दूकें ले ली गयी थी या बन्दूकें बिना गोलियों के दी थी। इस प्रकार उन्होंने भीषण नरसंहार कर कार सेवकों के नेक इरादों को पस्त करने की सोच रखी थी। थोड़ी देर में चारों तरफ भगदड़ मच गई और गोलियों की दनदनाती आवाज अयोध्या नगरी का हृदय विदीर्ण करने लगी। सारे नियम कायदों को चकनाचूर करते हुए इन पुलिस वालों ने बिना आदेश शांत जुलूस पर गोलीबारी शुरु कर दी। क्रूरता का यह नंगा नाच न सिर्फ १०-२० मिनिट, बल्कि पौने दो घंटे तक चलता रहा। सेना भी युद्ध करते समय दुश्मन देश के भागते सैनिकों को या घायलों को या मारे हुए को उठाने वालों को गोली नहीं मारती लेकिन यहां तो भागते हुए कारसेवकों को भून दिया गया। मरे हुए को उठाने वालों को मार दिया गया। इसी कारण शुरू में जिन ८-१० कारसेवकों की लाशों को ला सके वही मिलीं, बाकी जितने जीवन लाशों में बदले, उनकी टांग पकड़कर खेंचकर ट्रक में डालकर गायब कर दिया गया, जिनका आज तक पता नहीं चला। इतने से ही उनके दिल ठंडे नहीं हुए तो घरों में छिपे हुए कारसेवकों को निकाल- निकाल कर मार डाला और जिन लोगों ने छिपा रखा था उन्हें भी मारा पीटा, बेइज्जत कर कीमती सामान ले गये व अन्य सामान बिखेर दिया।

इसी भगदड़ में हमारी टोली के **एक साथी कार सेवक श्री रामावतार सिंघल** एक मकान में घुस कर पानी का बोरिंग चला रहे थे कि लोग आंसू गैस से राहत पाने के लिए पानी ले लें । वे इतने सेवाभावी थे कि रास्ते में हम लोगों के पास जितना सामान था वे ही लादे रहे । उनको कहा गया कि यहां से दूसरे मकान में चले जायें क्योंकि पुलिस यहां आ सकती है, लेकिन अपने स्वभाव के कारण पानी मांगते लोगों को छोड़ के जा न सके और वहीं रहे। करीब ११.४५ बजे गोलीबारी थमी और सबको अपने-अपने स्थानों पर पहुंचने का समय दिया गया। सब लोग जहां रुके थे पहुंचे और अपने साथियों को तलाशने लगे। रामावतार के नहीं आने के कारण हमें चिंता हुई। शाम तक उन्हें पूरी अयोध्या में ढूंढा लेकिन मिले नहीं । दूसरे दिन सुबह उठकर अयोध्या के दोनों अस्पतालों में तलाशा । जानकारी करने पर पता चला कि कुछ घायल फैजाबाद जिला अस्पताल ले जाये गये हैं। वहां भी वो नहीं मिले। लखनऊ जाकर अस्पतालों को खोजा तो हमारा संशय व दुःख अत्यधिक बढ़ गया। वहीं राजस्थान पत्रिका के संवाददाता श्री गोपाल शर्मा मिले, जिन्हें मैंने श्री रामावतार के न मिलने की सूचना दी। बाद में पता चला कि वे राम के काम आ गये हैं।

अपने साथियों के बलिदान होने से हमें बेहद दुःख था लेकिन किसी तरह का डर या घबराहट किसी के दिल में नहीं थी, बल्कि इस अत्याचार का बदला लेने के लिए लोगों की भुजायें फड़क रही थीं। सभी के मुंह से एक ही बात निकलती थी कि हमें हथियार मुहैया कराये जायें। हम इन्हें सबक सिखा देंगे। ❑

१६१, पृथ्वीराज नगर, दुर्गापुरा, जयपुर

चौधरी गयाप्रसाद जगमोहन लाल

राम कुमार चौधरी

शुभ दीपावली

9314689224
05647-243504

शुद्ध सरसों के तेल एवं खल के निर्माता एवं विक्रेता

आयल मिल, लुहार बाजार बाड़ी, जिला-धौलपुर (राजस्थान)

विज्ञापन सूर्या लाइट्स
पूर्ण पृष्ठ

ऐतिहासिक कार-सेवा के अनुभव

अहिंसक कारसेवकों की हत्याएं

❑ डॉ. कैलाश कुमार

जयपुर के डॉ. कैलाश कुमार शिवलानी १९९० की कारसेवा में शामिल हुए थे। उत्तर प्रदेश पुलिस को चकमा देते हुए कई स्थानों पर पैदल चलकर वे अयोध्या पहुँचे । उनके सामने ही अहिंसक कारसेवकों की तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह के आदेश पर गोलियां चलाकर हत्याएं की गई । डॉ. कैलाश कुमार शिवलानी के शब्दों में ही उनका अनुभव यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

दिनांक २१ अक्टूबर १९९० के दिन शास्त्री नगर के स्वामी सर्वानन्द हॉल में अयोध्या यात्रा को जाने वाले २५० स्वयंसेवक एवं अन्य गणमान्य बन्धु एकत्रित हुए, जिसमें मेरा जाना भी एक सौभाग्य था। प्रतिज्ञा एवं विदाई समारोह के बाद जुलूस के रूप में स्टेशन स्थित हनुमान जी के मंदिर में एकत्रित हुए। दोपहर का भोजन करने के पश्चात २:४० बजे मरुधर एक्सप्रेस गाड़ी में सवार होने के लिए स्टेशन पहुँचे, जहाँ कारसेवकों के रिश्तेदार, समाज के विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता इकट्ठे थे । **जय श्री राम** के घोष लगाते हुए हम सभी को रवाना किया गया । हमारे साथ तब के राजस्थान के संघचालक श्री ओम प्रकाश आर्य भी थे। शाम को ७:३० बजे बांदीकुई पहुँचने पर वहीं के स्वयंसेवकों द्वारा स्वागत किया गया एवं भोजन के पैकेट वितरित किये गये। उसके पश्चात भरतपुर में भी हमारा स्वागत सत्कार किया गया। रात्रि करीब १०:०० बजे हमारी गाड़ी अछनेरा पहुँची जो राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश की सीमा में आता है। हमारी गाड़ी काफी देर तक खड़ी रही। आखिरकार मालूम हुआ कि जोधपुर से आई हुई गाड़ी के कारसेवकों को रोक दिया गया है एवं उन्हें गिरफ्तार करके पुलिस ले गई। हमने भी वहीं अछनेरा स्टेशन पर पटरियों पर डेरा जमा लिया और आने जाने वाली गाड़ियों का मार्ग अवरुद्ध कर दिया।

जेल से कूद कर भागे

रात्रि१२:०० बजे आगरा से पुलिस की गाड़ियां और ट्रक स्टेशन आ पहुँचे । हम सभी को डंडों से मारकर ट्रकों में भर दिया गया और आगरा की जेल में ले जाने लगे। यहीं से उत्तरप्रदेश सरकार एवं मुलायम सिंह यादव की बर्बरता का दौर शुरू हुआ । हम सभी कारसेवकों को अस्थाई रूप से बनाई गई आगरा की स्टेडियम जेल पर लेकर गये और वहाँ कैद कर दिया गया। टहलते-टहलते स्टेडियम में जमीन से १५ फुट की ऊँचाई पर बनी गुमटी पर चढ़कर मैने नजारा देखा तो गुमटी के पीछे दीवार के सहारे एक ३ फुट चौड़ा और ४ फुट गहरा नाला था। नीचे उतरकर मैंने अन्य स्वयंसेवकों से चर्चा की तो १४ कारसेवक मेरे पीछे आने को तैयार हो गये । सभी कारसेवक ऊपर चढ़कर पीछे दीवार से एक-एक कर कूदे। कई को चोटिल होना पड़ा।

छुपते-छुपाते हमें आगे का रास्ता तय करना था। लेकिन हम किसी को पूछे बगैर आगे बढ़ते गये, जमुना किनारे पहुँचकर चाय पी और ताजमहल के लिए रवाना हो गये। सुबह १० बजे हम ताजमहल पहुँचे। वहां घूमते हुए १२:०० बजे दोपहर बी.बी.सी के समाचारों में सुनाई पड़ा कि बिहार में लालकृष्ण आडवानी को गिरफ्तार कर लिया गया है। आगरा से अयोध्या जाने के लिए पहले हमें टूण्डला जाना था। टूण्डला के लिये बस पकड़ने हम बस स्टेण्ड पहुँचे लेकिन वहां हमें मालूम पड़ा कि बसों को रोककर कारसेवकों की तलाशी ली जा रही है। पूर्ण सावधान रहने का निश्चित कर हम टूण्डला स्टेशन के लिए बस द्वारा रवाना हुए। रास्ते में हमारी बस को रोककर पूछताछ की गई। हमने अपनी सारी निशानियाँ छुपा दी थी और उन्हें कोई संदेह नहीं हुआ। टूण्डला में मुरई एक्सप्रेस पकड़ कर सुबह ७:०० बजे हम लखनऊ पहुँचे। लखनऊ में अखबारों में पढ़ने को मिला कि जयपुर के शास्त्री नगर के कारसेवकों का जत्था जेल से फरार हो गया ।

लखनऊ से पैदल रवाना

लखनऊ में धारा १४४ लागू कर दी गई थी तथा अयोध्या जाने के सभी मार्ग बन्द थे अतः हमने लखनऊ से अयोध्या के लिए पैदल मार्च शुरु कर दिया। अपने आपको छुपते छुपाते, गली-गली,ढाणी-ढाणी होते हुए अनेक गांवों से होकर आगे बढ़ते रहे। मार्ग में **गांव वालों ने हमारा आदर सत्कार किया और भोजन पानी की व्यवस्था की और हमें आगे बढ़ने के दिशा-निर्देश भी दिये।** राज्य सरकार का हेलीकॉप्टर ऊपर आसमान से हमारी मौजूदगी के बारे में प्रशासन को सूचित करता रहा फिर भी हम खेतों में गन्ने की फसल के बीच अपने आपको छुपाते रहे और आगे बढ़ते रहे। मेरे पैर बहुत सूज गये थे और दोनों पैरों में छाले हो गये थे , और चलना मुश्किल हो रहा था , फिर भी लंगडाते हुए कन्धों पर सामान का बोझा उठाकर आगे बढ़ते ही गये।

लखनऊ से अयोध्या की दूरी १३७ कि.मी. है। हमें अयोध्या पहुँचने में एक सप्ताह लग गया और हम ३० अक्टूबर की सुबह अयोध्या की सीमा में सकुशल पहुँच गये। वहाँ हमें कई बेरीकेड्स एंव मार्ग अवरोधकों से सामना करना पड़ा। अन्ततः हम सरयू घाट के पास पहुँच गये वहां विश्व हिन्दू परिषद् ने सारी व्यवस्था की जिम्मेदारी ली हुई थी। हमें **रामसखी मंदिर** में स्थान की सूचना देकर वहां रुकवाया गया । ३० अक्तूबर की कार-सेवा में भाग लेने का अवसर हमें नहीं मिल सका। हमारे जत्थे को २ नवम्बर को कार-सेवा का आदेश मिला था। १ नवम्बर के दिन विशाल जन सभा हुई और राममंदिर के विषय

पर अनेक वक्ताओं ने भाषण दिये ।

२ नवम्बर १९९० को सुबह ७ बजे हमें रामधुनी के साथ रामलला परिसर की तरफ कूच करना था। सभी कारसेवकों को सूचना दी गई कि हमें शांति से रामधुनी करते हुए आगे बढ़ना है । चाहे हमें कितना विरोध सहना पडे, लाठियां खानी पड़े, इससे भी अधिक कष्ट सहना पड़े लेकिन हमें अपनी मर्यादा का पालन करना है ।आंसू गैस से बचाव के लिए हमें चेहरे पर चूना लगाकर एवं गीला तौलिया साथ लेकर आने कि हिदायत दी गई थी।

कारसेवकों पर गोलीबारी

हजारों की संख्या में सभी कारसेवक तयशुदा स्थान पर इकट्ठे हुए। दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, यू.पी., हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर के कारसेवकों के जत्थे बनाये गये और जयघोष के साथ रामधुनी लगाकर बैठे-बैठे हम आगे बड़ने लगे। सबसे आगे हम राजस्थान के कार्यकर्ता ही थे। मिलिट्री एवं पुलिस बल द्वारा लाठियां बरसाई गईं फिर भी हम आगे बढ़ते गये। अब अश्रु गैस के गोले छोड़े गये। इस से कारसेवक तितर बितर होने लगे क्योंकि आंखों में एवं सारे शरीर पर ज्वलनशीलता महसूस होने लगी। इसका असर कम करने के लिये अयोध्या निवासी बचाव के लिए ऊपर से पानी गिराते रहे। अन्त में पुलिस बल को गोली चलाने के निर्देश दिये गये और प्रशासन ने गोलियां दागनी शुरू कर दी। **इसमें सैकड़ों कारसेवकों को जान से हाथ धोना पड़ा और कर्फ्यू लगाकर लाशों को ट्रकों में डालकर सरयू नदी में बहा दिया गया।**

महेन्द्रनाथ अरोड़ा का बलिदान

मेरे ही सामने अयोध्या के अस्पताल में जोधपुर के महेन्द्रनाथ अरोड़ा को लाया गया जिन्हें तीन गोलियाँ लगी हुई थी, एक कोहिनी में, एक पेट में और एक बांये पैर पर। उस समय उनकी श्वासें चल रही थी लेकिन डॉक्टरों के उपचार के बाद भी हम उन्हें बचा नहीं सके। मैं सकते में आ गया। मैंने एक कागज पर जितने भी घायल थे, उनकी सूची बनाई और वह सूची लेकर विश्व हिन्दू परिषद कार्यालय अयोध्या देने के लिए फैजाबाद से एम्बूलेंस में बैठा ।मार्ग में ही पुलिस ने मुझे उतार दिया और पुलिस की गाड़ी में बिठाकर कोतवाली थाने की हवालात में बन्द कर दिया ।

अन्त में रात्रि को १२ बजे पुलिस की बस में हमें फैजाबाद जेल में ले गये और हमें बैरक में डाल दिया गया। वहाँ पहुँचने पर देखा कि सैकड़ों संघ के पदाधिकारी, विश्व हिन्दू परिषद एवं कई अन्य संगठनों से जुड़े कारसेवक वहां पर मौजूद थे। उन कार्यकर्ताओं ने हमारा स्वागत किया और जो भी उनके पास खाने में था, हमें दिया गया ।

८ दिन जेल में रहते हुए कोई सुनवाई नहीं हो रही थी। हमारे साथ डॉ. सीतारमैया जो तमिलनाडु से थे। उनकी बहिन राष्ट्रीय सेविका समिति की पदाधिकारी थी तथा उनकी जमानत लेकर आई थी। लेकिन डॉ. सीतारमैया ने स्वयं की जमानत न करवाकर उन्हें कहा कि मेरे साथ जो आठ लोग और हैं, अगर उनकी भी छूटने की स्थिति हो तो मैं बाहर आ सकता हूँ अन्यथा नहीं । अन्ततः उनकी बहिन ने सभी ९ जनों की जमानत करवाकर जेल से रिहा करवाया।

उसके बाद मैं सीधे अयोध्या पहुँचा जहां हमारा रामसखी मंदिर (सरयू नदी के पास था) में निवास था। वहाँ पहुँचने पर मुझे देखकर सभी आश्चर्य चकित हो उठे। मैंने निर्णय किया कि मैं जयपुर जाते वक्त अपने साथ जो राजस्थान के घायल कारसेवक थे, उनके साथ ही आऊँगा। मेरे साथ घायल अजमेर के अजय नगर निवासी योगेश माथुर और किसान संघ के नन्दलाल जी थे और उनको साथ लेकर हम अन्य कारसेवकों के साथ जयपुर पहुँचे।

जयपुर स्टेशन पर हमारा स्वागत सत्कार हुआ और घर पहुँचने पर मेरे परिजनों की आँखों में खुशी के आंसू थे। ❑

माधव भवन,

बी-४९०-९१ विद्याधर नगर, जयपुर -२३

''सभी प्रकार की त्वरित बैंकिंग सेवाओं एवं सुविधाओं के लिए सैदव तत्पर''

चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि.

ज्योति पर्व दीप मालिका के पावन प्रसंग पर समस्त देशवासियों को बैंक की ओर से हार्दिक बधाई एवं खुशी, स्वस्थ, सशक्त, संस्कारित एवं समृद्ध भारत के लिए शुभकामनाऐं .

पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत वातानुकूलित शाखायें:-
- ☑ चित्तौड़गढ़ 01472-248880, 249394
- ☑ निम्बाहेड़ा 01477-224660
- ☑ चन्देरिया 01472-255033
- ☑ बेगूं 01474-220066

-: शुभेच्छु:-

ऋषभ देव खुराना
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

सीए दिनेश शिशोदिया
संयोजक, दशाब्दी महोत्सव वर्ष

सीए आई.एमसेठिया
अध्यक्ष

डॉ. दामोदरलाल लढ़ा
उपाध्यक्ष

एवं संचालक मण्डल के समस्त सदस्य

Sonu Garg M: 9314162357 — *हार्दिक शुभकामनाओं सहित* — *Pramod Garg* M. 9352535911

SHREE NATHJI STONE IND.
(A Gangsaw Unit)
Specialist in :
Dholpur Sand Stone Slab & Tiles.
E-Mail. promad.garg99@yahoo.com
Factory : 3 K.M. Sarmathura Road, BARI (Dholpur) Raj.

ऐतिहासिक कार-सेवा के अनुभव

शव यात्रा में शामिल होकर पुल पार किया

श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर बनाने के लिये वर्ष १९८९-९० तथा ९२ में कार-सेवा हुई। इनमें पूरे देश के रामभक्त राम का काम करने पहुँचे। पहली कार-सेवा में प्रस्तावित मन्दिर के सिंहद्वार के लिये शिलान्यास हुआ। वर्ष १९९० में तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के चक्रव्यूह को तोड़ कर कार-सेवक विवादित ढांचे तक पहुँचे और उस पर भगवा ध्वज फहरा दिया। कार्तिकी पूर्णिमा के दिन रामभक्तों के नरसंहार की साक्षी भी यह कार-सेवा बनी। दो साल बाद ६ दिसम्बर १९९२ के ऐतिहासिक दिवस पर कार-सेवकों ने भारत के माथे पर चार सौ सालों से लगा कलंक मिटा दिया। इन तीनों कार-सेवा में राजस्थान के भी रामभक्त बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। उनके अनुभव रोमांचक भी हैं और सीख देने वाले भी हैं। कुछ अनुभव यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं-(स.)

राज्यसेवा से १९८३ में सेवा निवृत होने के बाद १९८३ से १९९४ तक विश्व हिन्दू परिषद का संयुक्त महामंत्री का कार्यभार रहा। अतः १९८६ से १९९२ तक ७-८बार अयोध्या जाने का सुअवसर मिला। जब देवोत्थान एकादशी **३० अक्टूबर,१९९०** को अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि जाने का अवसर आया तो उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह की सरकार थी। उन्होंने घोषणा की कि कार सेवक तो क्या परिन्दा भी अयोध्या में प्रवेश नहीं होने दिया जाएगा। तब पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री श्रीशचन्द्र दीक्षित की कार में नाटकीय ढंग से वेश बदल कर श्री अशोक सिंहल अयोध्या पहुंच गये। वहां लाठी चार्ज में उनके सर में भी लाठी लगी। हम २२ अक्टूबर जयपुर से मरुधर में बैठे। दादा भाई, गुप्ता जी आदि को मार्ग में ही गिरफ्तार कर लिया गया पर हम बच गये । अयोध्या गाड़ी नहीं रुकी तो हम बच कर गोंडा स्टेशन पहुंच गये।२३-२४ अक्तूबर को वहाँ रुक कर हम **मनकापुर** पहुँचे। पर वहां पुलिस का जमावड़ा होने के कारण हम एक फार्म हाउस पर रुके। पूज्य प्रकाशनाथ जी महाराज भी हमारे साथ थे। हमें निर्देश था कि २९ अक्टूबर के आस-पास ही अयोध्या पहुंचना है, अतः ४ दिन विश्राम करके सामान कंधे पर डालकर १५ किलोमीटर दूर सरयू नदी के इस पार हम पहुंच गये, जहां राजस्थान के २५ कार्यकर्ता एकत्र हो गये और सरयू पुल पार कर अयोध्या पहुंचने की कोशिश करने लगे। पर वहां ३०० पुलिस सिपाही पुल पर ही खड़े थे। आखिर जब एक शव यात्रा जाने लगी तो उसमें रामनामसत करते १० लोग पुल पार कर गये। उनमें जोधपुर के श्री महेन्द्रनाथ जी अरोड़ा और सेठाराम भी थे। प्रकाशनाथ महाराज और हम दोनों बस में बैठ कर अयोध्या जाने लगे तो हमारी बस को रोक लिया और पुलिस लाठी चार्ज करने लगी। उसमें हरिहर जी की पीठ पर बहुत चोट लगी। हमें जब प्रवेश नहीं करने दिया तो आचार्य जी से दिल्ली बात हुई। उन्होंने सूचित किया श्री महेन्द्रनाथ अरोड़ा, जेठाराम, रामकुमार, शरद कुमार गोलियां लगने के कारण शहीद हो गये। उन्होंने आदेश दिया कि पुलिया से ३ किलोमीटर दूर बसें खड़ी है; उनमें बैठक कर लौट आओ। अतः वहां ३ बसों में सारे राजस्थान के कार्यकर्ता बैठकर लखनऊ पहुंचे । वहां से मरुधर में बैठकर जयपुर पहुंचे । १९९२ में तो अयोध्या में ४-५ दिसम्बर को राजस्थान से १४००० के लगभग कारसेवक पहुंच गये। प्रातः १० बजे तक सभा होती रही पर १२-१ बजे एका-एक कई सैकड़ों कारसेवक ढांचे के ऊपर चढ़ गये और देखते-देखते सायं ४ बजे तक तो सारा ढांचा तोड़कर गिरा दिया। बीच की गुम्बद के स्थान पर लाल कपड़े का तम्बू बनाकर श्रीरामलला को बिठा भी दिया। ❑

जयबहादुर सिंह शेखावत, जयपुर

रामजी ही रक्षा करेंगे

श्री रामजन्मभूमि पर मंदिर निर्माण हेतु २५ अक्तूबर १९९० को अजमेर से कारसेवकों का पहला जत्था जिसमें १३५ कारसेवक थे प्रस्थान किया। दिन में ३ बजे अजमेर-दिल्ली पैसेंजर गाड़ी से हमने प्रस्थान किया।

मेरी माताजी मुझे विदा करने स्टेशन पर आई। तब कुछ लोगों ने प्रश्न किया कि आप अपने लड़के को इन परिस्थितियों में कारसेवा के लिये अयोध्या क्यों भेज रही हो? ऐसी मां जो आज मौजूद नहीं है, परन्तु उनका साहस! माताजी का जवाब था, **रामजी के काम से जा रहे हैं वे ही रक्षा करेंगे। और कोई अनहोनी होगी तो भी श्रीराम के काम आयेंगे।**

१६ अक्टूबर को प्रातः ७ बजे गाड़ी सराय रोहिल्ला स्टेशन पहुँची, जहाँ अजमेर के सांसद श्री रासासिंह रावत भी मौजूद थे। कारसेवकों को कहाँ पहुँचना है इस प्रकार का दिशा निर्देश दिया तथा मुझे संघ कार्यालय भेज दिया । वहाँ माननीय सोहन सिंह जी ने आगे की यात्रा व गाड़ी वगैरह की जानकारी दी। दिल्ली स्टेशन से गाड़ी करीब ४ बजे रवाना हुई। गाड़ी हर स्टेशन पर रुकती हुई करीब ६ बजे मुरादाबाद पहुँची। हमारे इस जत्थे में रामगंज बालाजी मंदिर के पुजारी भी थे। उनकी तरफ पुलिस के सिपाही संदेह की दृष्टि से देख रहे थे तथा उनसे पूछताछ शुरु की और गाड़ी से उतरने को कहा। बाबाजी ने डमरु बजाया और सभी कारसेवक गाड़ी से उतर गये।

सभी कारसेवकों को मुसाफिर खाने ले जाकर गिरफ्तार किया गया तथा उनकी सूची बनाई गई। स्थानीय कार्यकर्ताओं को कारसेवकों की गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही चाय नाश्ता, भोजन की व्यवस्था की गई।

दिनांक २७ अक्तूबर को प्रातः ८ बजे पुलिस इन्सपेक्टर व कुछ सिपाही मुसाफिर खाने आये जहाँ हम लोगों को ठहरा रखा था और गाड़ियों में बैठकर उनके साथ चलने का आग्रह करने लगे। मैंने उनसे कहा कि हम लोग गाड़ियों में नहीं जायेंगे पैदल ही चलेंगे जहाँ भी चलना है। तब उन्होंने कुछ पुलिस वालों की और व्यवस्था की जिसमें करीब १ घंटा लग गया। इसी दौरान एक सवारी गाड़ी आई जिसमें करीब २०० कारसेवक थे, उन सभी को पुलिस ने घेराबंदी कर गिरफ्तार किया तथा उनको ठहराने के स्थान पर ले जाने लगे तब हम भी उसी जत्थे में सम्मिलित हो गये।

नारे लगाते हुए करीब एक किलोमीटर चलने के बाद एक स्कूल भवन आया जहाँ हजारों की संख्या में कारसेवक थे तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं की तरफ से चाय नाश्ता, भोजन आदि की व्यवस्था की हुई थी। मैंने अपने साथियों से कहा कि यहाँ पर कोई निगरानी तो है नहीं और हमें आगे बढ़ना है इसलिये ४-४ की टोली में निकल कर स्टेशन के सामने धर्मशाला में पहुँचते जाते। धर्मशाला से कारसेवकों को स्थानीय लोग स्टेशन पार करने के बाद सिग्नल पर गाड़ी रुकवा कर बैठा रहे थे। अन्त में सभी कारसेवकों को आगे रवाना किया। तीन कारसेवक, एक मैं, एक गोपाल सेन और प्रेम वैष्णव रात को वहीं धर्मशाला में ठहरे।

दिनांक २९ अक्टूबर को प्रातः प्रेम वैष्णव को अजमेर भेज दिया और गोपाल सेन तथा मैं मुरादाबाद से बस पकड़ कर लखनऊ के लिये रवाना हुए। प्रत्येक गाँव में पुलिस द्वारा चैकिंग की जा रही थी। और करीब २ बजे हम दोनों को एक स्थान पर उतार दिया जहाँ ३०-३५ कारसेवक पहले से ही मौजूद थे। वहाँ पर हमारा नाम पता लिखने के बाद एक गाड़ी की व्यवस्था कर सबको बरेली भेजा गया। बरेली पुलिस स्टेशन पर हजारों कारसेवक बैठे थे जो कि मस्ती भरे गीत गा रहे थे।

वहाँ से चुपचाप निकलकर दिनांक २९ अक्टूबर को रात्रि लखनऊ के लिये गाड़ी पकड़ी। ३० अक्टूबर को प्रातः लखनऊ पहुँचे मंदिर में गए जहाँ पर कारसेवक बड़ी संख्या में मौजूद थे। उसी समय कुछ झगड़े का समाचार मिला तथा लखनऊ में कर्फ्यू लगा दिया गया। हमें एक आर्य समाज भवन में रोक लिया गया। रात्रि को वहीं रुक कर प्रातः ४ बजे निकलने की योजना बनाई परन्तु कर्फ्यू के कारण निकल नहीं सके। वहाँ कार्यकर्ताओं के सहयोग से संघ कार्यालय गया और ३० अक्टूबर को करीब २ बजे समाचार मिला कि श्री अशोक जी सिंहल अयोध्या पहुँच चुके हैं तथा बेरीकेड तोड़ कर आगे बढ़ रहे हैं। उनके सिर में चोट भी आई है। हम लोग दूसरे दिन अयोध्या पहुँचे जहाँ,अजमेर का कारसेवक नाथू लाल घायल अवस्था में मिला। उसको लेकर २ नवम्बर को अजमेर के लिये प्रस्थान किया। ❑

सर्वेश्वर अग्रवाल, *अजमेर*

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. शैलजा जैन(निदेशक)

शोहित अस्पताल

डी.सी.एम बस स्टेन्ड, महात्मा गाँधी नगर,
अजमेर रोड, जयपुर ३०२०२१

हटा दिया अपमान का ढांचा

कोटा से चली रेल में गंगापुर सिटी से ५१ कारसेवकों की टोली सवार हुई। मुलायम सिंह की सरकार ने जगह-जगह पर अवरोधक एवं पुलिस सुरक्षा बल लगा रखे थे। जिस रेल से हम कारसेवक जा रहे थे, उस रेल को अयोध्या के पास के किसी स्टेशन पर बिना रोके ड्राईवर तेज गति से गाड़ी दौड़ाये जा रहा था। हम सबने सोचा पता नहीं कहाँ पहुँचेंगे? लेकिन रोकें कैसे? उसमें जयपुर के भी कुछ कारसेवक सवार थे। विचार विमर्श कर हमने निर्णय किया कि इस पार या उस पार और गाड़ी के होज पाइप को तोड़ने लगे। रेलगाड़ी रुकते ही हजारों कारसेवक गाड़ी से कूदकर इधर-उधर भागने लगे। रेलगाड़ी में सवार पुलिस दल ने हम पर गोली चलाई लेकिन एक के भी गोली नहीं लगी। परन्तु अफरा-तफरी और कूदने-भागने की जल्दी में कुछ कारसेवक घायल हो गये। हम कारसेवकों ने अब पैदल-पैदल चावल (धान) के खेतों में भरे पानी में से निकलते हुये गतंव्य स्थान की ओर बढ़ना शुरु किया। कहीं पैदल, कहीं ट्रक से छुपते-छुपाते ग्रामवासियों के सहयोग से अयोध्या के निकट पहुँच ही गये। सब छोटी-छोटी टुकड़ियों में बँट गये थे, बिछुड़ गये थे परन्तु मन में लगन थी पहुँचना है। इसलिये सब पहुँचे।

तीन दिसम्बर १९९२ को गंगापुर के कारसेवकों की टोली को सह जिला संघचालक मा. राधामोहन जी ने तिलक लगाकर विदाई दी। गंगापुर के श्री सीताराम जी के मंदिर में संक्षिप्त सभा में कारसेवकों का जोश देखते बनता था।

इस बार की कार सेवा में हमें लगता था कि १९९० में जो खून की नदियां मुलायम सिंह ने बहाई थी हमने उसका बदला ले लिया। सभी प्रसन्न थे और गुम्बदों का मलबा हटाने में बिना खाये पीये दो दिन तक जुटे रहे।

गंगापुर लौटे तो वहाँ के अवशेष गंगापुर वासियों को दिखाये जिन्हें हम साथ ले आये थे। थोड़ा बहुत मन को सन्तोष हुआ।

आचार्य परमानंद, *गंगापुर सिटी*

अयोध्या में लघु भारत के दर्शन

सन् १९९० में देवोत्थान एकादशी के दिन सत्ता के मद में डूबे शासकों का दंभ तोड़ते हुए रामभक्तों ने कारसेवा करके अपने संकल्प को पूरा किया और श्रीरामजन्मस्थान पर बने ढांचे के गुंबद पर भगवा लहरा दिया। इस घटना ने देश ही नहीं बल्कि विश्व भर में रहने वाले करोड़ों हिन्दुओं को स्वाभिमान से भर दिया।

३० नवंबर १९९२ को हमारा जत्था रवाना होना था। चूंकि यह मेरा जन्मदिन भी है इसलिए मेरे परिवारवालों ने तिलक लगाकर मुझे रवाना किया। सायं ६ बजे अवध एक्सप्रेस से हमारा जत्था हिण्डौन से अयोध्या के लिए रवाना हुआ। यह गाड़ी मुंबई,बड़ौदा,कोटा होकर आती है इसलिए बड़ी संख्या में गुजरात और महाराष्ट्र के रामभक्त इस गाड़ी में पहले से ही मौजूद थे। अलग-अलग टोलियों में देश-भक्ति के गीत तथा भजन गाए जा रहे थे। सभी की भाषा,भूषा, पहनावा, रंग-रूप, आयु चाहे अलग-अलग हों, पर शरीर में जोश और चेहरों पर उत्साह सबमें एक जैसा था। गाते बजाते, नारे लगाते रात के सफर के निकलने का पता ही नहीं चला।

अगले दिन प्रातः गाड़ी कानपुर स्टेशन पर पहुंची। वहां आडवाणी जी के भाषण के बाद हजारों कारसेवकों की भीड़ के साथ हम भी एक यात्री गाड़ी से अयोध्या रवाना हो गए। अयोध्या में हमारा आवास **श्री गुरु गोबिंदसिंह** नगर में था। वहां की व्यवस्थाएं अद्‌भुत थी। लाखों रामभक्त अयोध्या पहुंच चुके थे और पहुंच रहे थे। इतनी संख्या के बावजूद नित्यकर्म, भोजन,भ्रमण, दर्शन में किसी को कोई कठिनाई नहीं हो रही थी। सब लोग न केवल अनुशासन में थे बल्कि वहां के कार्यकर्ताओं को सहयोग भी कर रहे थे।

अलग-अलग प्रांतों से आए लोगों के आने से अयोध्या लघु भारत के रूप में दृष्टिगत हो रहा था। अलग-अलग भाषाओं में नारे लगाए जाते थे। लेकिन उनका भाव यही था कि 'सौगंध राम की खाते हैं हम मंदिर भव्य बनाएंगे।'

हम लोगों ने ५ दिन तक अयोध्या की गली-गली में मंदिरों के दर्शन किए, सरयू में स्नान कर पुण्य लाभ लिया। सुरक्षा बलों से घिरे श्री रामलला के दर्शन भी किए। श्री रामलला एक ऐसे ढांचे में विराजमान थे जो मंदिर को तोड़कर बनाया हुआ था।

इस स्थान से कुछ दूरी पर स्थित एक भवन की छत पर बने विशाल मंच पर प्रतिदिन धर्मसभा होती थी जिसमें महान साधु-संतों के प्रवचन तथा आंदोलन का नेतृत्व कर रहे अधिकारियों का मार्गदर्शन मिलता था। जो महापुरुष कभी टी.वी. और पत्र-पत्रिकाओं में दिखाई देते थे उनका निकट से दर्शन किसी दिव्य स्वप्न जैसा ही था।

रात्रि में अलग-अलग प्रांतों से आए कलाकार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे। फिर ६ दिसंबर को मंच से घोषणा हुई कि कारसेवा केवल प्रतीक रूप में होगी। सभी प्रांत प्रमुखों को स्पष्ट निर्देश मिल चुका था कि कारसेवक अपने प्रांत के कारसेवकों के साथ पंक्तिबद्ध होकर शिलान्यास स्थल पर जाएंगे तथा एक मुट्ठी रेत तथा जल चढ़ाकर वापस लौट जाएंगे।

प्रतीकात्मक कारसेवा प्रारंभ हो चुकी थी। यह कारसेवकों के धैर्य की अंतिम परीक्षा थी। कई कारसेवकों को कारसेवा का यह प्रकार स्वीकार नहीं हुआ। इसके बाद क्या हुआ यह बताने की आवश्यकता नहीं है। ७ दिसंबर को कारसेवक वापस लौटने लगे। रेलवे विभाग ने विशेष गाड़ियों का प्रबंध किया था। लौटते समय हजारों कारसेवकों के साथ मैं रेलगाड़ी की छत पर बैठा था। गाड़ी में क्षमता से कई गुना अधिक सवारियां थी, इसलिए गाड़ी रेंगते हुए चल रही थी। कई किलोमीटर तक मैं अयोध्या की ओर ही देखता रहा। उत्साही कारसेवक लौटते समय गा रहे थे- ''हम तो कर चले अपना काम.... सबको राम, राम, राम...'' । उन ७ दिनों का रोमांचकार अनुभव मुझे आज १८ वर्ष पुराना नहीं बल्कि केवल १८ दिन पुराना लगता है।

धर्मेन्द कुमार, *हिण्डौन*

नरहोली का नर्क

मेरा यह विश्वास है कि अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर ही था और पूरी जमीन राम की है और रहेगी। एक नहीं अनेक प्रमाण मौजूद थे, हैं और रहेंगे। मैंने १९८९ और १९९० में मंदिर की परिक्रमा की थी। मंदिर में खम्भे गुप्तकालीन कला के नमूने थे।

मैं ८ नवम्बर,१९८९ को अयोध्या पहुँचा था। १० नवम्बर को शिलान्यास स्थल पर एक बजकर दस मिनट पर नागा साधुओं की टोली पहुंची। चारों ओर हजारों जवान बन्दूकें तथा स्टेनगन ले खड़े थे और कुछ मिन्टों बाद जय-जय सिया राम के नारों से अयोध्या गूंज उठा और शिलान्यास हो गया।

फिर २८.अक्टूबर १९९० को हम ३२५ कार सेवक दादा भाई के साथ गये । हमें मथुरा में रेल रोक कर गिरफ्तार कर लिया गया और नरहोली थाना ले गये। वहां हम पर पुलिस ने पैरों, हाथों की हड्डियों पर लाठियां बरसाना शुरु की। कई कारसेवकों को करन्ट भी लगाया जिससे पवन कुंमार शर्मा झोटवाड़ा वाले, ओम भाटिया सिन्धी कॉलोनी वाले तथा गुल नमस्कार किराना स्टोर वाले बेहोश हो गये। दो नवम्बर को मेरी माता श्री देवी बाई का स्वर्गवास हो गया पर मुझे जेल से नहीं छोड़ा ।१९९२ में फिर कार सेवा में गये जहां एक दूसरा कारसेवक मुझ पर गिरा और हम बेहोश हो गये। हमें फैजाबाद हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। यहां दो कार सेवक शहीद हो गये जिनका पंचनामा हमने कर दिया।

कपूर चन्द्र सेवानी, *जवाहर नगर, जयपुर*

अस्थायी मंदिर में विराजे रामलला

कोटा से राजस्थान का अंतिम जत्था दिनांक २६.१०.१९९० को गोल्डन टेम्पल मेल से रवाना हुआ। अवध एक्सप्रेस को रेलवे ने रद्द कर दिया था जिससे सीधे कारसेवक अयोध्या नहीं पहुँच सकें और जो दिल्ली यात्री गाड़ियां जा रही थी उनकी तलाशी जबरदस्त ढंग से ली जा रही थी। सरकार की भारी सख्ती चल रही थी ऐसे में दाऊदयाल जोशी जो उस समय सांसद थे के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में कारसेवकों ने भी अयोध्याजी को कूच किया।

भरतपुर रेलवे स्टेशन नजदीक आने लगा तो दाऊ दयालजी ने कहा हनुमान शर्मा कुछ व्यवस्था करो वरना भरतपुर से आगे धर-पकड़ हो रही है, सब धर लिये जायेंगे, कोई भी नहीं जा सकेगा ।

मैंने पहले से ही इतंजाम किया हुआ था। दाऊ दयाल जोशी और रविन्द्र सिंह निर्भय,वसुदेव पाल, संजीव माथुर को साथ लेकर गोल्डन टेम्पल मेल के रसोई यान के केबिन में गया। रसोई यान में मैनेजर का एक कैबिन होता है। हम सभी उस केबिन में बैठ गये और बाहर से ताला लगवा दिया। भरतपुर रेलवे स्टेशन पर भारी संख्या में पुलिस ने सभी डिब्बों में बैठे कारसेवकों को उतार लिया। परन्तु हम उस केबिन में बैठे सभी बच गये और गाड़ी रवाना हो गयी। दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर हम उतर गये। वहाँ रात्रि ठहरकर दिनांक २७ अक्टूबर १९९० को लखनऊ की ओर जाने वाली यात्री गाड़ी में बैठकर प्रस्थान किया। कई घंटें इधर-उधर स्टेशनों पर रुकती रुकाती हमारी गाड़ी कानपुर रेलवे स्टेशन पहुँची। कानपुर में हमें पुलिस ने स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर लिया और बसों से फतहगढ़ सेन्ट्रल जेल दिनांक २९ अक्टूबर १९९० की सुबह पहुँचा दिया। वहां से दिनांक ४नवम्बर १९९० को जेल से रिहा कर दिये गये तो एक दिन कानपुर ठहरकर ७ नवम्बर १९९० को श्रीरामलला के दर्शन पाकर हम सभी धन्य हो गये।

दूसरी कार सेवा में पहले जत्थे में हमने अवध एक्सप्रेस से दिनांक २९नवम्बर १९९२ को कोटा से प्रस्थान किया। ३०नवम्बर १९९२ को श्री अयोध्या जी पहुँच गये।

शाम होने से पहले ही यहाँ प्रतिदिन रामलला के और अयोध्या में स्थित मंदिरों में दर्शन करते थे। छह दिसम्बर के दिन सुबह से ही कारसेवक एकत्रित होने लगे थे। वहां मंच से कारसेवकों को निर्देश दिया गया कि वे सरयू नदी की मिट्टी लाकर प्रतीकात्मक रूप में कारसेवा करें। इस पर बहुत से कारसेवक सरयू नदी की ओर चले गये लेकिन पूरे देशभर से आये कारसेवकों के एक वर्ग को यह सहन नहीं हुआ और वे ढांचे की ओर जाने लगे। धीरे-धीरे कारसेवकों का दवाब ढांचे की तरफ बढ़ने लगा और कारसेवा शुरू हो गई।

ऐसा होते ही कारसेवकों में भारी उत्साह उत्पन्न हो गया। हालत यह हुई कि अयोध्या के घरों में फावड़ा व गैंती सरिया तो दूर पेचकस भी नहीं बचा। चार-पांच कारसेवक एक फावड़े गैंती के लिए अपनी प्रतीक्षा करते और जैसे ही एक कारसेवक चार पांच बार फावड़ा गैंती आदि चला लेता, दूसरे कारसेवक उससे यह कहकर फावड़ा ले लेते कि हमें भी ' **रामजी का काम**' करने दो।

कारसेवकों ने राष्ट्रीय अपमान को पूरी तरह ध्वस्त कर वहां रामलला को चारों तरफ से कपड़े लगाकर विराजमान कर दिया। अयोध्या से ७ दिसम्बर को लखनऊ और वहां से आठ दिसम्बर को अवध एक्सप्रेस से रवाना होकर सभी कारसेवक कोटा पहुँच गये। यहाँ सभी कारसेवकों का नागरिकों ने भारी उत्साह से स्वागत किया।

-हनुमान शर्मा ,कोटा

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

N.S.KALANI

Phone : (O)91-744 2364219, 2362463 (R)2361043 (M)9829037771. Fax 91-744-2361937

Shree Agencies Pvt.Ltd.

Manf. & Exporters of:

◆ Sand Stone ◆ Kota Stone

◆ Cobble Stone ◆ Paving Stone etc.

233, Shopping Centre, KOTA-324007(Raj.)INDIA

Website: www.worldofstones.com

E-mail: hk@worldofstones.com,h_kalani@hotmail.com

Regd. office & Factory: B45/B44A, Indraprastha industrial Area, KOTA-324005 Tel:0744-2424019

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाओं सहित 9828302900

राजीव डांग

अध्यक्षः-

व्यापार मंडल, अनूपगढ़

अनूपगढ़ 335701 जिला श्रीगंगानगर

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

गौरव गोदारा

मोबाः **94133-77179**

गोदारा कॉटन जिनिंग एण्ड प्रोसिंग फैक्टी

अनूपगढ़ जिला श्रीगंगानगर 335701

राजस्थान के बलिदानी कार-सेवक

जो राम के काम आये

२ नवम्बर १९९० का दिन इतिहास हमेशा 'काले दिवस' के रूप में याद रखेगा। प्रभु श्रीराम के कार्य के लिये संकल्पबद्ध निहत्थे कार-सेवकों पर उस दिन राज्य सरकार के आदेश पर गोलियाँ बरसाईं गईं। अनगिनत कारसेवक उस दिन राम के काम आ गये। प्रणोत्सर्ग करने में तो राजस्थान हमेशा आगे रहा है। उस दिन भी इस वीरों की धरती के ही रामभक्त सबसे आगे थे। इसलिये गोलियाँ भी सबसे अधिक उन्होंने ही खाईं। राजस्थान के शहीद कारसेवकों का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है -सं.

प्रो.महेन्द्रनाथ अरोड़ा

भरतपुर में १९ जनवरी,१९३५ को जन्मे महेन्द्रनाथ अरोड़ा ने वहीं से स्नातक किया। इसके बाद वे जयपुर आ गये और यहां से अंग्रेजी में स्नात्कोत्तर उपाधि ली। जोधपुर विश्वविद्यालय (जिसका वर्तमान नाम जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय है) में वे प्राध्यापक थे। साथ ही एन.सी.सी. के कैप्टेन भी थे। उनका पूरा परिवार संघ से जुड़ा हुआ था और वे विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री भी रहे।

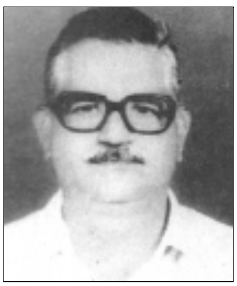

प्रो. अरोड़ा में देशभक्ति के भाव कूट-कूट कर भरे थे। अयोध्या में भगवान राम के मन्दिर निर्माण के लिए जोधपुर में हुए सभी कार्यक्रमों में वे अग्रणी रहे। उन्हीं के नेतृत्व में २७ अक्टूबर१९९० को जोधपुर के दल ने अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। ये कारसेवक बड़ी-बाधाएं झेलते हुए, सवा सौ किमी. पैदल चलकर १ नवम्बर को प्रातःकाल अयोध्या पहुंचे। वहां प्रातःकाल छोटी छावनी से निकली विशाल रैली में लगभग डेढ़ लाख कारसेवक शामिल हुए। रैली के बाद हुई सभा में आह्वान किया गया कि २ नवम्बर को प्रातः निहत्थे कारसेवक रामधुनी करते हुए आगे बढ़ेंगे। अश्रु गैस से बचाव के लिए साथ में भीगे कपड़े रखने की हिदायत भी दी गई। २ नवम्बर(कार्तिक पूर्णिमा) को प्रातः १० बजे हर गली से हजारों की संख्या में कारसेवक 'जयश्री राम' का उद्घोष करते हुए मंदिर की ओर बढ़ने शुरु हुये। पुलिस ने आगे बढ़ने से रोका तो कारसेवक वहीं बैठ गये और राम धुनी करने लगे। अचानक आँसू गैस के गोले फटने लगे तो चारों ओर धुंआ ही धुंआ फैल गया। फिर गोलियों की आवाजें आने लगी। राजस्थान के दल का नेतृत्व करने वाले प्रो. अरोड़ा स्वयं की परवाह न करते हुए वहीं खड़े-खड़े कारसेवकों को गली में जाने, लेट जाने आदि की हिदायतें देते रहे। तभी छत पर खड़े एक आततायी सैनिक ने उन्हें निशाना साधकर गोली दाग दी , जो उनके पेट में लगी। एक घन्टे बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया। तब तक उनकी सांसें चल रही थी किन्तु अस्पताल पहुंचने के कुछ ही देर बाद निधन हो गया। पुलिस को उनके कपड़ों की तलाशी में एन.सी.सी. कप्तान का परिचय पत्र मिला। फिर तो सभी सैनिकों ने उन्हें अधिकारी सलामी दी व शव पर फूल मालाएं चढ़ाई। जोधपुर में उनका अन्तिम संस्कार संपन्न हुआ। कर्फ्यू के दौरान भी उनके अंतिम संस्कार में १५-२० हजार लोग सम्मिलित हुए। जोधपुर में विश्वविद्यालय के पास चौराहे पर शहीद महेन्द्रनाथ की प्रतिमा स्थापित है तथा उस चौराहे का नामकरण भी महेन्द्रनाथ अरोड़ा चौराहा किया गया है।

सेठाराम परिहार

जोधपुर जिले के मथानिया गांव के श्री बंशीलाल के पुत्र थे सेठाराम । सेठाराम की मसें भी पूरी तरह से नहीं भीगीं थी फिर भी ग्रामीण परिवेश के कारण किशोर अवस्था में ही उनका विवाह कर दिया गया था। वह २२ वर्षीय युवक भी कारसेवा में जाने को उत्सुक था अतः अन्य साथियों के साथ वह अपना सामान लेकर जोधपुर आ पहुँचा। उनकी सादगी और चंचलता देखकर कार्यकर्ताओं को कुछ संदेह हुआ। अतः जब उनसे पूछा गया कि 'घर से पूछ कर आये हो ?' तो उनका सटीक जवाब था कि 'भगत सिंह जैसे लोग घर से पूछ कर नहीं आते '। इस प्रकार हिन्दुत्व की ऊर्जा और रामभक्ति के कारण सेठाराम में अदम्य साहस एवं उत्साह भरा था। २७ अक्टूबर,१९९० को जोधपुर के दल में प्रो. महेन्द्र नाथ अरोड़ा के साथ सेठाराम भी अयोध्या के लिए रवाना हुए। १ नवम्बर प्रातः यह दल अयोध्या पहुंचा । वे राजस्थान के कारसेवकों के लिए निश्चित आवास 'गोलाघाट' में ठहरे । २ नवम्बर को कारसेवकों का जुलूस हनुमानगढ़ी से आगे मन्दिर की ओर बढ़ रहा था । पुलिस ने रोका तो कारसेवक बैठे-बैठे रामधुनी करने लगे । अचानक पुलिस ने अश्रु गैस के गोले छोड़ना शुरु कर दिया। सेठाराम ने आँसू गैस के गोलों को उठाकर नाली में फेंक कर निष्क्रिय करने लगा। पुलिस की नजर सेठाराम पर थी। इतने में ही पुलिस के दो सिपाही सेठाराम को बाल पकड़ कर घसीटने लगे, फिर मुंह में बन्दूक की नाल लगाकर गोली मार दी। गोली मस्तिष्क को फोड़कर बाहर निकल गई। इस प्रकार सेठाराम ने खिले पुष्प की भांति अपना नश्वर शरीर अयोध्या में श्रीराम के चरणों में समर्पित किया। सेठाराम परिहार के पिता ने अपने वीर पुत्र का दाह संस्कार श्मशान भूमि में नहीं अपितु अपने खेत पर ही करवाया। सेठाराम के पांच वर्षीय पुत्र ने उन्हें मुखाग्नि दी। हजारों लोग शवयात्रा में सम्मिलित हुए। वहीं पर उनका स्मारक बनाया गया है।

रामकुमार व शरद कुमार कोठारी

पिताश्री हीरालाल एवं माता श्रीमती सुमित्रा देवी के बड़े पुत्र रामकुमार का जन्म २७ जुलाई १९६८ को व छोटे पुत्र शरद कुमार का जन्म १४ अक्टूबर,१९७० को हुआ था। इनका परिवार बीकानेर जिले की कोलायत तहसील के बरसलपुर गांव में रहता है किन्तु व्यवसाय कोलकाता में है। कोठारी बन्धुओं ने बीकानेर से दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और इसके बाद वे कोलकाता चले गये।

वहां नियमित पढ़ाई कर दोनों भाइयों ने कलकता विश्वविद्यालय से वाणिज्य विषय में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। वे बाल्यकाल से ही संघ से जुड़ गये थे। रामकुमार बड़ाबाजार की एक शाखा के कार्यवाह थे, वहीं शरद एक शाखा के मुख्य शिक्षक थे। श्रीराम मंदिर शिलान्यास के दिन ही दस नवम्बर १९८९को 'अयोध्या पुष्पांजलि कार्यक्रम' में उन्होंने हिन्दू समाज में चेतना जगाने का निश्चय कर लिया था। अपने माता-पिता की अनुमति से वे दोनों भाई २२ अक्टूबर ९० को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर पुनर्निर्माण के लिए अयोध्या के लिए रवाना हुए। कुटिल प्रशासन का कई स्तरों का चक्रव्यूह भेदकर वे ३० अक्टूबर को होने वाली कारसेवा के लिये अयोध्या पहुंचने में सफल रहे । पुलिस की एक बस में साधुओं को भरकर कहीं दूर ले जाने की तैयारी हो रही थी, उसी समय एक साधु ने पुलिस के ड्राइवर को धक्का देकर नीचे उतार दिया और स्वयं बस चलाते हुए पुलिस के बेरियर तोड़ते हुए बस को श्रीराम जन्मभूमि स्थान के पास ले गया। उसी बस में बैठकर कोठारी बंधु भी मंदिर के पास पहुँच गये थे। दोनों बन्धुओं ने विवादित स्थल की गुम्बदों पर चढ़कर ऊँकार युक्त भगवा ध्वज फहरया था।

२ नवम्बर को भी हजारों कारसेवकों के साथ कोठारी बन्धु प्रस्तावित मंदिर के निकट पहुंच गये। पुलिस ने निहत्थे कारसेवकों पर गोलियां बरसाई। शरद कोठारी को मकान से खींचकर बाहर लाया गया और निशाना बनाकर गोलियों से छलनी कर दिया। बड़े भाई से यह नहीं देखा गया और वह अपने छोटे भाई को बचाने के लिए उस पर लेट गया। इस पर भी पुलिस की बर्बरता जारी रही और दोनों कोठारी बन्धु रामकाज हेतु पुलिस की गोलियों से वहीं पर बलिदान हो गये।

कोठारी बन्धुओं के पवित्र बलिदान के बाद उनके माता-पिता ने श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण के लिए देशभर में भ्रमण कर जन जागरण किया। इस वीर दम्पत्ति ने ६ दिसम्बर, १९९२ की कार सेवा में भाग लेकर यह दिखा दिया कि रामकाज के लिए उनका सर्वस्व अर्पण है।बलिदानी कोठारी बन्धुओं के पिता का २००२ में निधन हो गया। गत ३० सितम्बर को न्यायालय का निर्णय आने पर कोठारी बन्धुओं की माता ने कहा कि 'अब मेरे पुत्रों का बलिदान सार्थक हुआ।'

रामावतार सिंहल

अलवर जिले के ग्रामसेवक श्री रतन लाल सिंहल के घर रामावतार सिंहल का जन्म १ जनवरी,१९६४ को हुआ था। उनकी मां का स्वर्गवास उनकी बाल्यावस्था में हो गया था अतः रामगढ़ तहसील में विद्यालयी शिक्षा के बाद रामावतार आगे अध्ययन के लिए अपने बड़े भाई-भाभी के पास जयपुर आ गये । यहां स्नातक व आई.टी.आई. डिप्लोमा करने के बाद वे ड्राफ्ट्समैन का काम करने लगे।

अयोध्या में मंदिर निर्माण की कारसेवा के लिए जयपुर से गये १४ सदस्यीय दल के साथ २५ अक्टूबर,१९९० को उन्होंने मरुधर एक्सप्रेस से प्रस्थान किया। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने गाड़ियां रद्द करवा दीं, बसों व रेलगाडियों से कारसेवकों को बीच रास्ते ही उतारा जाने लगा तथा किसी भी हालत में कारसेवा नहीं होने देने की घोषणा की थी। अयोध्या को छावनी बना दिया गया था। लखनऊ से पहले ही जयपुर के कारसेवकों ने पुलिस से बचने के लिए रात्रि में गाड़ी को जंजीर खींचकर रोका और अंधेरे में दूर भाग गये। फिर ढ़ाई सौ किमी.छिपते हुए, पैदल चलकर ३० अक्टूबर को सायंकाल अयोध्या पहुंचे। उन्हें इस बात का अफसोस था कि उस दिन कारसेवा में भाग नहीं ले सके। १ नवम्बर को मनीराम छावनी में वक्ताओं को सुनने के बाद वे सायंकाल जयपुर के सभी कारसेवकों के साथ गोलाघाट गये, वहीं रात्रि मिश्राम किया।

२ नवम्बर को हजारों कारसेवक रामधुनी करते हुए मंदिर की ओर बढ़े। हनुमान गढ़ी से जयपुर का दल सबसे आगे था। जन्मभूमि से डेढ़ किमी. पहले ही पुलिस ने जुलूस को आगे बढ़ने से रोक दिया तो कारसेवक वहीं बैठकर रामधुनी करने लगे। फिर पुलिस ने आंसू गैस छोड़नी शुरु कर दी। २६ वर्षीय रामावतार ने एक मकान में घुस कर पानी की मशीन चलाई ताकि लोग आँसू गैस से राहत पाने के लिए पानी ले सकें । उन्हें पुलिस से बचने के लिये दूसरे मकान में जाने के लिये भी कहा गया किन्तु सेवाभाव के कारण वे पानी मांगते लोगों को छोड़कर नहीं जा सके। तभी छतों से मशीनगनों से गोलियां बरसाई जाने लगीं। निशाना साधकर चलाई गई पुलिस की गोली से रामावतार सिंहल वहीं शहीद हो गये। ❑

अविनाश महेश्वरी

अजमेर जिले के पिचोलिया गांव के मूल निवासी श्री माणकचन्द माहेश्वरी एवं श्रीमती अक्षय माहेश्वरी के इकलौते पुत्र की प्राथमिक व उच्चप्राथमिक शिक्षा ग्रामीण वातावरण में हुई। १९८२ में पिता का स्थानान्तरण अजमेर हो जाने के साथ ही अविनाश का शहरी परिवेश में आगमन हुआ। अजमेर में अध्ययन करते समय अविनाश ने अपनी तीव्र बुद्धि एवं लगन से विभिन्न पारितोषिक प्राप्त किये। सैकण्डरी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। इसके बाद अजमेर के श्रमजीवी महाविद्यालय में प्रवेश लिया। पढ़ाई के साथ-साथ अविनाश ने टाईप व शॉर्ट हैण्ड में दक्षता प्राप्त की तथा समाज सेवा में भी वे अग्रणी रहे।

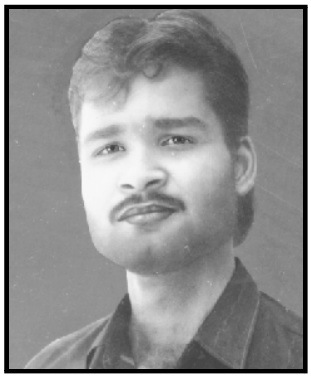

श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए आयोजित सभी कार्यक्रमों में वे बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। अपने पिता के सामने इच्छा प्रकट की कि वह भी कारसेवा में भाग लेना चाहता है। इस पर पिता ने इकलौता पुत्र होने के कारण न जाने के लिए समझाने की कोशिश की। इस पर अविनाश ने चुपचाप बिना बताये जाने तक की चेतावनी दे दी। फिर किसी प्रकार वे अपने पिता को सहमत करने में सफल हो गए।

२९ नवम्बर,१९९२ को अपने माता-पिता को प्रणाम कर अविनाश ने अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। ६ दिसम्बर को अयोध्या में ढांचा ढ़हाने के बाद घायलों की तलाश में गली से जा रही भीड़ में अविनाश सबसे आगे चल रहे थे। अचानक अविनाश ने फेंका गया बम अपनी ओर आते देखा। पत्थर समझकर अविनाश ने उसे हाथ से लपक कर दूसरी ओर दीवार की तरफ फैंक दिया। दीवार से टकराकर बम फटा तो धूंआ ही धूंआ फैल गया। बम का एक छर्रा अविनाश के सिर पर जा लगा। वे 'जयश्रीराम' का घोष करते हुए गिर गये। उन्हें उठाकर एम्बूलेंस से फैजाबाद चिकित्सालय ले जाया गया। डॉक्टरों ने तुरन्त ऑपरेशन किया और छर्रा निकाला किन्तु तब तक अविनाश इस संसार से कूच कर चुके थे। उनके माता-पिता के आर्थिक सहयोग से अजमेर में अविनाश माहेश्वरी नाम का विद्यालय चल रहा है।

अन्य बलिदानी कारसेवकों की सूची

१- विनोद कुमार गुप्ता-अयोध्या(उ.प्र.)
२- महावीर अग्रवाल-मालवीय नगर, गोण्डा (उ.प्र.)
३- फेरई वर्मा-गोपाल जतिया,गोण्डा (उ.प्र.)
४- राम अचल गुप्त-सूजा गंज, बाराबंकी (उ.प्र.)
५- रमेश पाण्डेय-अयोध्या (उ.प्र.)
६- राजेन्द्र प्रसाद धरिकार-अयोध्या (उ.प्र.)
७- वासुदेव गुप्ता-अयोध्या (उ.प्र.)
८-कंचन गुप्त-नवाबगंज,उन्नाव (उ.प्र.)
९-रमेश मिश्र-किशनदासपुर,गोण्डा (उ.प्र.)
१०-बाबू लाल तिवारी-नेमावर,देवास (म.प्र.)
११-राजेश शर्मा,इच्छावर,सीहोर,(म.प्र.)
१२- नरेन्द्र सिंह मेवाड़ा-बरखेड़ी-सीहोर (म.प्र.)
१३- यादव राम साऊरकर-देवलापार,नागपुर (महाराष्ट्र)
१४-लक्ष्मण सिंह-बड़ावली,उदयपुर,(राजस्थान)
१५-नाथूसिंह-बड़ावली,उदयपुर,(राजस्थान
१६-गोविन्दराम सुथार-बड़ावली,उदयपुर,(राजस्थान)
१७-ओम प्रकाश शर्मा-खाचरियावास,सीकर,(राज.)
१८-सुखदेव इस्सर-मरांची कलां,बेगूसराय (बिहार)
१९-भगवान सिंह-बलराम नगला,अलीगढ़ (उ. प्र.)
२०-बी वी अश्वत्थ नारायण-मण्डी बैदरहल्ली (कर्नाटक)
२१-राजीव दूबे-कृष्णा नगर,कानपुर,(उ.प्र.)
२२-अमित नागर-कानपुर,(उ.प्र.)
२३-नीरज चौरसिया-विश्रामघाट,मथुरा (उ.प्र.)
२४-भगवान दास जैन-होलीगेट,मथुरा (उ.प्र.)
२५-श्याम सुन्दर मित्तल-मथुरा,(उ.प्र.)
२६-राजाराम बर्णवाल-वारसलीगंज,नवादा (बिहार)
२७-संजय कुमार-कांटी,मुजफ्फरपुर(बिहार)
२८-गोपीनाथ-गोरखपुर,(उ.प्र.)
२९-गंगाराम राजपूत-रत्नगिरी,(महाराष्ट्र)
३०-विष्णुदास रामाराव भिमानी-हिवरटवेड,बुलदाणा (महाराष्ट्र)
३१-साधु पुरुषोत्तम दास-मेहगांव,मुरैना (म.प्र.)
३२-राजेश रमण भाई-लिम्बड़ी,पंचमहल (गुजरात)
३३- दिनेश चन्द सिन्हा-पटना(बिहार)
३४-कुबेर सिंह-बिहार
३५-सूर्य कुमार-आन्ध्रप्रदेश
३६-महेन्द्रनाथ बहोरी-उदयनगर,कानपुर (उ.प्र.)
३७-तुलसीदास महाराज-गोलाघाट,अयोध्या (उ.प्र.)
३८-रघुनन्दन जोशी-जौहरी बाजार,जयपुर (राजस्थान)
३९-शेख अब्दुल रशीद-मुम्बई

(इनके अतिरिक्त अनेक कारसेवक बलिदान हुए किन्तु कुछ के शव नहीं मिल सके और कुछ के नाम-पते मालूम नहीं हो सके थे।)

श्रीराम जन्म भूमि विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ़ (अजमेर) राज.

नगर परिषद बोर्ड सभी नागरिक बन्धुओं से निम्न कार्य में सहयोग की अपील करती है :-

- परिषद द्वारा बसूल किये जा रहें करों की अदायगी में।
- नगर की स्वच्छता, सफाई एवं विद्युत व्यवस्था में।
- गौ रक्षा, पर्यावरण संरक्षण हेतु पोलिथिन थैली के उपयोग न करने में।
- सडे–गले फल न बेचने व खाद्य सामग्री ढककर रखने में।
- परिषद भूमि पर अतिक्रमण न करने में।
- बिना स्वीकृति निर्माण न करने में।
- नगर को सुन्दर व स्वच्छ रखने में।
- जन्म–मृत्यु का पंजीकरण करवाने में।
- हरित राजस्थान योजनान्तर्गत शहरी क्षेत्र में चल रहे पौधारोपण कार्यक्रम में।
- प्लास्टिक पोलिथिन का उपयोग नहीं करें।

(मंगतराम जाट)
आयुक्त
नगर परिषद , किशनगढ़

(गुणमाला पाटनी)
सभापति
नगर परिषद, किशनगढ़

एवं समस्त पार्षदगण

स्वच्छ उदयपुर *स्वस्थ उदयपुर* *सुन्दर उदयपुर*

कार्यालय नगर परिषद, उदयपुर (राज.)

१. प्रदूषण से मुक्ति का संकल्प

- विभिन्न कॉलोनियों में नए उद्यान का विकास
- झीलों के इर्द-गिर्द अतिक्रमण व गन्दगी को रोकना, पोलिथिन की थैलियों पर प्रतिबन्ध
- नियमित सफाई
- सड़कों की दोनों ओर व डिवाईडरों पर वृक्षारोपण
- ठोस कचरा निस्तारण के लिए शहर से दूर अत्याधुनिक प्रबन्धन केन्द्र

२. सूचना क्रांति की ओर बढते कदम

- कम्प्यूटरीकृत आदर्श कार्य प्रणाली पर कार्य आरम्भ
- जन्म-मृत्यू पंजीकरण का कम्प्यूटरीकरण
- बेबसाईट को अप टू डेट किया जाना
- इन समस्याओं के त्वरित निस्तारण हेतु हेल्प लाईन सेन्टर

३. अन्य सामाजिक सेवाएं

- प्रत्येक वार्ड में हेण्डपम्प व महिला स्नानघर
- विभिन्न वार्डों में सामुदायिक भवन व सुलभ शौचालय
- स्कूल व अस्पताल भवनों के विस्तार में सहयोग

४. मुख्य मेले

- दशहरा-दीपावली मेला
- हरियाली अमावस्या मेला
- सुखिया सोमवार मेला

–: जनता से आग्रह:–

- नगर परिषद की सम्पत्ति पर अतिक्रमण न करें और न करने दें
- निर्माण कार्य सेट बेक एवं पार्किंग के लिये स्थान छोड़ते हुए नगर परिषद से जारी स्वीकृति अनुसार ही करें
- पालतू पशुओं को घर में ही रखें
- कचरा सडक व नालियों में ना डालें कन्टेनर में डालें
- जन्म-मृत्यू पंजीकरण २१ दिवस में कराएं
- परिषद की समस्त देय का भुगतान समय पर करें

–: नागरिकों की बेहतर सेवा परिषद का ध्येय है:–

- नागरिकों की सद्भावना व सहयोग ही परिषद की शक्ति है।

महेन्द्र सिंह शेखावत
उपसभापति

रजनी डांगी
सभापति

एवं समस्त पार्षदगण

विवादित ढांचा ढहने के बाद की प्रतिक्रियाएं

किसे पता है राष्ट्रीय शर्म का मतलब ?

श्रीराम जन्मभूमि पर खड़ा विवादित ढांचा ६ दिसम्बर १९९२ के दिन ध्वस्त हो गया। दूसरे दिन समाचार-पत्र अपराध-बोध से भरे जा रहे थे। बड़े-बड़े और काले अक्षरों में उक्त घटना को राष्ट्रीय शर्म बताया गया। इन समाचार-पत्रों के लिये विदेशी बाबर द्वारा मंदिरों को ध्वस्त करना सम्भवतः गर्व का विषय है? सेकुलर बिरादरी ने भी जोरों से स्यापा करना प्रारम्भ कर दिया । इस दिशा-भ्रम, मतिभ्रम तथा कर्तव्य-भ्रम की स्थिति में कुछ पत्रकार-साहित्यकार ऐसे भी थे, जिन्होंने ६ दिसम्बर की घटना को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। उस समय के नक्कारखाने में ये स्वर 'तूती' के समान ही थे, किन्तु आज उनकी सार्थकता समझी जा सकती है। यहाँ ऐसी ही कुछ प्रतिक्रियां प्रस्तुत की जा रही हैं-सं० –

जाने कितने अखबारों, केन्द्र सरकार के संचार साधनों और तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी राजनीतिक, सामुदायिक और बौद्धिक संगठनों में 'राष्ट्रीय शर्म' (अयोध्या की घटनाओं पर) का एक तूफान सा आ गया है। और जाहिर है कि उद्देश्य सिर्फ एक है- हिन्दू अस्मिता के सवालों को रौंदने का जो मौका मिल गया है , उसको अधिक से अधिक भुना लेना। इन तमाम धर्म-निरपेक्ष राष्ट्रवादियों में से किसी को भी पता नहीं कि 'राष्ट्र' किस चिड़िया का नाम होता है।

राष्ट्रीय शर्मवाद के मौजूदा तूफान में दो तरह के लोग शामिल हैं। एक जिन्हें राष्ट्र या राष्ट्रीयता के यक्ष-प्रश्नों से कोई सरोकार कतई नहीं है। शुद्ध अवसरवाद ही जिनका बुनियादी चरित्र है। दो जो राष्ट्रीयता के सार तत्वों (स्मृति, संस्कृति और स्वाधीनता) की चेतना से शून्य हैं। गुलामी की काई जिनकी आत्मा तक छाई हुई है। जिनमें

क्रांति तो पीड़ा देती ही है

अयोध्या में बाबरी ढांचे को गिराए जाने के बाद लोगों की प्रतिक्रिया का मुझे १४ दिसम्बर तक पूरा अंदाजा नहीं था। १४ दिसम्बर को मुझे दो सार्वजनिक कार्यक्रमों में जाना था। पहला कार्यक्रम था, एक बड़े अधिकारी के पुत्र के विवाह का स्वागत समारोह और दूसरा 'पायनियर' के दिल्ली से प्रकाशन की पहली वर्षगांठ। ६ दिसम्बर की घटना के बारे में तब तक मेरे कुछ लेख अखबारों में प्रकाशित हो चुके थे। इन कार्यक्रमों में लोगों की प्रतिक्रिया मेरे लिए अप्रत्याशित थी। दर्जनों अपरिचित पुरुष और महिलाएं बड़ी गर्मजोशी से मुझसे हाथ मिलाना चाहते थे और 'देश के प्रति सेवाओं' के लिए मुझे शुभकानाएं देना चाहते थे। यह ६ दिसम्बर की घटनाओं के बाद देश के अंग्रेजी दां लोगों के बदलते हुए मूड का संकेत था। अंग्रेजी अखबार इसे नहीं समझ पाए हैं।

इन अंग्रेजी दां लोगों का रवैया अयोध्या में प्रस्तावित राम मन्दिर के आन्दोलन के प्रश्न पर ढुलमुल रहा है। पिछले दो वर्षो के जनमत सर्वेक्षणों के आधार पर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ। १९८६ में जब बाबरी ढांचे का मुख्य द्वार खोला गया और रामलला व अन्य देवताओं की मूर्तियां श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए खोली गई तो ये अंग्रेजी दां लोग इस आन्दोलन के प्रति उदासीन थे। धीरे-धीरे आन्दोलन ने गति पकड़ी और १९९० में लालकृष्ण आडवानी की रथ यात्रा से सारे देश में एक वातावरण बन गया। अब यह वर्ग जरा विचलित हुआ और इसने कहना शुरू किया कि भाई मन्दिर तो बने, पर बाबरी ढांचे को यथावत रखा जाए। इन लोगों ने इस तथ्य को समझने की कोशिश नहीं की कि अब वहां से मूर्तियाँ नहीं हटाई जा सकतीं, न ही इस अंग्रेजी दां कुलीन वर्ग ने मुसलमानों को यह नेक सलाह देने की जरूरत समझी कि एक ऐसे ढांचे के लिए जो १९४९ के बाद मस्जिद नहीं रहा, झगड़ने की कोई तुक नहीं है। अंग्रेजी प्रेस का सुर भी लगभग यही था।

अंग्रेजी अखबारों के सम्पादक और लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इसके सहयोगी संगठनों- विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल के तो शुरू से ही विरोधी रहे हैं। विरोधी तो ये भारतीय जनता पार्टी के भी थे परन्तु भारतीय जनता पार्टी का विरोध उतना उग्र नहीं था। ये संगठन उनके आधुनिक और सेकुलर भारत के सपने के ढांचे में फिट नहीं होते थे। मेरे विचार से उच्च कुलीन वर्ग इस पूर्वाग्रह से ग्रस्त रहा है। पर इस बार अंग्रेजी प्रेस, अंग्रेजी दां वर्ग की भावनाओं का ठीक से प्रतिनिधित्व नहीं कर पाई। मुझे १४ दिसम्बर को यही अनुभव हुआ। **इस घटना के बाद एक नई प्रकार की अभिव्यक्ति हुई है और ढांचे को गिराया जाना इस रचनात्मक ऊर्जा की अभिव्यक्ति है।**

भारतीय कुलीन वर्ग विशेषकर मार्क्सवादी छाप आजकल बर्बर, उग्रवादी,ठग, फासिस्ट, अलोकतांत्रिक जैसे शब्दों का काफी इस्तेमाल कर रहे हैं। ये तर्क नहीं, गालियां हैं। अरे भाई शिक्षाविद हो, संपादक हो तो अपने स्तर के अनुरूप भाषा का इस्तेमाल करो। मैं यहां माओ का यह कथन याद दिलाना चाहूँगा जो मेरे विचार से सत्य भी है कि क्रान्ति कोई कोमल-कान्त, छुई-मुई सी चीज नहीं है। ये बागवानी, बुनाई करना या कविता लिखना नहीं है। **फिर भारत में क्रान्ति की प्रक्रिया इतनी पीड़ा रहित और आरामदायक कैसे हो सकती है ?**

गिरिलाल जैन (संडे आब्जर्वर -२६ दिसम्बर १९९२)

एक स्वाधीन देश के वासी की आत्म गरिमा और दीप्ति नदारद है।

जिनका सारा तथाकथित धर्म निरपेक्षतावाद भारतवर्ष और हिन्दू अस्मिता के निषेध में है। जिन्होंने संविधान में मजहबी कानूनों के प्रक्षेपण के द्वारा उसे शुद्ध मज़हबी और जातिवादी संविधान बनाये रखने में कभी कोई आपत्ति कतई नहीं की है। जिन्होंने संविधान में शरीयत को शामिल रखकर, हिन्दू और मुसलमानों के परस्पर समरस होने की सम्भावनाओं को ही अंतिम रूप से नष्ट कर दिया है। जो इस सच्चाई को झुठलाने में ही ईमान रखते आये हैं कि **संविधान में हिन्दुओं की कानूनी हैसियत दोयम दर्जे की बना दी गई है।** बाबरी मस्जिद ढहाये जाने की नौबत के वास्तविक अपराधी यही हैं।

शर्म से अगर किसी को मुँह छिपाना चाहिये तो इन्हें, क्योंकि भारतवर्ष के एक स्वाधीन राष्ट्र बनने की जगह, सिर्फ जातिवादी-मज़हबी औपनिवेशक राज्य बनने के जिम्मेदार ये ही हैं।

प्रसिद्ध कथाकार शैलेश मटियानी

(राष्ट्रीय सहारा २१,२२ दिसम्बर,९२)

अपमान धो डालने को आगे आये

वैसे अब कुछ-कुछ समझ में आना तो शुरु हो गया है, फिर भी देश के बुद्धिजीवियों को पूरी तरह यह समझने में शायद समय लगेगा कि भारत और हिन्दुत्व इन दोनों का अतीत, वर्तमान और भविष्य अविभाज्य रूप से एक दूसरे से जुड़े है। एक में विकार आयेगा तो दूसरा दुरुस्त रह नहीं सकता। एक नहीं रहेगा तो दूसरे का अस्तित्व संकट में पड़ने ही वाला है। अन्यथा न लिया जाए तो यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि जब कश्मीर में दसियों मन्दिर तोड़े गये तो इन बुद्धिजीवियों को इसलिये कष्ट नहीं हुआ, इसलिये उन्होंने शांति मार्च नहीं निकाले और इसलिये नुक्कड़ नाटक नहीं खेले कि वे तोड़ने वालों में शायद भारत के सोच का प्रतिनिधि होने की अपेक्षा नहीं रखते थे। कश्मीर में तोड़े गये मन्दिर तो विवादित नहीं थे। इसके बाबजूद बुद्धिजीवी चुप रह गये। तो यह अकारण कैसे मान लें?

कांग्रेस और उससे टूट-फूट कर निकली हर राजनीतिक धारा, कम्युनिस्टों, समाजवादियों ने धर्मनिरपेक्षता का धोखा बना कर मुसलमानों का तुष्टीकरण जारी रखा तो बदले में हिन्दुत्ववादी ताकतों ने अपना प्रतिरोध जारी रखा। सवाल यह है कि क्या हिन्दुत्व को इस हद तक उग्र होना चाहिये था कि बाबरी मस्जिद नामक विवादास्पद ढाँचे को तोड़ दिया जाये?

सच्चाई यह है कि इस देश के राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान करने वाला कोई भी विचार, व्यक्ति या कदम इस देश की राष्ट्रीयता

सेकुलरवाद को एक बार ही दफना दो

देश में हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की विष-बेल की जड़ पर पहली करारी चोट कार-सेवकों ने अयोध्या में की। प्रथम मुगल आक्रमणकारी बाबर के सिपहसालार मीर बाकी ने जो फरिश्ते उतरने की इमारत बनाई थी, उसे ढहा दिया और मन्दिर-मस्जिद विवाद का निर्णायक अन्त कर दिया। यह बात बहुत कड़वी है परन्तु अकाट्य सत्य है जो बड़ी कठिनाई से हमारे ढोंगी राजनेताओं के गले उतरेगा।

आजादी के बाद अंग्रेजों की खण्ड-दृष्टि को हमारे राजनेताओं ने अपना लिया। **देश की राष्ट्रीय प्रकृति पर एक के बाद एक प्रहार होने लगे।** संविधान बनने के साथ पहला प्रहार यह हुआ कि देश का नाम ही हिन्दुस्तान के बजाय 'इण्डिया देट इज भारत' कर दिया गया। पहिचान के लिये जो नाम हिन्दुस्तान चला आ रहा था और हम उसकी पूजा किया करते थे, हिन्दु कुश से हिन्द महासागर तक जिसके अवशेष मौजूद हैं, उसे तो संविधान ने ही समाप्त कर दिया और जो नया नाम दिया उसका कोई उच्चारण ही नहीं कर सकता 'इण्डिया देट इज भारत' भी कोई नाम होता है ? क्या किसी भी देश का इस तरह का नाम है? क्यों न एक बार समूचे संविधान पर ही विचार करने के लिये चुनी हुई परिषद् का गठन किया जाय?

कोई यह नहीं बता सकता कि 'हिन्दू' शब्द किसी मज़हब या सम्प्रदाय का प्रतीक किस तरह है? इस तरह का कोई विचार ही पैदा न हो इसके लिये धर्म-निरपेक्षता का नया शब्द जाल बुना गया। **हिन्दू या हिन्दू से जुड़े हुए किसी पहलू का नाम लेते ही धूर्त राजनेता चिल्लपों मचाना शुरू कर देते हैं।** जिन लोगों ने स्वतंत्र रूप से या संगठित रूप से हिन्दू को राष्ट्रीय पहिचान के तौर पर स्थापित करने का बीड़ा उठाया उन्हें तरह-तरह से लांछित किया जाने लगा। ऐसी परिस्थिति में देश में जबर्दस्त घुटन पैदा होती है। यही वह घुटन है जो अयोध्या में मीर बाकी के बनाये ढ़ांचे को नेस्तनाबूत करने के रूप में परिणित होकर रही।

अंग्रेजों के रास्ते पर चलते हुए आजादी के बाद कांग्रेस ने धर्म निरपेक्षता के नाम पर मुसलमानों को देश की सांस्कृतिक- ऐतिहासिक परम्परा से अलग किये रखा। मुसलमानों को हिन्दुस्तान से बाहर भी नजर डालनी होगी। उन्हें दिखाई देगा कि हिन्दू से बढ़ कर उनका कोई रक्षक नहीं है। वोटों का पुलन्दा बनाया जाना किसी भी संप्रदाय के लिये शान की बात कैसे ही सकती है ?

धर्मनिरपेक्षता को लेकर फैले भ्रम जाल के कारण इस देश में जो आपा-धापी चल रही है। उससे देश का जो अहित हुआ वह किसी अन्य नीति से नहीं हुआ। बुद्धिमानी इसी में है कि प्रबल संकल्प के साथ जितनी जल्दी हो, धर्मनिरपेक्षता की इस विनाशकारी नीति को तिलांजलि दे दी जाय, इसे दफना दिया जाय।

क.च. कुलिश *(राजस्थान पत्रिका-५ जनवरी १९९३)*

का हिस्सा नहीं बन सकते। इसलिये भारतीय इस्लाम को भी इन प्रतीकों को अपना कर राष्ट्रीयता की मुख्य धारा में अपना योगदान करना चाहिये , उनका हिस्सा बन जाना चाहिये। **अगर मध्ययुगीन बर्बरता के दौर में भारत की नाक काटने के लिये इन तीन मंदिरों का अपमान किया गया तो अब भारत की विरासत का वाहक होने के कारण बीसवीं सदी के मुसलमानों को उस अपमान को धो डालने के लिये आगे आना चाहिये।**

सूर्यकान्त बाली (नवभारत , २४ दिसम्बर,९२)

हिन्दुत्व के चमत्कार

धीरे-धीरे हिन्दुत्व का नशा देश पर छाता जा रहा है। जिन्होंने इसे पहली बार ही देखा है , वे चकाचौंध हो गए हैं। कहते हैं कि कंस के आमंत्रण पर कृष्ण नन्दगांव से मथुरा पहुँचे तो कंस के चारों ओर, जिस तरफ भी वह देखता, उसी तरफ कृष्ण ही कृष्ण नजर आने लगे। पुण्यात्मा को यदि कृष्ण नजर आते हैं तो वह आल्हादित होता है लेकिन पापात्मा कृष्ण की झलक से ही दहशत खाता है। कंस का क्या हुआ, यह पुरानी बात है लेकिन नई बात यह है कि बाकायदा बुलाने पर हिन्दुत्व का आगमन हुआ है। जिनकी आंखों पर राजनीति का चश्मा चढ़ा है , उनसे मुझे कोई सरोकार नहीं लेकिन मैं उसके उजले पक्ष को देख कर बाकायदा आल्हादित हूँ ।

बिहार के मुख्यमंत्री पर जब हिन्दुत्व का नशा चढ़ा तो उन्होंने यह आवाज बुलंद की कि हरिजनों तथा आदिवासियों को पुजारी बनाया जाना चाहिए। यह हिन्दुत्व का चमत्कार नहीं तो और क्या है? जादू वह जो सिर पर चढ़ कर बोले। बिहार के मुख्यमंत्री के सिर पर हिन्दुत्व का जादू चढ़ गया। अगर ऐसा नहीं है तो उन्होंने यह मांग क्यों नहीं की कि मन्दिरों में पुजारी के साथ-साथ मस्जिदों में इमाम, गिरजों के पादरी, गुरुद्वारों के ग्रंथी तथा हर आराधना स्थल पर हरिजनों तथा आदिवासियों को धर्माचार्य बनाया जाए? ऐसी मांग उन्होंने इसलिए नहीं की कि उनके सिर पर इस्लाम, ईसाइयत अथवा पारसी धर्म का जादू नहीं चढ़ा बल्कि हिन्दुत्व का जादू चढ़ा, तभी तो उन्होंने हरिजनों, आदिवासियों को पुजारी बनवाने की ही मांग की।

आल्हादित होने की वजह यही है कि इसी से तो हिन्दुत्व की उदारता और विशालता साबित होती है। सच पूछा जाए तो बिहार के मुख्यमंत्री कोई बहुत दूर की कौड़ी लेकर नहीं आए हैं, लेकिन तसल्ली की बात है कि जब जागो तभी सवेरा होता है। मैं उन्हें फिलहाल यह नहीं गिनाऊंगा कि कितने हरिजन और आदिवासी कब से पुजारी और महन्त हैं लेकिन उन पर चढ़ा हिन्दुत्व का नशा उतर नहीं जाए इसलिए यह तथ्य जरूर बताना चाहूँगा कि राम का पहला पुजारी एक हरिजन ही था जिसका नाम वाल्मीकि था। और उसने रामायण लिख कर राम को घर-घर में पुजवा दिया। इस हरिजन से बड़ा राम का पुजारी और कौन हो सकता है? लेकिन नशा है न, इसलिए असली चीजें भी साफ नजर नहीं आतीं। बिना नशे के हिन्दुत्व को देखें तो पाएंगे कि यहां जाति, सम्प्रदाय, वर्ग, वर्ण, हरिजन या गिरिजन जैसा कोई भेद ही नहीं है। ये भेद तो सत्ता के सौदागरों ने पैदा किए हैं। अन्यथा कौन नहीं जानता कि राम जाति से क्षत्रिय थे।

जब अवतार लेने की नौबत आई तो विष्णु चाहते तो किसी ब्राह्मण परिवार में पैदा हो सकते थे लेकिन उन्होंने क्षत्रिय और यादव परिवार में जन्म लिया। इसी से स्पष्ट है कि हिन्दुत्व में जातिभेद की कहाँ गुंजाइश है? अगर राम भी बिहार के मुख्यमंत्री की तरह सत्ता के लिए जाति की सीढ़ी के मोहताज होते तो शबरी के झूठे बेर नहीं खाते। एक आदिवासी महिला के झूठे बेर खाने वाले को आराध्य देव मानना ही हिन्दुत्व का प्रतीक है जिसे श्रद्धा और आस्था से तो समझा जा सकता है लेकिन राजनीति से नहीं। जाति-पाँति तो सत्ता एवं राजनीति में पूछी जाती है। धर्म में तो परिभाषा यह है कि जाति-पाति पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि को होई। लेकिन यह परिभाषा उनकी समझ में नहीं आएगी जिनका धर्म राजनीति है।

हिन्दुत्व का तो कमाल ही यह है कि जो नहीं मानता उसे भी चमत्कार नजर आ जाता है। इसके विपरीत जिनका धर्म की राजनीति है, उनको जब अवसर मिला तब उन्होंने देश का प्रधानमंत्री कोई हरिजन या आदिवासी नहीं बनाया। एक क्षत्रिय को बनाया। क्यों? राष्ट्रपति एक ब्राह्मण को बनाया गया। किसी हरिजन और आदिवासी को नहीं ? यह कैसा खेल है कि बेचारे हरिजन और आदिवासी को तो पुजारी और महन्त ही बनवाना चाहते हैं जिनके लिए कष्ट ही कष्ट सुनिश्चित रहते हैं तथा 'स्वयं' सत्ता के शीर्षस्थ पदों को हथियाए रख कर सुख के सागर में मौज करते रहना चाहते हैं? प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति बनाने का अवसर हाथ लगने पर हरिजनों तथा आदिवासियों की याद नहीं आती लेकिन चपरासी और चाकर की नौकरी के लिए मंडल का जादूई चिराग हाथ लग जाता है जिसे रगड़ने से जिन्न पैदा हो और उससे कहे कि चल पहुंचा दे हमें सत्ता की सेज पर ।

ओमप्रकाश (राज पत्रिका ८ जन.१९९३)

श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक के प्रकाशन पर शुभकामनाएँ

कृष्ण कुमार अग्रवाल

कृष्ण कुमार अग्रवाल
9414023541

निवास41/405 नई मंडी, भरतपुर

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Corporate Advisors Pvt.Ltd.

Office No.002, Gulmohar Complex, Opp. Anupam Cinema, Station Road, Goreggaon(E), Mumbai-100 063
Tel. No.:3254 4073/9320778228 .
Email: padam.Jain@pkjca.com

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

DEEPAK BINDAL

Shree D.S. Bearings

NBC BEARINGS

Z-1, Chameliwala Market , M.I. Road, Jaipur-1

☎ 2365396 . Mob.98281 65396

E-mail : Deepakbindal10@yahoo.com

श्रीराम जन्म भूमि विशेषांक के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाएँ

हरि बाबू अग्रवाल

अध्यक्षः-

प्रातः भ्रमण समूह

कैलाश पार्क, सुभाष नगर,
शास्त्री नगर, जयपुर

नगर पालिका, सरवाड़ (अजमेर)

श्रीराम जन्मभूमि फैसले एवं
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

कृपया पॉलिथीन थैली का उपयोग जनहित में न करें।

- जन्म और मृत्यु का पंजीकरण समय पर करावें।
- सरवाड़ अपना शहर है इसे स्वच्छ रखें।
- अतिक्रमण न करें न करने देंगे।
- कचरा निर्धारित स्थान पर डालें।
- पशुओं, कुत्तों तथा सुअरों को आवारा न छोड़ें।

आपका विश्वास-शहरी विकास

दुर्गालाल माली
अध्यक्ष

एवं
समस्त पार्षदगण

माधुरी वर्मा
अधिशाषी अधिकारी

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

विद्या निकेतन बालिका माध्यमिक विद्यालय

संगम मार्ग, गोलवलकर नगर, चित्तौडगढ़ (राज.)

(श्री विद्या भारती संस्थान, चितौडगढ़ द्वारा संचालित)

१. शहर का एक मात्र निजी बालिका माध्यमिक विद्यालय
२. संस्कारक्षम वातावरण
३. प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ परिणाम, प्रावीण्य सूची में स्थान
४. प्रतिवर्ष गार्गी पुरस्कार में चयन
५. शहर का एक मात्र बालिका घोष
६. सुसज्जित कम्प्युटर लेब
७. समृद्ध पुस्तकालय
८. उच्च शिक्षित एवं दीक्षित आचार्यो द्वारा सुनियोजित संस्कारक्षम शिक्षा

अयोध्या आन्दोलन से जुड़े प्रमुख व्यक्तित्व

उन्होंने आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी बनाया

❑ सत्येन्द्र शर्मा

वर्ष १९८४ में राम-जानकी रथ यात्राओं से जुड़ा रामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन देखते-देखते राष्ट्रव्यापी आन्दोलन बन गया। देश का बच्चा-बच्चा इस अभियान से जुड़ गया। इसे जन आन्दोलन बनाने में जिन व्यक्तियों की प्रमुख भूमिका रही, उनका संक्षिप्त परिचय इस आलेख में प्रस्तुत है-सं.

परमहंस रामचन्द्र दास

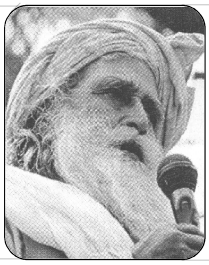

अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देने वाले महंत रामचन्द्र दास का जन्म बिहार के छपरा जिले के सिहीपुर गांव में सन् १८९० में हुआ था। भगवान दत्त त्रिपाठी की प्रथम संतान महन्त जी के जन्म का नाम चन्द्रशेखर त्रिपाठी था। धर्म भावना से प्रेरित होकर केवल १२ वर्ष की अल्पायु में घर-बार छोड़कर वे अयोध्या आ गये। पट्ना व अयोध्या से वेदाचार्य व प्राणाचार्य की उपाधि लेने के पश्चात क्वींस कॉलेज वाराणसी (संपूर्णानंद विश्वविद्यालय) में भी उन्होंने अध्ययन किया। वे संस्कृत, हिन्दी तथा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने आयुर्वेद में भी महारत प्राप्त कर रखी थी। परमहंस महाराज ने अपने गुरु ब्रह्मचारी रामकिशोर दास जी महाराज (चित्रकूट जिले में विंध्याचल पर्वत श्रेणी पर स्थित मड़फा गुफा, जो माण्डव ऋषि का आश्रम था) के सान्निध्य में रहकर कठोर साधना की थी। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया तथा एक समाचार पत्र का प्रकाशन भी किया। इसके पश्चात अयोध्या नगरपालिका के सभासद रहकर सरयू नदी के तट पर घाट बनवाने जैसे अनेक उत्कृष्ट कार्य भी उन्होंने करवाये।

जब वर्ष १९४९ में श्रीरामजन्मभूमि स्थान पर रामलला का अद्भुत रूप से प्राकट्य हुआ, तब वे मंदिर निर्माण के महान अभियान से जुड़े। इसके पश्चात उन्होंने भगवान रामलला की अखण्ड पूजा आराधना प्रारम्भ कर दी थी। मूर्ति नहीं हटाये जाने व पूजा अर्चना जारी रखने के लिये १९५० में महन्त जी ने न्यायालय में मामला दायर किया। वे हमेशा कहते थे-'' राम काज कीन्हें बिनु, मोहि कहां विश्रामा''। वर्ष १९८४ में जब विश्व हिन्दू परिषद ने श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए संघर्ष का निर्णय किया तो दिगम्बर अखाड़े के महन्तजी प्राणपण से उसमें सम्मिलित हो गये। पूज्य परमहंस रामचन्द्र दास जी महाराज की अयोध्या में इस घोषणा से सारे देश में सनसनी फैल गई कि यदि ८ मार्च,१९८६ तक श्रीराम जन्मभूमि का ताला नहीं खुला तो वे आत्मदाह कर लेंगे। उनकी यह घोषणा रंग लाई और १ फरवरी,१९८६ को श्रीराम मंदिर का ताला खुल गया। वे सन् १९८९ में श्रीराम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष बने। उनके नेतृत्व में हिन्दू शक्ति का पुनर्जागरण हुआ तथा बाबरी ढांचे के कलंक को कारसेवकों ने मिटा दिया।

अयोध्या में ३१ जुलाई सन् २००३ में वे परम ज्योति में लीन हो गए। उस समय वे ९३ वर्ष के थे। इस तरह वे ५४ वर्ष तक श्रीरामजन्म भूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष करते रहे। उनकी कामना श्रीराम जन्मभूमि के साथ-साथ श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुक्ति और काशी में भव्य शिव मंदिर निर्माण की थी।

स्वामी वामदेव

वृंदावन के वीतरागी संत पूज्य स्वामी वामदेव श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान १९८४ में विहिप से जुड़े और अपना शेष जीवन इस महान आंदोलन को समर्पित कर दिया। तीस अक्टूबर १९९० की ऐतिहासिक कारसेवा के दिन कारसेवा के लिए प्रस्थान करते समय स्वामी वामदेव महाराज के सीने में काफी दर्द था फिर भी वे विश्राम के लिए तैयार नहीं हुए। वे ठेले में लेटकर कारसेवा के लिए आये तो पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। स्वामी वामदेव 'श्रीराम जन्मभूमि न्यास मंच' के अध्यक्ष और अखिल भारतीय संत समिति के मुख्य संरक्षक भी रहे।

स्वामी वामदेव का कहना था कि राष्ट्र में सुख, समृद्धि एवं शांति तब ही संभव है जब धर्म सापेक्ष नीति का अनुसरण होगा। देश की अधिकांश समस्याओं के लिए धर्म निरपेक्षता ही जिम्मेदार है। छह दिसम्बर १९९२ को ढांचा ढहाने की घटना के बारे में उनका कहना था कि यह मुस्लिम आतंकवाद को समाप्त करने की चेतावनी तथा हिन्दू अस्मिता के जागरण का उद्घोष है। स्वदेशी- स्वभाषा के प्रबल समर्थक स्वामी जी का कहना था कि भारतीय परम्पराओं के अनुकरण से ही देश में समृद्धि आ सकती है। श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के समर्थन में राजस्थान से एकत्र हुए बावन लाख हस्ताक्षर राज्यपाल को सौंपने से पूर्व उन्होंने जयपुर में ४ अप्रेल १९९२ को हुई जनसभा को संबोधित किया था। श्रीराम शिला पूजन, कारसेवा और राष्ट्र जागरण आदि अभियानों में अविस्मरणीय योगदान देने वाले पूज्य स्वामी वामदेव जी महाराज १४ मार्च १९९७ को ब्रह्मलीन हो गए।

पूज्य शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती

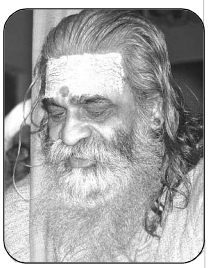

ज्योतिर्मठ के पूज्य शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती का श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन को हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त है। आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित ज्योतिर्मठ के वर्तमान शंकराचार्य पूज्य स्वामी वासुदेवानन्द जी का जन्म उत्तरप्रदेश के जौनपुर में हुआ। उनका बचपन का नाम सोमनाथ था। वे बचपन से ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु की खोज में व्यग्र रहे। इसी व्यग्रता को दूर करने के लिए वे एक बार घर छोड़कर अपने बाल सखाओं के साथ घूमते-घूमते प्रयाग पहुंचे। वहीं उन्हें अपने पूज्य गुरु शांतानन्द जी (तत्कालीन शंकराचार्य ज्योतिर्मठ) के दर्शन हुए। उनसे मिलने के बाद सोमनाथ ने अपने साथियों से कहा कि वे वापस लौट जायें। इनके माता-पिता को पता चलने पर वे समझा-बुझाकर सोमनाथ जी को वापस घर ले आये।

किन्तु आध्यात्म और वैराग्य की प्रबलता के चलते सोमनाथजी पुनः श्री गुरुदेव के आश्रम जा पहुंचे और आश्रम में रहकर ही 'विद्या वारिधि' तक की शिक्षा पूर्ण की।

इसके बाद उन्होंने अध्यापन का कार्य शुरु किया। आगे जाकर डॉ. सोमनाथ ज्योतिष्पीठ महाविद्यालय के वेदांग विभाग के विभागाध्यक्ष हुए। कुछ समय तक यह दायित्व संभालने के बाद उन्होंने पद त्याग कर दिया और ध्येय साधना के मार्ग पर चल पड़े। गुरुदेव पूज्य शांतानन्द जी ने उन्हें संन्यास की दीक्षा दी तथा दण्ड प्रदान किया। इसी के साथ डॉ. सोमनाथ 'अनन्त श्री विभूषित श्री वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज' के नाम से पहचाने जाने लगे। आगे जाकर वे ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

आद्य शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित चारों पीठों के प्रभाव क्षेत्रों के अनुसार अयोध्या ज्योतिर्मठ के अधिकार क्षेत्र में आती है। अतः अयोध्या में प्रस्तावित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण में पूज्य वासुदेवानन्द जी की गहरी रुचि है। श्रीराम मंदिर की कार सेवा के लिए वर्ष १९९० में बनी 'कार सेवा समिति' का अध्यक्ष पद स्वामी वासुदेवानन्द जी ने ही सुशोभित किया था।

इस वर्ष कुम्भ के अवसर पर आयोजित धर्मसंसद में **'हनुमत शक्ति जागरण अनुष्ठान'** का निर्णय भी उनके सान्निध्य में लिया गया था। वे अपने कार्यक्रमों में श्रीराम मंदिर की बार-बार चर्चा करते हैं। सामाजिक समरसता और गतिशील हिन्दुत्व के प्रबल समर्थक पूज्य शंकराचार्य वासुदेवानन्द जी का कहना है कि **'' अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण को दुनिया की कोई शक्ति नहीं रोक सकती ।**

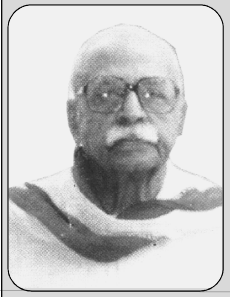

मोरोपंत पिंगले

श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए हुए आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मोरोपंत पिंगले का जन्म जबलपुर में ३० अक्तूबर,१९१९ को हुआ। वे ग्यारह वर्ष की आयु में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बन गए। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार के सान्निध्य में उन्होंने समाज संगठन के गुर सीखे। नागपुर से उन्होंने स्नातक की शिक्षा पूर्ण की और संघ के प्रचारक बने। खण्डवा से १९४१ में प्रचारक जीवन प्रारम्भ करने वाले पिंगले ने महाराष्ट्र के प्रांत प्रचारक, पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रचारक, अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख, बौद्धिक प्रमुख, प्रचारक प्रमुख जैसे महत्वपूर्ण दायित्व निभाएं। विकट से विकट परिस्थिति में निराश नहीं होने का उनका स्वभाव था। इतिहास पुनर्लेखन समिति, सरस्वती नदी अनुसंधान प्रकल्प और संस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुंचाने वाली संस्कृत भारती जैसी संस्थाओं के योजनाकार मोरोपंत पिंगले ही थे। विश्व हिन्दू परिषद की एकात्मता यात्रा की योजना भी उनकी प्रेरणा से ही बनी।

देश के जनमानस की गहरी समझ रखने वाले पिंगले जी का विश्लेषण एकदम सटीक एवं विलक्षणता लिये हुए होता था। श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन से जन-जन को जोड़ने के सूत्रधार मोरोपंत जी ही थे। मंदिर के शिलान्यास (१९८९) से पूर्व हर गांव, हर नगर-हर कस्बे से राम शिलाओं का पूजन कर अयोध्या पहुंचाने की अद्‌भुत योजना उन्हीं की थी। इसी के परिणाम स्वरूप यह आंदोलन सम्पूर्ण हिन्दू समाज का आंदोलन बन गया। अगले वर्ष (१९९०) कार सेवा के पहले श्रीराम ज्योति यात्रा की कल्पना भी उन्हीं के उर्वर मस्तिष्क की उपज थी। दो वर्ष बाद राम चरण पादुका के घर-घर में पूजन ने सम्पूर्ण वातावरण को राम-मय बना दिया। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन बनाने की सफल योजना बनाने का श्रेय उन्हीं को है। भारत माता के सेवक मोरोपंत पिंगले का २१ सितम्बर,२००३ को नागपुर में निधन हो गया।

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

BANNECHAND

SPE JAIPUR

Shree Prakash Electricals

Chameliwala Market, M.I. Road,
Opp. G.P.O.,JAIPUR-302 001(Raj.)

Phone: (S)2371555, 2364449(R)2226844,
Fax:0141-2371555(M)9829263351

बालासाहब देवरस

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक बालासाहब देवरस का श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में अनुपम योगदान रहा। उनकी ही प्रेरणा से लाखों कार्यकर्ताओं की शक्ति इस महान आंदोलन में लगी। बालासाहब का जन्म नागपुर के एक मध्यमवर्गीय परिवार में ११ दिसम्बर १९१५ को हुआ। उनके पिता श्री दत्तात्रेय देवरस ने अपने इस चौथे पुत्र का नाम मधुकर रखा। कुशाग्र बुद्धि के मधुकर ने प्रत्येक परीक्षा प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण की। बालासाहब ने जैसे ही बी. ए. की परीक्षा बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की तो परिवार के सदस्यों ने उन्हें आई.सी.एस. की तैयारी करने के लिए कहा। लेकिन बालासाहब बचपन से ही संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार के सम्पर्क में आ गए थे। अतः आई.सी. एस. बनने के स्थान पर अपना पूरा जीवन राष्ट्र सेवा में लगाने का निश्चय उन्होंने कर लिया।

बी.ए. के पश्चात एल.एल.बी. करते ही १९३९ में अविवाहित रहकर आजीवन संघ-कार्य करने का निश्चय कर वे संघ के प्रचारक के रूप में कोलकाता चले गए। पूज्य डॉक्टरजी के निधन के पश्चात उन्हें नागपुर बुला लिया गया। प्रारम्भ से ही संघ से जुड़े रहने के कारणबाला साहब का संघ की कार्यपद्धति तथा कार्यक्रमों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा। सन् १९६५ में भैया जी दाणी के निधन के पश्चात वे संघ के सरकार्यवाह बने। पाँच जून १९७३ को श्री गुरुजी के दिवंगत होने के पश्चात वे सरसंघचालक बने। आपात काल में संघ पर प्रतिबंध लगने के कारण २१ महीने उन्हें जेल मे रहना पड़ा। प्रतिबंध हटते ही बालासाहब संघ कार्य को आगे बढ़ाने में जुट गये।

१६ मई १९८३ में बालासाहब देवरस **'भारत माता मंदिर'** का उद्घाटन करने हरिद्वार आए। सायंकाल भोजन के समय विश्व हिंदू परिषद और संघ के प्रमुख कार्यकर्ताओं को उन्होंने प्रेरणा दी कि, *'' तुम्हारे प्रांत में श्रीराम जी ताले में बंद पड़े हैं, उन्हें मुक्त करने का अभियान चलाओ। आज हिन्दू कुछ करने के लिए बैचेन है, उसे दिशा दो संगठित करो और आंदोलन चलाओ।''* तभी यह तय हुआ कि तीनों धर्म स्थानों की मुक्ति के प्रथम चरण के रूप श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति का विषय सबसे पहले लिया जाये। वर्ष १९८३ में एकात्मता यात्रा की भारी सफलता के पश्चात २६ दिसम्बर को बदायूं के संभाग शिविर में देवरस ने पूर्व कांग्रेसी सांसद दाऊदयाल खन्ना से इस आंदोलन का नेतृत्व करने का आग्रह किया था। वर्ष १९८४ में विश्व हिन्दू परिषद ने श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन शुरु किया तब बालासाहब देवरस ने राष्ट्रीयता के प्रबल जागरण के उद्देश्य से इस आंदोलन में पूरी शक्ति झोंकने का निश्चय किया। परिणामस्वरूप इस आंदोलन ने विराट स्वरुप धारण कर लिया।

वर्ष १९९६ में १७ जून को उनका पूना में देहान्त हो गया।

साध्वी ऋतम्भरा(दीदी माँ)

पंजाब के जालन्धर जिले में जन्मी साध्वी ऋतम्भरा महामण्डलेश्वर युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज की शिष्या हैं। अपने तेजस्वी प्रवचनों के कारण पहचानी जाने वाली साध्वी ऋतम्भरा का श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में अतुलनीय योगदान है। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान उनके प्रवचनों ने लाखों युवकों को प्रेरित किया।

उन्होंने वृंदावन के पास वात्सल्य ग्राम की स्थापना की है। इस वात्सल्य ग्राम में उपेक्षित बच्चों का स्नेहपूर्वक लालन-पालन किया जा रहा है। न्यायालय का निर्णय आने के पश्चात दीदी मां का कहना है कि श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए जिन बलिदानियों ने अपने शरीर के रक्त से सरयू की धारा को लाल किया, उन सभी का बलिदान सार्थक हो गया। उन सर्वोच्च बलिदानों को वंदन है। श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर के बारे में उनका कहना है कि ''राम अपराजित पौरुष का भाव है। अपराजित! ऐसा पौरूष जो पराजित नहीं होता, जो नहीं डरता, मौत के सामने भी सीना तान के खड़ा रहता है। राम हमारे देश की अस्मिता है। ऐसे राम की जन्मभूमि पर उनका भव्य मंदिर बनेगा, इसी शुभकामना के साथ मैं करोड़ों-करोड़ोंउन भारतवासियों को बधाई देती हूँ, जो राम को एक आदर्श राष्ट्रपुरुष मानते हैं।

लाल कृष्ण आडवाणी

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी को श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के संबंध में श्री आडवाणी ने देश भर में विराट जनजागरण करने के लिए सोमनाथ से अयोध्या तक पूरे देश में होते हुए रथयात्रा की घोषणा की। भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष लालकृष्ण आडवानी ने २५ सितम्बर १९९० को सोमनाथ से अयोध्या कारसेवा के लिए प्रस्थान किया। गुजरात, महाराष्ट्र होते हुये रथयात्रा के दौरान बीच-बीच में अयोजित हुई जनसभाओं में बड़ी संख्या में लोग उमड़ पड़े। राममंदिर निर्माण समर्थन नारों और **जय श्री राम** के उदघोष ने पूरे देश के वातावरण को राममय बना दिया । सेकुलरवादी और तुष्टीकरण की नीतियों के चलते बिहार के समस्तीपुर में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। सोमनाथ से समस्तीपुर तक की रथयात्रा ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत की राष्ट्रीय पहचान **श्रीराम** हैं और श्रीराम नाम में देशवासियों को एकजुट करने की अकल्पनीय क्षमता है।

अशोकजी सिंहल

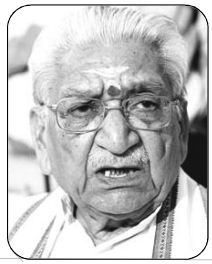

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन को नए तेवर देने वाले अशोक सिंहल का जन्म आगरा में २७ दिसम्बर १९२६ को हुआ। छात्र जीवन से ही प्रखर राष्ट्रवादी सिंघल स्व. श्री भाऊराव देवरस तथा संघ के चतुर्थ सरसंघचालक प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) के सान्निध्य में संघ के स्वयंसेवक बने। काशी विश्वविद्यालय से १९४९ में खनिज विज्ञान में इंजीनियर की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात श्री सिंहल ने जीवन भर अविवाहित रहकर राष्ट्र सेवा का व्रत लिया। सन् १९५० में संघ के प्रचारक बनकर संघ के कार्य विस्तार में लग गये।

विभिन्न दायित्व निभाते हुए वे १९८४ में विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त महामंत्री, १९८६ में महामंत्री बने और वर्तमान में विहिप के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं वस्तुतः श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन और अशोक सिंहल पर्यायवाची ही बन गये हैं। उनके नेतृत्व में इस आंदोलन ने विराट स्वरूप ग्रहण किया और यह अभियान पूरे हिन्दू समाज का अभियान बन गया। ३० अक्तूबर १९९० की कारसेवा से पहले तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने यह घोषणा की थी कि अयोध्या में कोई परिन्दा भी पर नहीं मार सकता। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए उन्होंने २८ अक्टूबर को अयोध्या पहुँचकर सबको हतप्रभ कर दिया। ऐतिहासिक दिन ३० अक्टूबर को अयोध्या में संतगणों के साथ जब उन्होंने कारसेवा के लिये प्रस्थान किया तो पूरी अयोध्या **जय श्री राम** के जयघोष से गूँज उठी। पुलिस द्वारा किए गए लाठीचार्ज से सिंघल के सिर में चोट आई। इसके बाद उनके तीन टांके लगे। अशोक सिंहल के घायल होने के बाद कारसेवकों ने पुलिस की मोर्चाबंदी ध्वस्त कर न केवल कारसेवा की बल्कि विवादित ढांचे के गुम्बदों पर भगवा ध्वज भी फहरा दिया।

वर्ष १९९२ में हुई कार सेवा में कारसेवकों ने विवादित ढांचा ध्वस्त कर देश पर लगा एक कलंक मिटा दिया। बाबरी ढांचे का कलंक मिटने के बारे में अशोक सिंहल का कहना है कि *'' साफ संदेश है कि हिन्दुओं की भावनाओं को अनन्तकाल तक दबाकर नहीं रखा जा सकता । अन्याय, अत्याचार व उपेक्षापूर्ण व्यवहार की भी एक सीमा होती है। श्रीराम जन्मभूमि के विषय में भी हिन्दुओं की सहनशीलता की एक सीमा थी। उनके इंतजार की भी एक सीमा थी। राव सरकार व छद्म सेकुलर दलों ने इस संदर्भ में जो दोहरा व मुस्लिम परस्त रवैया अपनाया, उसी का परिणाम थी ६ दिसम्बर की घटना। ढांचा ढहाए जाने का न तो कोई दुख है न ही विषाद। इस घटना का इतिहास में वही महत्व है जो १५ अगस्त का है। यह परतंत्र मानसिकता से मुक्ति का दिवस है, इतिहास में यह मील का पत्थर है।''* सिंहल ८४ वर्ष की आयु में भी श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर के लिए संघर्षरत हैं।

दाऊदयाल खन्ना

श्रीरामजन्मभूमि हिन्दुओं को सौंपने की **सबसे पहले मांग करने वाले** दाऊदयाल खन्ना ही थे। सन् १८९० में बनारस में जन्मे श्री दाऊदयाल कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता थे। सन १९६२ से १९६७ तक उत्तर प्रदेश की सरकार में चन्द्रभान गुप्त और सुचेता कृपलानी के मुख्यमंत्री काल में कैबिनेट मंत्री रहे। वर्षों तक कांग्रेस संगठन में महत्वपूर्ण पदों पर रहने के बाद उन्होंने राजनीति से सन्यास ले लिया।

१९८२ में नवगठित हिन्दू जागरण मंच ने **२२ नवम्बर** को उत्तर प्रदेश के काशीपुर में एक विशाल हिन्दू सम्मेलन आयोजित किया। उसमें स्वतंन्त्रता सेनानी दाऊदयाल खन्ना ने अयोध्या, मथुरा और काशी के धर्म स्थान हिन्दू समाज को सौंपने संबंधी ओजस्वी भाषण दिया। इसके पश्चात धर्म स्थान मुक्त कराने का विधिवत प्रस्ताव ६ मार्च १९८३ को मुजफ्फर नगर में 'हिन्दू जागरण मंच द्वारा आयोजित विराट हिन्दू सम्मेलन में पारित हुआ। इस सम्मेलन में रा.स्व.संघ के तत्कालीन सरकार्यवाह रज्जू भैया तथा गुलजारी लाल नन्दा भी उपस्थित थे। उन्होंने ही २३ मई १९८३ को सबसे पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को पत्र लिखकर मांग की थी कि अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मभूमि, मथुरा स्थित श्रीकृष्ण जन्मभूमि और काशी विश्वनाथ मंदिर हिन्दू समाज को सौंपे जायें। संघ के तीसरे सरसंघचालक बाला साहब देवरस से बातचीत के बाद वे प्रखरता के साथ श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़ गये। ६ अगस्त १९८३ को दिल्ली में प्रेस क्लब ऑफ इण्डिया में धर्म रक्षा समिति की ओर से दाऊदयाल खन्ना ने एक पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया। १९८४ में ७-८ अप्रेल को दिल्ली में धर्म संसद का अधिवेशन हुआ। उसमें विश्व हिंदू परिषद ने श्री दाऊदयान खन्ना को आमंत्रित किया। उन्होंने धर्म स्थानों की मुक्ति संबंधी प्रस्ताव धर्म संसद के सामने रखा जो सर्वसम्मति से पारित हुआ।

वे जुलाई १९८४ में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के प्रथम राष्ट्रीय महामंत्री बने। इसके पश्चात वे लगातार इस आंदोलन से जुड़े रहे। वर्ष १९९६ में ९ दिसम्बर को ८६ वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया ।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं

राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध

राजस्थान का सबसे तेज बढ़ता सह शैक्षणिक कॉलेज

IRIS INSTITUTE
For
IAS, RAS, BANK,SSC,
RP,DP, CPT, RLY etc.
contact 9529851958,
9024590567

आकर्षण

(१) सह शिक्षा व्यवस्था
(२) विशाल कैम्पस
(३) वाहन एवं छात्रावास सुविधा
(४) उच्च शिक्षित व्याख्याताओं द्वारा अध्यापन
(५)डिग्री के साथ प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी

DIRECTOR
DR. MAHESH SHARMA -9314922211
NEERAJ KUMAVAT -9828583541
RATAN LAL SAINI- 9414041758

पता– आइरिस कॉलेज, 50, हरि नगर III
न्यू सांगानेर रोड, जयपुर, फोन– 0141 6410806

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

इन्द्र नाहटा

४५/१ रफि अहमद किदवई रोड़,
द्वितीय तल, कलकत्ता -७०० ०१६

☎ 2265–0772, 2265–9147

सुपरनेट की डिजायनर्स साड़ियों के निर्माता

सबकी पसन्द

BP

बजाज

टेबलेट, चूर्ण, गोली व हर्बल

आयुर्वेदिक उत्पादन

निर्माता

बी.सी.फार्मा

एफ-815, रोड नं. 14, वी.के.आई. एरिया, जयपुर-13
फोन : 0141.2332441 मो. : 9829010841
website : www.bajajaampachak.com

दिलीप टांक- 9214981402
नरेन्द्र टांक - 94141-23105
विकास टांक-9251024333

MLT

विश्व प्रसिद्ध सोजत की मेहन्दी
(Henna)के उत्पादक एवं गोदरेज नुपूर
मेहन्दी के एक मात्र सप्लायर्स

प्रतिष्ठान:-

एम.एल.टी. हाउस, दिल्ली गेट रोड़
सोजत सिटी–०२९६०–२२०१०५
Email: vikasmehandi@sify.com

प्रयाग उच्च न्यायालय का सर्वसम्मत निर्णय

विवादित स्थान श्रीराम जन्मभूमि है

प्रयाग (इलाहाबाद) उच्च न्यायालय की लक्ष्मणपुर (लखनऊ) पीठ ने गत ३० सितम्बर को अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मभूमि मामले में सुनाए गए ऐतिहासिक और सर्वसम्मत निर्णय में कहा कि विवादित स्थल श्रीराम जन्मस्थान है। रामलला एक देवता हैं, जिन्हें न्यायिक व्यक्ति की मान्यता है । उनके दैवीय स्वरूप को पूजा जाता है। यह स्थान उनका जन्म स्थान है।

हिन्दू समाज की आस्था और श्रद्धा को मानते हुए न्यायालय ने निर्णय दिया कि यहाँ भगवान राम का जन्म होने के बारे में लम्बे समय से विश्वास है । न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल ने अपने निर्णय में गुरु नानक देव की १५१०-११ में अयोध्या यात्रा का विवरण दिया है कि उन्होंने भी श्रीरामजन्म स्थान का वर्णन किया है।

तीन न्यायाधीशों, न्यायमूर्ति सिबगत उल्ला खान, सुधीर अग्रवाल और धर्मवीर शर्मा ने १९५० से चल रहे मुकदमों में निर्णय दिया कि रामलला की जो मूर्ति वहां है, वहीं बनी रहेगी। न्यायमूर्ति धर्मवीर शर्मा ने अपने पृथक निर्णय में कहा कि विवादित स्थान पर राम चबूतरा, सीता रसोई व अन्य मूर्तियों की हिन्दू पूजा करते आए हैं । इस स्थान को तीर्थयात्रा का पवित्र स्थान भी अनंतकाल से माना जाता है। हिन्दू बाहरी परिसर में पहले से ही पूजा करते थे और अंदर के परिसर में भी पूजा की जा रही है। विवादित ढांचे को मस्जिद नहीं माना जा सकता। इसलिए विवादित जगह (२.७ एकड़) राम की ही है। न्यायमूर्ति शर्मा ने इस स्थान पर मुस्लिमों का दावा खारिज करते हुए कहा कि बाबरी मस्जिद का निर्माण इस्लाम के सिद्धान्तों के विरुद्ध था। इसलिए इसमें मस्जिद के गुण नहीं हो सकते । अन्य दो न्यायाधीशों ने आदेश दिया कि विवादित स्थल में एक तिहाई हिस्सा मुस्लिमों को भी दिया जाए। जरुरत पड़े तो बाहरी परिसर (केन्द्र सरकार द्वारा अधिग्रहित) में कुछ हिस्सा भी दिया जा सकता है। राम चबूतरा, सीता रसोई और भण्डार निर्मोही अखाड़े को दिया जाए।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई)के सर्वेक्षणों और खुदाई में मिले प्रमाणों को आधार मानकर न्यायमूर्ति एस.यू.खान ने निर्णय दिया कि विवादित ढांचा एक मस्जिद के रूप में बाबर के शासनकाल में बना था। मस्जिद ध्वस्त हो चुके किसी पुराने मंदिर की जमीन पर बनी थी । मस्जिद निर्माण में उसका मलबा भी उपयोग में लिया गया था। न्यायमूर्ति धर्मवीर शर्मा ने अपने निर्णय में कहा कि पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने सिद्ध किया है कि तोड़ा गया ढांचा हिन्दुओं की बड़ी धार्मिक इमारत था। वहीं न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल ने निर्णय दिया कि विवादित ढांचा किसी गैर इस्लामिक धार्मिक ढांचे (उदाहरण के तौर पर हिन्दू मंदिर) को तोड़कर बनाया गया था।

इस निर्णय का एक प्रमुख भाग यह भी रहा कि न्यायालय ने विवादित स्थल पर वक्फ बोर्ड का दावा खारिज कर दिया ।

न्यायालय ने विवादित क्षेत्र (सम्पूर्ण परिसर) के लिए बहुमत से दिए निर्णय में इसका बंटवारा तीन महीने में करने का आदेश दिया है और निर्देशित किया गया है कि इस दौरान पक्षकार यथास्थिति बनाए रखेंगे। निर्णय में स्पष्ट किया गया है कि आवंटन ऐसा होना चाहिए कि तीनों पक्षकारों को आने-जाने के लिए पृथक रास्ता मिले तथा एक दूसरे के अधिकारों में बाधा नहीं पहुँचे।

क्या राम पैदा हुए थे ? ईसा मसीह और पैगम्बर मोहम्मद के लिए ऐसे सवाल पूछने का साहस कोई नहीं कर सकता

न्यायमूर्ति श्री अग्रवाल अपनी बात इस कथन से आरम्भ करते हैं कि ' भगवान् राम पैदा हुए थे अथवा एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं, यह एक ऐसा मसला है जिसकी जांच-पड़ताल न्यायालय में नहीं की जा सकती है।' इस बात का साधारण सा तर्क यह है कि यदि किसी चीज का प्रमाण नहीं है तो इसका मतलब यह कतई नहीं होता कि वह चीज मौजूद ही नहीं है।

वे सवाल करते हैं कि ' दूसरे धर्मों में ईसा मसीह, पैगम्बर मोहम्मद आदि के बारे में इस प्रकार के सवाल पूछने का साहस कोई नहीं कर सकता..... इसलिए ऐसी आस्था और श्रद्धा के बारे में प्रमाण मांगने का प्रश्न कहां रह जाता है, जो कुछ हजार साल नहीं, बल्कि इतिहास के पन्नों में लाखों साल से दर्ज है ? उन्होंने येरुशलम स्थित विवादित अल अक्स का जिक्र भी किया, जिसे मुसलमानों के लिए तीसरा सबसे पवित्र स्थान माना जाता है।

शुभकामनाओं सहित
☎ : 2361480
9414187731
घनश्याम गुप्ता
कृष्णा एन्ड कम्पनी
84 शोपिंग सेन्टर, कोटा, राजस्थान

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित
महेन्द्र लाल खिरवाट
अध्यक्ष : जनता ट्रक युनियन एवं
समस्त कार्यकारिणी ट्रक यूनियन
रेल्वे स्टेशन के पास,अनूपगढ - 335701
मो. 94145-77643 जिला श्रीगंगानगर

देवकी नन्दन अग्रवाल कर अपील

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि को न्यायालय ने देवता स्वरुप स्थान मानते हुए रामलला को वहीं विराजमान रहने का निर्णय दिया है। इसके पीछे सेवानिवृत्त न्यायाधीश स्व. देवकीनन्दन अग्रवाल का परिश्रम शामिल है। अग्रवाल ने भगवान रामलला को पक्षकार बनाने वाला मुकदमा १ जुलाई १९८९ को दायर किया था। उन्होंने न्यायालय में तर्क दिया कि रामलला विराजमान को एक वादी के रूप में माना जाए। चूंकि वे नाबालिग हैं इसलिए मुझ रामभक्त को उनका नजदीकी मित्र (नेकस्ट फ्रेंड) माना जाए।

जस्टिस देवकी नंदन अग्रवाल की याचिका के बाद मुकदमे में नया मोड़ आया और न्यायालय पर इस सवाल का जवाब देने का जिम्मा आ पड़ा कि रामलला जिस स्थान पर विराजमान हैं क्या यही उनका जन्मस्थान है ? मूल रूप से प्रयाग (इलाहाबाद) के रहने वाले अग्रवाल १९८३ में प्रयाग उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने फैजाबाद आकर राजस्व अभिलेखों सहित अन्य वे सारे प्रमाण एकत्र किए जिनसे यह सिद्ध हो सके कि यह भूमि रामजन्मभूमि है , रामलला की है।

श्रीराम जन्म स्थान के संबंध में उन्होंने दलील दी कि श्रीराम जन्मभूमि (स्वयं-स्थान) रामभक्तों द्वारा एक देवता के रूप में पूजनीय है और इसमें दैवीय शक्ति है। इसलिए यह स्थान देवत्व प्राप्त है और किसी मंदिर निर्माण एवं वहां मूर्ति की स्थापना से पूर्व भी उसकी अपनी न्यायिक सत्ता रही है। भगवान राम के भक्तों के अनुसार भगवान राम स्वयं उस स्थान पर विराजमान हैं और इसका अनुभव उस व्यक्ति द्वारा होता है जो वहां प्रार्थना करता है। दैवीय शक्ति प्राप्त करने के लिये किसी मूर्ति का होना जरुरी नहीं है। ऐसे बहुत से स्थान हैं जो बिना मूर्ति के भी भक्तों की श्रद्धा एवं आस्था के कारण पवित्र हैं।

'मुखर्जीज हिन्दू लॉ ऑफ रिलिजन एंड चेरीटेबल ट्रस्ट' को उद्धृत करते हुए वाद में कहा गया है कि ''भगवान राम एक न्यायिक हस्ती हैं जिनका न्यायिक स्टेटस है। भगवान की जरुरतों की जिम्मेदारी होती है जो कानूनन उनका मैनेजर है तथा उसे वे सभी अधिकार हैं जो एक मैनेजर को दिये जाते हैं।'' इस प्रकार के देवता अथवा भगवान् जो अवयस्क हों, अपना मुकदमा न्यायालय द्वारा नियुक्त 'अभिन्न मित्र' की मदद से लड़ सकते हैं।

भगवान राम की जन्मभूमि को कई शताब्दियों से अनेक सरकारी अधिकारियों ने भी स्वीकार किया है। इस बात की पुष्टि के लिए अग्रवाल ने व्यापक रूप से गजेटियर्स का सहारा लिया। इस संबंध में प्रस्तुत किए गए उदाहरण में विशेष रूप में ब्रिटिश कमिश्नर एवं सेटलमेंट ऑफिसर पी.कैमेगी द्वारा लिखित गजेटियर'अजुध्या इन हिस्टॉरिकल स्केच ऑफ तहसील फैजाबाद' का व्यापक जिक्र किया गया। अपने इस गजेटियर में कैमेगी लिखते हैं कि जन्म स्थान वह स्थान है जहाँ श्रीरामचन्द्र का जन्म हुआ था। वे यह भी कहते हैं कि अजुध्या(अयोध्या) का स्थान हिन्दुओं के लिए वैसा ही है जैसा मुसलमानों के लिए मक्का और यहुदियों के लिए येरुसलम का।

सन २००२ में उनके निधन के पश्चात बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के पूर्व प्रोफेसर ठाकुर प्रसाद वर्मा की रामलला के नजदीकी मित्र के रूप में नियुक्ति हुई। वर्ष २००८ में उनके अस्वस्थ होने के पश्चात उच्चतम न्यायालय में विशेष अनुमति याचिका के माध्यम से त्रिलोकी नाथ पाण्डेय को राम सखा के रूप में नियुक्ति मिली। रामलला विराजमान समिति की ओर से फैजाबाद के स्थानीय अधिवक्ता मदनमोहन पाण्डेय ने मुकदमा लड़ा और जीत प्राप्त की।

न्यायालय ने निर्णय दिया कि रामलला को हटाया नहीं जायेगा, जहां वे विराजमान हैं वही उनकी जन्मभूमि है। इस तरह हिन्दू बहुल भारत में सेकुलरवाद के कारण स्वयं रामजी को अपनी जन्मभूमि के लिए मुकदमा लड़ना पड़ा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात न्यायालय में श्रीराम जन्मभूमि

-वर्ष १९५० में गोपाल सिंह विशारद और परमहंस रामचंद्र दास ने मुकदमा दायर किया। इस पर पूजा-पाठ और दर्शन की अनुमति मिली।

- वर्ष १९५९ में निर्मोही अखाड़े ने तीसरा मुकदमा दायर कर पूजा व्यवस्था उसे सौंपने की मांग की।

- १८ दिसम्बर १९६१ को उत्तर प्रदेश सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड ने चौथा मुकदमा दायर कर मांग की कि बाबरी मस्जिद और उसके आस-पास की जमीन कब्रगाह घोषित की जाए।

- १ फरवरी १९८६ को जिला न्यायाधीश फैजाबाद ने एक अपील पर निर्णय दिया कि गर्भ गृह तक दर्शन के लिए विवादित भवन के दोनों दरवाजों पर लगा ताला खोल दिया जाए।

- इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश देवकीनंदन अग्रवान ने श्रीराम जन्म स्थान को देवतुल्य मानकर रामलला विराजमान को स्वयं वादी बनाते हुए १ जुलाई १९८९ को जिला अदालत में पाँचवां मुकदमा दायर किया।

-१० जुलाई १९८९ को फैजाबाद की जिला अदालत में चल रहे मुकदमों की उच्च न्यायलय की लखनऊ पीठ में सुनवाई शुरु हुई।

- फरवरी १९९६ में मुकदमे के मुद्दों का दुबारा निर्धारण हुआ।

- २३ जुलाई १९९६ में लखनऊ बेंच की विशेष पीठ में सुनवाई शुरु हुई।

- २६ जुलाई २०१० को सुनवाई पूरी हुई।

- ३० सितम्बर २०१० को इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ खंड पीठ ने निर्णय सुनाया।

दूरभाष — 02969 221451

ॐ

आदर्श शिक्षण संस्थान जालोर मुख्यालय भीनमाल

की ओर से

पाथेय कण के श्री **रामजन्म भूमि विशेषांक** प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक शुभ कामनाएँ

जिला – जालोर – हमारे विद्या मन्दिर एक दृष्टि में

विद्यामन्दिरों की संख्या – 27
संस्कार केन्द्र – 7
आचार्य/आचार्या – 254
भैया/बहिन – 6367

ॐ उच्च माध्यमिक – 1
माध्यमिक – 7
उच्च प्राथमिक – 9
प्राथमिक – 4
पूर्व प्राथमिक – 5
सेवा मन्दिर – 1
प्रस्तावित – 5

डॉ. श्रवण कुमार मोदी — संरक्षक
भेरूपाल सिंह — अध्यक्ष
ज्ञान चन्द कांकरिया — उपाध्यक्ष
भंवरलाल कानूनगो — व्यवस्थापक
रतनलाल अग्रवाल — कोषाध्यक्ष
किशनाराम विश्नोई — सचिव

धर्म के लिये जिएँ, समाज के लिये जिएँ
ये धड़कनें, ये श्वांस हो, मातृभूमि के लिए

प्रज्ञा, राजकीय महाविद्यालय के सामने, भीनमाल – 343029

दीपावली पर श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाएँ

भारतीय शिक्षा प्रचार समिति, टोंक

कार्यालय : गीता मन्दिर, जयपुर रोड़,
टोंक (राज)334001 दूरः (01432)245178

ग्रामीण वि.म.	नगरीय वि.म.	प्राथ.वि.म.	उ.प्रा.	माध्य.	उ.मा.	योग
23	22	15	14	15	1	45

वि.मा.स्तर	भैया	बहिन	योग	आचार्य	आचार्या	योग
शिशु वाटिका	1220	757	1977	23	47	70
प्राथमिक	3097	1804	4901	121	70	191
उ.प्राथमिक	2027	1102	3129	101	31	132
माध्यमिक	1281	531	1812	61	16	77
उ.माध्यमिक	42	-	42	03	03	03
कुल योग	7667	4194	11861	309	164	473

अनु.जाति	अनु.जन. जाति	अन्य पिछड़ा	मुस्लिम	संस्कार केन्द्र
1429	1182	6002	183	16-413

डॉ. रामेश्वर शर्मा — अध्यक्ष
कर्ण सिंह खत्री — मन्त्री
महेश कुमार शर्मा — जिला प्रमुख

कार्यालय नगरपालिका, शाहपुरा जिला भीलवाड़ा

-: नागरिकों से अपील :-

☑ घर का कचरा अपने घर में डिब्बे में रखें एवं सफाई कर्मचारी के सफाई के वक्त कचरा गाड़ी में डालकर घर–घर कचरा संग्रहण योजना में सफल बनावें।

☑ शहरी जन सहभागी योजना के तहत अपने वार्ड/मोहल्ले में करवाये जाने वाले विकास कार्यों में सहयोग करें।

☑ पालिका के स्वीकृत ले–आऊट प्लान में ही भूखण्ड खरीदें तथा नक्शा स्वीकृत करा निर्माण करावें।

☑ पॉलिथीन के बैग के स्थान पर कागज, कपड़े या जूट की थैलियों का उपयोग करें।

☑ सरकारी /सार्वजनिक भवनों पर पोस्टर, नारे, विज्ञापन, बैनर आदि लगा कर उनके स्वरूप को नहीं बिगाड़े।

आइये, आप हम मिलकर शहर को स्वच्छ,
सुन्दर व हरा-भरा शहर बनाने में सहयोग करें

प्रेमचन्द शर्मा
(अधिशासी अधिकारी)
मोबा. 9468535336

रघुनन्दन सोनी (अध्यक्ष)
मोबा. 9413356751

एवं समस्त पार्षदगण, पालिका परिवार, शाहपुरा
फोन (01484) 222212

निर्णय पर देश के प्रमुख लोगों की प्रतिक्रियाएं

हमारी सनातन आस्था का अनुमोदन

श्रीराम जन्मभूमि पर प्रयाग उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्ड पीठ का निर्णय आने के पश्चात प्रमुख लोगों ने अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं। यहाँ इन में से कुछ प्रमुख लोगों की प्रतिक्रियाएं प्रस्तुत की जा रही हैं –

''इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अच्छा निर्णय दिया है। इससे परस्पर वार्ता का मार्ग खुलेगा तथा साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित होगा।''

पूज्य शंकराचार्य, जयेन्द्र सरस्वती महाराज, कांची

''अयोध्या विषयक उच्च न्यायालय के निर्णय से यह सिद्ध हो गया कि श्रीराम जन्मभूमि वही है। सभी को इसका सम्मान करना चाहिए।''

पूज्य शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद, द्वारिका पीठ

''फैसले से मुझे बहुत शांति मिली। जो हुआ अच्छा हुआ और आगे भी अच्छा होगा। इस फैसले से बड़ी और सुखद घटना मेरे जीवन में और कोई नहीं हो सकती।''

भास्कर दास, निर्मोही अखाड़ा

''यह केवल आस्था ही नहीं बल्कि साक्ष्यों पर आज की न्यायिक व्यवस्था ने भी यह स्वीकार किया है कि यह श्रीराम जन्मभूमि है। यह भूमि हिन्दुओं के लिए पूज्य है। इसलिए इस पूरी भूमि को ही न्यायालय ने देवता माना है , दिव्य स्थान माना है। यह एक बड़ी बात है।''

सुरेश राव जोशी (भैयाजी), सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ

''देशभर में छद्म सेकुलरों को न्यायालय के निर्णय का सम्मान करते हुए श्रीरामजन्मभूमि को बाबरी मस्जिद या विवादित ढांचा कहना बंद कर देना चाहिए।''

श्री अशोक सिंहल, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, वि.हि.प.

''विहिप अदालत के फैसले का स्वागत करती है। अदालत ने सर्वसम्मति से कहा है कि श्री राम की पूजा होती रहेगी।''

डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया, *अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव, विहिप*

''हाईकोर्ट का फैसला हमारी उम्मीद से अलग है। फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील करेंगे।''

जफरयाब जिलानी, संयोजक, बाबरी एक्शन कमेटी

''मुझे देश की जनता और महान राष्ट्र की सहिष्णुता, भाईचारे

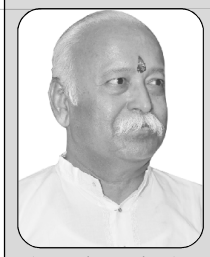

'' श्रीराम जन्मभूमि को लेकर चलते आए न्यायिक विवाद में प्रयाग उच्च न्यायालय द्वारा ३० सितम्बर २०१० को घोषित निर्णय से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तथा उनकी जन्मभूमि अयोध्या के प्रति भारत के जनमानस की सनातन आस्था को अनुमोदित व सम्मानित किया है। इसलिए निर्णयकर्ता न्यायाधीशों का, न्यायिक प्रक्रिया में सहभागी अधिवक्ताओं का, श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन का नेतृत्व करने वाले सभी संतों का, आंदोलन करने वाली जनता सहित सभी सहयोगियों का हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। उस आस्था की प्रतिष्ठापना के लिए चले श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन में अपने प्राणों का बलिदान देने वाले कोठारी बंधुओं जैसे सभी कारसेवकों की पवित्र व तेजस्वी स्मृति में हम अपनी श्रद्धावनत आदरांजलि अर्पण करते हैं।

मंदिर का निर्माण इस देश की पहचान, अस्मिता, स्वातंत्र्याकांक्षा तथा विजिगीषा का गौरव है। अपने इस भारतवर्ष की सनातन, सर्वसमावेशक, सबके प्रति आत्मीय व सहिष्णु संस्कृति के आचरण की मर्यादा के मानक श्रीराम हैं। श्रीराम मंदिर निर्माण का आंदोलन किसी वर्गविशेष के विरोध अथवा प्रतिक्रिया में नही है।

अतएव श्रीरामजन्मभूमि पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण की प्रकिया का मार्ग प्रशस्त करने वाले न्यायालय के इस निर्णय को समाज के किसी वर्ग की विजय अथवा पराजय के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। अपने हर्ष को संयमित, शांन्तिपूर्ण, विधि व संविधान की मर्यादा में ही, अकारण उत्तेजना से बचते हुए समझदारी से व्यक्त करना चाहिए। राष्ट्रीय संस्कृति की सहिष्णुता व सर्वसमावेशकता की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए, पुरानी घटनाओं को भूलकर, एक भव्य व पवित्र लक्ष्य के आधार पर, अनेक भौगोलिक, भाषिक व पांथिक विविधताओं से सुशोभित अपने समाज को एकात्मता व मर्यादा के दृढ़ सूत्र में गूँथकर भेदरहित बनाने का यह अवसर मिला है। इसीलिये इस अवसर पर इस देश के मुसलमानों सहित अपने समाज के सभी वर्गों को हमारा हार्दिक तथा आत्मीयतापूर्ण आवाहन है कि गत दशकों में चले अनेक विवादों की कटुता, हृदयों की विषमता व असहजता को भूलकर न्यायालय के निर्णय का स्वागत करते हुए श्रीरामजन्मभूमि पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण की संवैधानिक व व्यावहारिक व्यवस्थाएँ निर्माण करने के अभियान में मिलजुलकर सहयोगी बने।''

मोहन राव भागवत,

सरसंघचालक , रा.स्व.संघ

और धर्मनिरपेक्षता की परम्परा पर पूरा भरोसा है। कुछेक शरारती तत्व हैं जो समाज को विभाजित करने की कोशिश करते हैं । ऐसे लोगों से सतर्क रहने की जरुरत है।''

मनमोहन सिंह, *प्रधानमंत्री*

''हाईकोर्ट के फैसले के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है क्योंकि विवादित स्थल और उसके आसपास की ६७ एकड़ जमीन केन्द्र सरकार के अधिग्रहण में है।''

मायावती, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

''अयोध्या पर फैसले से राष्ट्रीय एकता और धार्मिक सौहार्द का एक नया अध्याय शुरू होगा। इससे मंदिर का मार्ग प्रशस्त हुआ है।''

लालकृष्ण आडवाणी,वरिष्ठ नेता भाजपा

''मैं निर्णय का स्वागत करता हूँ। मुसलमानों से मैं निवेदन करता हूँ कि इस निर्णय के पश्चात वे आगे बढ़कर मंदिर निर्माण में सहयोग करें।''

कल्याण सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

''जहाँ तक अयोध्या जन्मभूमि विवाद का जजमेंट आया है। इस बात की खुशी है कि इस जजमेंट से भव्य राममंदिर बनाने का रास्ता प्रशस्त हुआ है।''

नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री, गुजरात

''यह एक अभूतपूर्व घटना है क्योंकि रामजन्म स्थल को कानून की मान्यता दी गई है। विश्व की यह पहली घटना है जब किसी धार्मिक स्थल को कानूनी मान्यता मिली हो''

उमा भारती, पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

''हिंदू -मुस्लिम समुदाय को अदालत के फैसले का सम्मान करना चाहिए। अगर किसी को अदालत के फैसले पर आपत्ति है वह सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकता है।'

बाबा रामदेव, योग गुरु

''यहाँ तक मैंने फैसला देखा-सुना है उसके मुताबिक यह फैसला बहुत ही अच्छा है। हिंदू मुसलमान दोनों को इस फैसले से खुश होना चाहिए। इस फैसले ने रामलला को जहां वे स्थापित हैं वहीं रहने दिया है तथा मुस्लिमों को भी उनका हक दिया है।''

एम.के.धर, पूर्व अधिकार, आई बी

''हाई कोर्ट की विशेष पीठ का फैसला स्वागत योग्य है। जमीन के मालिकाना हक को लेकर जो थोड़ा-बहुत संशय था वह कोर्ट के फैसले से दूर हो गया। अब विश्वास हो गया है कि मेरे ही जीवनकाल में श्रीराम मंदिर का भव्य निर्माण हो सकेगा।''

महंत अवैद्यनाथ, राम मंदिर निर्माण उच्चाधिकारी समिति के अध्यक्ष

''इस निर्णय को सभी को स्वीकार करना चाहिए। कहीं भी कोई संशय, दुविधा या किसी भी प्रकार के दृष्टिकोण को पुनः निरूपित या प्रदर्शित करने की आवश्यकता हो तो सर्वोच्च न्यायालय जाने का अधिकार देश के प्रत्येक नागरिक को है।''

अतुल अंजान, राष्ट्रीय सचिव, सीपीआई

''हाईकोर्ट के फैसले का पूरी तरह से अध्ययन करने की जरूरत है। फैसले के स्वरूप पर सवाल उठ सकते हैं। इसलिए इसका और अध्ययन किया जाना चाहिए। वैसे, इस विवाद को सुप्रीम कोर्ट ही सुलझा सकता है।''

प्रकाश करात, माकपा पोलित ब्यूरो

''यह फैसला बिल्कुल आस्था के आधार पर दिया गया है। इससे तो यह तय होना चाहिए था कि स्वामित्व किसका है। इसमें किसी भी कानून का जिक्र नहीं है। देश पर आस्था राज्य करेगी या कानून। यह बहुसंख्यकों के आस्था के दबाब में दिया गया फैसला है।''

पुष्पेन्द्र पंत, प्रोफेसर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय

''ये फैसला बैलेंसिग एक्ट है। मस्जिद का बंटवारा नहीं हो सकता। मुस्लिम भाई सब्र करें, हम सुप्रीम कोर्ट जाएंगे।''

कासिम रसूल इलियास, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड

''हमारे रहनुमाओं को बदलते मुस्लिम मानस को भी पढ़ना चाहिए और इस सवाल का जवाब ढूंढना चाहिए कि इस बार गुस्सा सड़कों पर क्यों नही फूट पड़ा''

मौलाना खालिद रशीद , लखनऊ

''देश भर के मुसलमान फैसले को लेकर हालांकि नाराज हैं, लेकिन उन्हें सुप्रीम कोर्ट में चुनौती किए जाने का इंतजार है।''

मौलाना हबीबुर्रहमान, पंजाब

''इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ विशेष पीठ के फैसले के मद्देनजर मुस्लिम समुदाय संयम बरते। अभी उच्चतम न्यायालय के दरवाजे खुले हैं। कानूनी लड़ाई अंतिम क्षणों तक लड़ी जायेगी।''

-सैयद अहमद बुखारी, शाही इमाम, दिल्ली जामा मस्जिद

Mo.-9414506690

शुभ दीपावली

श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

राजेन्द्र भादू

वार्ड नं. १४, बीकानेर रोड़, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

WITH BEST COMPLIMENTS FROM 9414085121

Chandra Ram

H.R. JEWELLERS

Holmark Jewelleri

Khajanchin Bazar , Hishar (Hariyana)

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

मुस्लिम समाज पूर्वजों की गलती न दुहराये

–परमश्रद्धेय ब्रह्मलीन श्री रामसुखदास जी महाराज

ब्रह्मलीन श्री रामसुखदास जी महाराज के प्रति समाज के लोगों में अगाध श्रद्धा थी। वे वास्तविक अर्थों में एक सन्यासी थे। श्रीरामजन्मभूमि पर स्थित विवादित ढांचा ध्वस्त होने के बाद उन्होंने मुस्लिमों, सरकार एवं हिन्दू समाज से एक अपील की थी, जो मासिक 'कल्याण' के मार्च १९९३ के अंक में प्रकाशित हुई। पूज्य महाराज जी की यह अपील आज भी प्रासंगिक है, अतः इस विशेषांक में इसे समाहित किया जा रहा है –सं०।

अपने निजस्वरूप प्यारे मुसलमान भाइयों से आदरपूर्वक प्रार्थना है कि यदि आप अपने आदरणीय पूर्वजों की गलती को स्थायी रूप से नहीं रखना चाहते हैं तथा अपनी गलत परम्परा को मिटाना चाहते हैं तो जिनकी जो चीज है, उनको उनकी चीज सत्कारपूर्वक समर्पण कर दें और अपनी गलत परम्परा को, बुराई को मिटाकर सदा के लिये भला रहना स्वीकार कर लें। आप लोगों ने मन्दिरों को तोड़ने की जो गलत परम्परा अपनायी है, इसमें आपका ज्यादा नुकसान है , हिन्दुओं का थोड़ा। यह आपके लिये बड़े कलंक का, अपयश का काम है।

आपके पूर्वजों ने मन्दिरों को तोड़कर जो मस्जिदें खड़ी की हैं, वे इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि मुसलमानों के राज्य में क्या हुआ ? अतः वे आपके लिये कलंक की, अपयश की निशानी हैं। अब भी आप उसी परम्परा पर चल रहे हैं तो यह कलंक को स्थायी रखना है। आप विचार करें, सभी लोगों को अपने-अपने धर्म, सम्प्रदाय आदि का पालन करने का अधिकार है। यदि हिन्दू अपने धर्म के अनुसार मन्दिरों में मूर्तिपूजा (मूर्ति में भगवान की पूजा) करते हैं तो इससे आपको क्या नुकसान पहुँचाते हैं? तलवार के जोर पर हिन्दू धर्म का प्रचार किया ?उल्टे हिन्दुओं ने अपने यहाँ सभी मतावलम्बियों को अपने-अपने मत, सम्प्रदाय पालन करने, उसका प्रचार करने का पूरा मौका दिया है। इसलिये यदि आप सुख-शान्ति चाहते हैं, लोक-परलोक में यश चाहते हैं, अपना और दुनिया का भला चाहते हैं तो अपने पूर्वजों की गलती को न दुहरायें और गम्भीरतापूर्वक विचार करके अपने कलंक को धो डालें।

सरकार से भी आदरपूर्वक प्रार्थना है कि आप थोड़े समय के अपने राज्य को रखने के लिये ऐसा कोई काम न करें, जिससे आप पर सदा के लिये लाञ्छन लग जाय और लोग सदा आपकी निन्दा करते रहें। आज प्रत्यक्ष में राम भी नहीं है और रावण भी नहीं है, युधिष्ठिर भी नहीं है और दुर्योधन भी नहीं है, परंतु राम और युधिष्ठिर का यश तथा रावण और दुर्योधन का अपयश अब भी कायम है। राम और युधिष्ठिर अब भी लोगों के हृदय में राज्य कर रहे हैं तथा रावण और दुर्योधन तिरस्कृत हो रहे हैं। आप ज्यादा वोट पाने के लोभ से अन्याय करेंगे तो अपका राज्य तो सदा रहेगा नहीं, पर आपकी अपकीर्ति सदा रहेगी। यदि आप एक समुदाय का अनुचित पक्ष लेंगे तो दूसरे समुदाय में स्वतः विद्रोह की भावना पैदा होगी, जिससे समाज में संघर्ष होगा। इसलिये आपको वोटों के लिये पक्षपातपूर्ण नीति न अपनाकर सबके साथ समान न्याय करना चाहिये और निर्लोभ तथा निर्भीक होकर सत्य का पालन करना चाहिये।

अन्त में अपने निजस्वरूप प्यारे हिन्दू भाइयों से आदरपूर्वक प्रार्थना है कि यदि मुसलमान भाइयों की कोई क्रिया आपको अनुचित दीखे तो उस क्रिया का विरोध तो करें, पर उनसे वैर न करें। गलत क्रिया या नीति का विरोध करना अनुचित नहीं है, पर व्यक्ति से द्वेष करना अनुचित है। जैसे, अपने ही भाई को संक्रामक रोग हो जाए तो उस रोग का प्रतिरोध करते हैं, भाई का नहीं। कारण कि भाई हमारा है , रोग हमारा नहीं है। रोग आगन्तुक दोष है, इसलिये रोग द्वेष्य है, रोगी किसी के लिये भी द्वेष्य नहीं है। अतः आप द्वेष भाव को छोड़कर आपस में एकता रखें और अपने धर्म का ठीक तरह से पालन करें, सच्चे हृदय से भगवान् में लग जाएँ तो इससे आपके धर्म का ठोस प्रचार होगा और शान्ति की स्थापना भी होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ
02925-224471
M-9414702484

हरे कृष्णा ट्रेडिंग कम्पनी

जनरल मर्चेन्ट व कमीशन एजेन्ट

बी-२२ कृषि उपज मण्डी, फलोदी३४२३०१ जोधपुर(राज.)

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ
M-9982401321

रामानन्द ट्रेडिंग कम्पनी

किराणा, अनाज के थोक व्यापारी, कमीशन एजेन्ट व आढती

कृषि उपज मण्डी, फलोदी३४२३०१ जोधपुर(राज.)

R.S.T. No. 1931/00317
C.S.T. No. 1931/00317
R.T.L. No. 155
Tn No. 08492600271

S.T.D. 02925
(M) 222061
(O) 223900
9414418339
9414827515

सुनील एण्ड कम्पनी

SUNIL & COMPANY

चावल, गुड़, शक्कर, अनाज, व किराणा के थौक व्यापारी

ए-११ कृषि उपज मंडी, फलोदी-३४२३०१ जोधपुर (राज.)

S. K. Purohit
(M) 94140-69217

ELECTRICALS

CRI PUMPS

R. A. Sharma Electricals

V-6, Chameli Wala Market,
M.I. Road, Jaipur-302001
Tel 0141-2371724, 2361394, 2371217

PIONEER
Leadership Through Technology

Ashok Kumar Hundia

HE GROUP

HUNDIA ENTERPRISES

CLOTH DYEING & PRINTING WORKS

E-135, IInd Phase, Ind. Estate, BALOTRA-344022 (Raj.)
(02988) Ph Fact. 220861 (R) 220308 (M) 9414107695

ॐ

Jhjke tUeHkwfe fo'ks"kkad ds izdk'ku
,oa rhikRlo dh gkfnZd 'kqHkdkeuk;sa

शुभ दीपावली

अतुल पटेल

मोबा.9829065901

गोविन्द के.जी.वी.संघ
ए.११८ शॉपिंग सेन्टर,
सुभाष नगर जयपुर

ॐ

श्री रामजन्म भूमि विशेषांक के प्रकाशन पर
पाथेय कण के पाठकों को दीपोत्सव की

हार्दिक शुभकामनाएँ

आदर्श शिक्षा समिति सिरोही

(विद्या भारती जोधपुर प्रान्त)

जिले में आदर्श विद्या मन्दिर

माध्यमिक	उच्च प्राथमिक	प्राथमिक	योग
07	11	02	20

इनमें शंकर विद्यापीठ अंग्रेजी माध्यम का आवासीय विद्या मन्दिर

नि:शुल्क विद्या मन्दिर

एकल	संस्कार केन्द्र	योग
03	09	12

भैया बहिनों की संख्या

भैया	बहिन	योग
6335	2298	8633

आचार्य-आचार्या संख्या

आचार्य	आचार्या	योग
264	57	321

रा.स्व.संघ के कार्यकारी मण्डल के प्रस्ताव

गत २९,३० तथा ३१ अक्टूबर को जलगांव (महाराष्ट्र) में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकारी मण्डल की बैठक हुई। बैठक में सभी प्रान्तों व क्षेत्रों के संघचालक, कार्यवाह तथा प्रचारक एवं राष्ट्रीय दायित्व वहन करने वाले कार्यकर्ता भाग लेते हैं। संगठनात्मक विचार-विमर्श के अतिरिक्त कार्यकारी मण्डल ने तीन प्रस्ताव भी पारित किये। सभी प्रस्ताव यहाँ दिये जा रहे हैं -(सं.)

प्रस्ताव -१

जम्मू-कश्मीर का विलय पूर्ण तथा अन्तिम, स्वायत्तता की बात देशद्रोह

अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल कश्मीर घाटी की हिंसक स्थितियों से निपटने के केन्द्र व राज्य सरकार के तौर-तरीकों पर गंभीर अप्रसन्नता व्यक्त करता है। स्वाधीनता उपरान्त से ही कश्मीर घाटी के पृथकतावादी नेताओं की पीठ थपथपाने की चली आ रही गलती को सरकार पुनः दोहरा रही है। सर्वाधिक गंभीर चिंता का विषय कश्मीर समस्या के प्रति केन्द्र सरकार का ढुलमुल दृष्टिकोण है। आज से पूर्व कभी भी केन्द्र सरकार राज्य सरकार की बचकाना हरकतों, पृथकतावादियों एवम् उनके छद्म बौद्धिक समर्थकों के राष्ट्रविरोधी अभियानों तथा कश्मीर समस्या के अनावश्यक अंतर्राष्ट्रीयकरण के प्रयासों के समक्ष इतनी अशक्त व निष्प्रभावी प्रतीत नहीं हुई थी। स्पष्टतः देशद्रोह का संदेश देने वाले विश्वासघाती भाषण सरकार की नाक के नीचे बिना किसी रोक-टोक के दिये जा रहे हैं।

कार्यकारी मण्डल इस तथ्य को पुनः रेखांकित करना चाहता है कि गिलगिट, बाल्टिस्तान,मुजफराबाद, मीरपुर और अक्साई चिन सहित संपूर्ण जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय महाराजा हरिसिंह द्वारा २६ अक्टूबर, १९४७ के समझौते पर हस्ताक्षर द्वारा ही पूर्ण व अंतिम तौर पर हो गया था और इस पर २७ अक्टूबर १९४७ को भारत के गर्वनर जनरल माउंटबेटन द्वारा भी मुहर लगा दी गई थी। पचास के दशक से होने वाले विभिन्न सफल जनतांत्रिक चुनावों ने इस विलय पर जनता की मुहर भी लगा दी है। नवम्बर,१९७४ के इंदिरा गांधी-शेख अब्दुल्ला समझौते ने राज्य के विलय संबंधी किसी भी विवाद को सदैव के लिए समाप्त कर दिया था।

अ.भा.का.मं. पुनः दुहराता है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है और तथाकथित आजादी अथवा जनमत संग्रह की माँग देशद्रोह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। आजादी पाक समर्थक पृथकतावादियों व इस्लामी कट्टरपंथियों का एक छलावा मात्र है।

अ.भा.का.मं. जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री द्वारा विधानसभा में दिये गए उस वक्तव्य पर भी कड़ी आपत्ति व्यक्त करता है, जिसमें उन्होंने कहा था कि जम्मू-कश्मीर का कभी भी भारत में विलय नहीं हुआ था। अपनी अपरिपक्वता व अक्षमता के चलते उन्होंने राज्य को हिंसा के दावानल में झोंक दिया है। अपनी वोट बैंक की राजनीति के चलते उन्होंने हिंसा को कठोरता से दबाने की बजाय उसे फैलने दिया। अनेक अवसरों पर अपने वक्तव्यों के माध्यम से मुख्यमंत्री ने राज्य के ही सुरक्षा बलों के विरुद्ध वातावरण बनाने का काम किया। अब वे मुखर होकर पृथकतावादियों तथा उनके पाकिस्तानी आकाओं की भाषा बोल रहे हैं और जिस प्रकार केन्द्र सरकार के वरिष्ठ मंत्री मुख्यमंत्री के रवैये की भर्त्सना करने के स्थान पर उनका समर्थन करते दिख रहे हैं, उससे देश की अखण्डता की कीमत पर अपनी क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थसिद्धि का उनका खेल उजागर होता है। कार्यकारी मण्डल उनके इस रवैये से स्तब्ध है।

अ.भा.का.मं. को दुःख के साथ कहना पड़ता है कि कश्मीर घाटी के पृथकतावादी नेताओं को ही राज्य का प्रतिनिधि माना जाता है जबकि राज्य की व्यापक आबादी भारत समर्थक एवम् देशभक्त है। इस व्यापक जनमत में देशभक्त मुसलमान, कश्मीरी पंडित, सिख, शिया, पहाड़ी, लद्दाख के बौद्ध, राज्य के गूजर एवम् बकरवाल तथा लाखों विस्थापित, जिन्हें ६० साल के बाद भी राज्य की नागरिकता प्राप्त नहीं हुई है, ऐसे सभी लोग तथा जम्मू क्षेत्र की जनता शामिल है। कार्यकारी मण्डल भाारत सरकार से आग्रह करता है कि वह जनता के उन सभी हिस्सों, विशेषकर कश्मीरी पंडित तथा पाक अधिकृत व पश्चिम पाकिस्तान के शरणार्थियों के साथ वार्ता करे, जिन्होंने पृथकतावादियों व आतंकवादियों की अनेक यातनाएँ सहने के बाद भी अपने देश का साथ नहीं छोड़ा। दुर्भाग्य से अभी तक का अनुभव यही दर्शाता है कि विभिन्न सरकारों द्वारा पृथकतावादियों को ही महत्व दिया गया और दूसरी तरफ देशभक्त तत्वों की सदैव उपेक्षा की गई।

कार्यकारी मंडल इस बात पर क्षोभ व्यक्त करता है कि विगत दिनों कश्मीर में सर्वदलीय प्रतिनिधिमण्डल की यात्रा के दौरान भी जिन पृथकतावादी नेताओं को मान्यता नहीं दी जानी चाहिए थी, उन्हें ही अत्यंत महत्व दिया गया। भारत समर्थक देशभक्त नागरिकों की बात सुनने के लिए इन नेताओं के पास समय ही नहीं था।

अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल सरकार को स्मरण कराना चाहता है कि घाटी में विगत दो दशकों के दौरान हमारे सुरक्षा बलों के शौर्यपूर्ण प्रयासों के परिणामस्वरूप ही वहाँ पृथकतावादियों व

प्रस्ताव – २

महामना मालवीय जी की एक सौ पचासवीं जयंती

पौष कृष्ण अष्टमी, विक्रम सम्वत् १९१८ (२५ दिसम्बर ई.सं-१८६१) को जन्मे महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की १५० वीं जयंती पर उनका पुण्य-स्मरण करते हुए अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल अत्यंत आनंद का अनुभव करता है। मालवीय जी महान् राष्ट्रभक्त, स्वतंत्रता सेनानी, विख्यात शिक्षाविद्, अनेक समाचार पत्रों के सम्पादक, कुशल अधिवक्ता तथा वक्तृता के धनी थे। महान गोभक्त, श्रीकृष्ण जन्मस्थान मन्दिर निर्माण के प्रणेता तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक मालवीय जी ने अनेक स्थानों पर गोशालाओं, पाठशालाओं तथा मुमुक्षु आश्रमों की स्थापना कराई।

पच्चीस वर्ष की आयु में कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में सभी को मंत्रमुग्ध कर देने वाले व्याख्यान से उन्होंने अपनी राजनीतिक यात्रा प्रारम्भ की। वे चार बार कांग्रेस के अखिल भारतीय अध्यक्ष रहे और उन्होंने बारह वर्षों तक हिन्दू महासभा का भी नेतृत्व किया। गाँधी जी ने उन्हें सदैव ज्ञान के महासागर तथा अपने आध्यात्मिक गुरु जैसा मान दिया।

दसवीं की पढ़ाई पूर्ण करते ही अध्यापन-कार्य अपनाने को बाध्य मालवीय जी ने आगे चलकर देश की शिक्षा को हिन्दुत्व की स्वर्णिम आभा से मण्डित किया और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बीस वर्षों तक कुलपति भी रहे। महामना की संकल्पना में विश्वविद्यालय का उद्देश्य 'धर्म और नीति ' को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाकर युवकों के चरित्र का निर्माण करना रहा। उनका विश्वास था कि धर्म ही चरित्र का निश्चित आधार एवं आनन्द का स्रोत होता है। इस हेतु उन्होंने संस्कृत शिक्षण को महत्व देने के साथ ही विश्वविद्यालय परिसर में गीता-प्रवचन की परम्परा प्रारम्भ की, जो आज भी अक्षुण्ण है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में निर्मित काशी विश्वनाथ मन्दिर के द्वार पर लिखा ' हिन्दूनां मानवर्धनः' ही सदैव उनके जीवन का उद्देश्य रहा ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री गुरुजी इसी विश्वविद्यालय के छात्र एवं शिक्षक रहे। उस समय उन्हें मालवीय जी का सान्निध्य एवं स्नेह प्राप्त हुआ। मालवीय जी के आशीष से ही विश्वविद्यालय परिसर में संघ कार्यालय बना और संघ कार्य को उनका आशीर्वाद भी मिलता रहा।

यह एक विलक्षण मणिकांचन योग ही था कि वे सर्वग्राह्य राजनेता और महान् शिक्षाविद् के कीर्तिकलश के रूप में एक साथ सर्वमान्य हो गये। शिक्षा-जगत तथा समाज सेवा के अपने संकल्प को पूर्ण करने के लिए सन् १९११ से उन्होंने अपनी सुस्थापित वकालत को हमेशा के लिए त्याग दिया। तत्पश्चात् संन्यस्त परम्परा के अनुरूप उन्होंने भिक्षावृत्ति के व्रत का आजन्म पालन किया। किन्तु चौरीचौरा कांड में १७७ स्वतंत्रता सेनानियों की फाँसी की

उग्रवादियों के पाँव उखड़ गए हैं। हमारे लगभग ५००० सुरक्षा कर्मियों ने इनके विरुद्ध संघर्ष में अपना बलिदान किया है। ये सुरक्षाकर्मी सारी विपरीत परिस्थितियों के उपरान्त आज भी पृथकतावादियों के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखे हुए हैं। परन्तु उन्हें समर्थन व शक्ति प्रदान करने के स्थान पर अपनी ही सरकार, कुछ बुद्धिजीवी व मीडिया का एक भाग उन्हें खलनायक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा है।

तथाकथित मानवाधिकार उल्लंघन के निराधार आरोपों की आड़ में सुरक्षा बलों के मनोबल को गिराने के इन प्रयासों की अ.भा.का.मं. कड़ी भर्त्सना करता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जिस 'इतफिदा उग्रवाद' का सहारा आज पृथकतावादी ले रहे हैं, वह उसी आतंकवाद की बदली हुई रणनीति है, जिसका प्रयोग वे शुरु से कर रहे हैं। चाहे वह १९४७-४८ का कबाईली हमला हो या १९६५,१९७१ और १९९९ के युद्ध हों या ९० के दशक का आतंकवाद तथा छद्म युद्ध हो अथवा पत्थर फेंकने वाले आंदोलनकारी आतंकवाद का वर्तमान स्वरूप हो, ये सभी हमारे पड़ोसी देश द्वारा घाटी में प्रयोग किये जाने वाले आतंकवादी हथकंडों के ही भिन्न-भिन्न रूप हैं। हाल के दिनों में ही घाटी में पत्थर मारने की घटनाओं में ३००० से अधिक सुरक्षाकर्मी घायल हो गए हैं। इनमें से अनेक की स्थिति गंभीर है। पत्थर फेंकने वाले आतंकवादी आन्दोलन में पृथकतावाद का एक ऐसा क्रूर व अमानवीय चेहरा सामने आता है जिसमें नेता निर्दोष बच्चों को सामने रखते हुए उन्हें बलि का बकरा बनाते हैं।

अ.भा.का.मं. सशस्त्र सैन्यबल विशेष अधिकार अधिनियम (AFSPA) समाप्त करने की मांग को देश की सुरक्षा के लिए खतरनाक परिणाम देने वाला मानता है। जम्मू-कश्मीर एक ऐसा संवेदनशील राज्य है जहां पाक प्रायोजित आतंकवादी गतिविधियाँ निरंतर चल रही हैं और इस कारण वहाँ सशस्त्र सैन्य बलों की गतिविधियाँ सतत बने रहना अपरिहार्य है। अतएव यह आवश्यक है कि इन विशेष परिस्थितियों से निबटने के लिए हमारे सुरक्षा बलों को पर्याप्त अधिकार हों। विशेष सशस्त्र बल अधिनियम ऐसा ही एक प्रावधान है अतः इसे हटाया नहीं जा सकता है। जहां एक तरफ प्रधानमंत्री सहित पूरी सरकार पृथकतावादियों को प्रसन्न करने के लिए इस अधिनियम को हटाना चाहती है, वहीं सशस्त्र सेना के शीर्ष स्तर से ऐसे हर प्रयास का विरोध किया गया है।

कश्मीर का समाधान ढूंढ रहे मध्यस्थों के उन वक्तव्यों व क्रियाकलापों की भी कार्यकारी मण्डल कठोर निंदा करता है, जिनसे

➢ सजा सुनकर वे पुनः एक बार न्यायालय में प्रस्तुत हुए और १५६ स्वतंत्रता सेनानियों को फाँसी से मुक्त करा दिया।

अस्पृश्य और अन्त्यज कहे जाने वाले हिन्दुओं को हिन्दू समाज का अभिन्न अंग मानते हुए उन्हें सम्मान दिलाने हेतु उनके लिए मन्त्रदीक्षा, शिक्षा-व्यवस्था आदि उद्यमों हेतु रूढ़िवादियों के विरोध के उपरान्त भी वे सफलता पूर्वक कार्य करते रहे। अपने आत्मीय सम्बन्धों तथा विश्वसनीयता के आधार पर वे डॉ. अम्बेडकर जी को पूना समझौते पर सहमत करने में सफल रहे।

स्वदेशी का उनका व्रत वस्तु,विचार , व्यवहार , भाषा और उद्योगों के साथ-साथ स्वसंस्कृति के जीवन मूल्यों के प्रति भी आस्थावान था। मालवीय जी ने गो-मुख से गंगासागर तक गंगा के प्रवाह को अवरुद्ध किये जाने का तीव्र विरोध किया और अंग्रेजी शासन को बाध्य होकर गंगा की अविरल धारा को संरक्षित करना पड़ा।

तुष्टीकरण की राजनीति के सर्वथा विरोधी रहे मालवीय जी ने १९१६ के 'लखनऊ समझौते' में मुसलमानों को प्रदत्त 'पृथक मतदाता मण्डल' तथा बाद में १९२० के दशक के प्रारंभ के' 'खिलाफत आंदोलन' में कांग्रेस की भागीदारी का भी विरोध किया। सन् १९४२ में उन्होंने गाँधी जी को सावधान किया था कि 'देश की स्वतंत्रता का सौदा देश-विभाजन से न किया जाए'।

सन् १९४६ में कोलकाता और नोआखाली में हिन्दुओं पर हुए भीषण अत्याचारों का समाचार सुनकर उनका करुण हृदय विदीर्ण हो उठा। उन्होंने हिन्दू समाज से संगठित होकर आतताइयों का मुकाबला करने का आग्रह किया। यही दुःख उनके प्राणान्त का कारण भी बना।

अन्तिम समय में स्वयं की जीवन-मुक्ति न चाहकर वे राष्ट्र और विश्वविद्यालय के लिए पुनर्जन्म की आकांक्षा रखते थे।

संक्षेप में कहा जाये तो वे राजनीतिज्ञ होते हुए भी राजनीति से ऊपर थे। वे धर्म के प्रकट समर्थक एवं रूढ़िवादिता के विरोधी तथा आधुनिकता एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के समर्थक थे। स्वदेशी के प्रणेता तथा स्वावलम्बी भारत के लिए दृढ़प्रतिज्ञ और प्राचीन साहित्य की युगानुकूल व्याख्या के प्रतिपादक थे। उनका जीवन दृढ आस्थावान एवं संकीर्णताओं से परे था। वे समाज के लिए भिक्षुक-प्रवर एवं निजी जीवन में महादानी थे।

अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल केन्द्र एवं राज्य सरकारों से आग्रह करता है कि वे महामना की १५० वीं जयंती मनाते हुए इस निमित्त उनकी जीवनी को पूर्व की भाँति पुनः पाठ्यक्रम में सम्मिलित करें एवं उनके द्वारा हिन्दू जीवन मूल्यों व आदर्शों के आधार पर स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की मौलिकता उसी रूप में संरक्षित करें।

अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल महामना मदन मोहन मालवीय जी को अपनी विनम्र भावांजलि अर्पित करता है। साथ ही स्वयंसेवकों तथा समस्त देशवासियों से आग्रह करता है कि महामना के श्रेष्ठ और कर्ममय जीवन से प्रेरणा लेकर नवीन पीढ़ी के निर्माण-हेतु संकल्पबद्ध हों और उनके लेखों, भाषणों एवं जीवन प्रसंगों से अनुप्राणित होकर हिन्दू जीवन-मूल्यों को अपने जीवन में आचरित एवं समाज में स्थापित करें।

इन मध्यस्थों की सतही समझ उजागर होती है। मध्यस्थों के कुछ वक्तव्य संसद के १९९४ में कश्मीर पर पारित सर्वसम्मत प्रस्ताव का स्पष्ट उल्लंघन करने वाले हैं। इन मध्यस्थों के पास न तो दृष्टि और विशेषज्ञता है और न ही वैधानिक मान्यता क्योंकि, इन्हें संसद या देश की मान्यता अथवा जनादेश प्राप्त नहीं है। मध्यस्थों का यह समूह खुल्लमखुल्ला पृथकतावादियों व पाकिस्तान के पक्ष में कार्य कर रहा है और अंततः राष्ट्रीय हितों को गंभीर क्षति पहुँचा रहा है । ऐसे महत्वपूर्ण व संवेदनशील कार्य के लिए पूर्वाग्रह-ग्रस्त व्यक्तियों का चयन केन्द्र सरकार ने किया है, उससे कश्मीर समस्या के प्रति उसके गैर जिम्मेदाराना दृष्टिकोण का पता चलता है। कार्यकारी मण्डल इस दृष्टिकोण की कड़ी भर्त्सना करते हुए इस मध्यस्थ समूह को तत्काल भंग करने की माँग करता है।

अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल का यह सुविचारित मत है कि केन्द्र सरकार विदेशी दबावों के आगे झुक रही है और घाटी में पृथकतावादी शक्तियों के पक्ष में वातावरण तैयार करने का प्रयास कर रही है। अनेक मंत्रियों द्वारा जम्मू-कश्मीर समस्या का राजनैतिक समाधान ढूँढने संबंधी वक्तव्य कश्मीर को अधिक स्वायत्तता प्रदान करने का ही छद्म प्रयास है। ऐसा वातावरण तैयार करने के लिए ही वे सर्वदलीय प्रतिनिधि मण्डल जैसे सभी मंच, मध्यस्थ समूह और राजनैतिक प्रतिष्ठान के भी कुछ व्यक्तियों का उपयोग कर रहे हैं।

अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल दोहराता है कि हमारे प्रयासों की दिशा संविधान की आत्मा और १९९४ में संसद द्वारा पारित सर्वसम्मत प्रस्ताव के आधार पर जम्मू-कश्मीर के पूर्ण विलय की पुनः पुष्टि ही होनी चाहिए न कि स्वायत्तता अथवा १९५३ से पूर्व की स्थिति की दिशा में ले जाने वाली ।

अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल सरकार को चेतावनी देता है कि जम्मू-कश्मीर को और पृथक करने के किसी भी प्रयास का राज्य के देशभक्त नागरिकों सहित समस्त देशवासियों द्वारा कड़ा प्रतिरोध किया जाएगा। कार्यकारी मण्डल सभी राजनीतिक दलों का आवाहन करता है कि अपने मतभेदों से ऊपर उठकर वे यह सुनिश्चित करें कि सरकार जम्मू-कश्मीर समस्या के संदर्भ में व्यापक राष्ट्रीय हितों के साथ कोई समझौता न करे। कार्यकारी मण्डल समस्त देशवासियों का आवाहन करता है कि वे जम्मू-कश्मीर समस्या के राजनैतिक समाधान व स्वायत्तता के नाम पर देश की एकता व अखण्डता को विनष्ट करने वाले इन कुत्सित प्रयासों को समझें तथा उन्हें सफल न होने दें। स्वायत्तता देश के एक और विभाजन की पृष्ठभूमि तैयार करने का ही दूसरा रूप है, जिसे देश कभी स्वीकार नहीं करेगा।

प्रस्ताव – ३

विश्ववंद्य कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की डेढ़ सौ वीं जयन्ती पर नमन

अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल का मानना है कि कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी के विचारों और जीवन प्रसंगों का स्मरण समाज में स्वत्वबोध जगाने के लिए आज भी अत्यंत उपयुक्त है।

७ मई १८६१ (बांगला सन् १२६८,२५ वैशाख) को कोलकाता में जन्मे रवीन्द्रनाथ सुप्रतिष्ठित ठाकुर परिवार के देवेन्द्रनाथ के सुपुत्र थे। अपनी उत्तुंग और बहुमुखी प्रतिभा तथा समाजहित को समर्पित जीवन के कारण वे पिछली शताब्दी में भारत के समाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक पुनरुत्थान के कालखंड में दीपस्तंभ के रूप में उभरे। उनका साहित्य और चिंतन भारत के सनातन, शाश्वत मूल्यों के अडिग धरातल पर खड़ा था तथा उनका जीवन भी उसी की अभिव्यक्ति था।

राम और लक्ष्मण जैसे महापुरुषों के बारे में शुद्ध भाव और श्रद्धा के साथ विचार करने की बात उन्होंने रखी। साथ में यह भी कहा कि एक प्राचीन देश के इतिहास प्रवाहित समग्र विचार के सामने नतमस्तक न होना औद्धत्य एवं लज्जा का विषय है। धर्म को आधारभूत मानकर राष्ट्र खड़ा करने के छत्रपति शिवाजी के प्रयास और उनके त्याग व समर्पण का उन्होंने अत्यंत गौरवशाली वर्णन किया तथा सिख गुरुओं व बंदा बैरागी के भी बलिदानों का उन्होंने गौरवपूर्ण शब्दों में वर्णन किया।

उनके निबंध राष्ट्रवादी विचारों से ओतप्रोत हैं- जैसे-धर्म शब्द की संकल्पना 'रिलीजन' की संकल्पना से भिन्न है तथा 'रिलीजन' यह धर्म शब्द का अनुवाद नहीं हो सकता है ; हमारी राष्ट्र की संकल्पना 'नेशन' की यूरोपीय संकल्पना से भिन्न है और यूरोपीय संकल्पनाओं और भावों से प्रभावित शब्द एवं परिभाषा अपने देश में अप्रासंगिक है; भारत के मुसलमानों तथा ईसाइयों की पहचान (Identity) हिन्दू ही है; हमारी अवनति के लिए हम स्वयं ही उत्तरदायी हैं- क्योंकि अपना देश सम्प्रदाय, प्रादेशिकता व भाषाओं की विविध अस्मिता से भरा हुआ है परन्तु दुर्भाग्य से विविधता ही संकुचितता के रूप में समझी गयी; स्पृश्य-अस्पृश्य व जातिगत ऊँच-नीच की भावना से हम ग्रस्त हैं, इत्यादि । भारत के इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता को भी उन्होंने कई प्रसंगों पर अधोरेखित किया है।

गीत और संगीत के क्षेत्र में एक नया पर्व प्रारंभ करने वाले रवीन्द्रनाथ जी के संगीत में भी देशभक्ति का स्थायी भाव रहा है। गीत, संगीत, नाटक, काव्य, निबन्ध आदि साहित्य की सारी विधाओं का उपयोग उन्होंने समाज जागरण के लिए प्रभावी ढंग से किया। स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत तत्कालीन राष्ट्रवादी जनता को इन विचारों ने प्रेरित किया था। यह उनकी भविष्यदर्शी प्रतिभा का ही प्रमाण है कि आज भी देश में मूलगामी वैचारिक बहस में यही सारे विषय उभर कर आ रहे हैं।

वर्ष १९०१ में भारतीय आश्रम शिक्षा व्यवस्था के आधुनिक रूप में उन्होंने 'शान्ति निकेतन' प्रारम्भ किया। आगे चलकर देश की कई प्रतिभाएँ यहाँ से शिक्षित हुईं। स्वामी विवेकानंद की शिष्या बनकर आयी मार्गरेट नोबल को उन्होंने अग्निकन्या निवेदिता के नाम से संबोधित किया, इस अभिधान को बाद में स्वामी विवेकानन्द ने भी स्वीकार कर के स्थापित कर दिया। निवेदिता के स्त्री शिक्षा के प्रयासों का उन्होंने समर्थन किया।

लॉर्ड कर्जन के बंगाल विभाजन के विरुद्ध चले बंग-भंग विरोधी आंदोलन ने पूरे देश में चेतना की लहर फैलायी थी। १६ अक्टूबर,१९०५ को श्री रवीन्द्रनाथ के नेतृत्व में कोलकाता में मनाया गया रक्षाबन्धन उत्सव, इस आंदोलन के प्रारम्भ बिंदुओं में से एक सिद्ध हुआ। इसी आंदोलन ने भारत में स्वदेशी आंदोलन का सूत्रपात किया। स्वदेशी के वैचारिक पक्ष का रवीन्द्रनाथ जी के लेखन में अत्यंत प्रभावी प्रतिपादन मिलता है। इसके बाद कांग्रेस अधिवेशन में वंदे-मातरम् का गान उन्होंने स्वयं किया था।

वर्ष १९१२ में प्रकाशित, वेदों व उपनिषदों के चिन्तन को प्रकट करने वाले उनके काव्य संग्रह 'गीतांजलि' को वर्ष १९१३ में मिला नोबल पुरस्कार प्रसिद्ध ही है। यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम भारतीय के रूप में उनका नाम इतिहास में लिखा जाएगा। स्वाधीनता के पश्चात् अपने संविधान ने जिसे राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया उस जन-गण-मन गीत के रचयिता भी रवीन्द्रनाथ हैं। जलियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध स्वरूप उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त नाईट हुड की उपाधि लौटा दी। सांप्रदायिक आधार पर विधान-मण्डल के लिए अलग सीटों के आरक्षण का उन्होंने कड़ा विरोध किया। आचार्य जगदीशचंद्र बसु को विदेश जाने की व्यवस्था करने के लिए त्रिपुरा के राजा से लेकर कई व्यक्तियों से उन्होंने धन संग्रह किया।

ऐसे विचार और व्यवहार में एकरूप जीवन के कारण ही महात्मा गाँधी सहित भारत के उस समय के कई नेताओं ने उन्हें अपने प्रेरणा स्रोत के रूप में माना और महात्मा गाँधी ने उन्हें 'गुरुदेव' की उपाधि से विभूषित किया।

अ.भा.का.मं. देश की जनता का आवाहन करता है कि स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर की १५० वीं जयन्ती के निमित्त उनके विशुद्ध राष्ट्रवादी विचारों को देश में प्रभावी बनाने के लिए उनके विचार और जीवन का पुनः स्मरण करें। q

सूचना

जो महानुभाव पाथेय कण के वर्ष १९९२,९३ एवं ९४ में आजीवन सदस्य बने थे उनकी आजीवन सदस्यता (पन्द्रह वर्षीय) का कार्यकाल पूरा हो गया है तथा १९९५ में बने सदस्यों का कार्यकाल पूरा होने वाला है। अतः ऐसे पाठक जिन्होंने अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करवाया है, वे आजीवन सदस्यता शुल्क १,०००/- के स्थान पर मात्र ७००/-भेजकर नवीनीकरण कराने की कृपा करें। *प्रबन्ध संपादक*

श्रीरामजन्मभूमि विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

MARVEL PAPER (P) LTD.

AUTHORISED STOCKIST:

HINDUSTAN PAPER CORPN. LTD.
SHREYANS INDUSTRIES LTD.

(Manufactures of high quality Writing and Printing Paper Suitable for Books, Exercies Note Book High Quality Printing Warks)

203, 2nd Floor, City Centre,
Sansar Chandra Road, Jaipur Ph. : # 0141-3919203

अयोध्या में भव्य श्रीरामजी का

मंदिर बने ऐसी
माँ लक्ष्मी जी से
प्रार्थना करते हैं

भरत मालानी

९-१०, यादव कालोनी, गायत्री नगर
अजमेर राड़, ब्यावर

eksck.9414010777

{dÚm^ravr {MmpS>àg§K

{dÚm^ravr {MmpS>àg§K H$s ñWmnZm {dÚm{W©`m| H$s Amdí`H$Vm Mpa{Ì H$s Jwùm H$s {dH$mg H$aZo H$s ^mdZm Ho$ gmW H$s JB© Wr& {dÚmb` H$s Jwùm H$s {dH$mg H$s {bE g§MmbZ 11 {Obm| Ho$ 56 _ÊS>b, 87 Cn _ÊS>b, 67 àmÝV, 215 {dÚmb` h¢, 2,632 AmMm`© Ed§ 73,386 N>mÌ h¢& AÜ`mnZ H$m ñVa CÀM h¡& 210 {dÚmb` 137 ...

àg§J _| Xoe^a Ho$ {dÚmb` M b aho h¢& 122 {dÚmb` _| 145 N>mÌ 6 AmMm`© AÜ`mnZ H$aVo h¢&

H$m`© ~¡R>H$m| _| 9, 3, 6, 3, 8, 10, 3, 2, 3, 6 N>mÌ 10 ... ñWmZ àmá {H$`m h¡& 10 ... A{^^mdH$ ... 15 ... 3, ... 15 ... àmá {H$`m h¡&

प्रो. रमेश चन्द्र शर्मा
अध्यक्ष

राम प्रकाश बंसल
मंत्री

ÂæÍðØ ·¤‡æ (Âæçÿæ·¤)
·ð¤ âÖè ÂæÆU·¤ô´ ·¤ô ÎèÂæßÜè ·¤è
ãæçÎü·¤ àæéÖ·¤æ×Ùæ°¢

रामेश्वर खण्डेलवाल

संरक्षक

श्री बलराम सत्संग मंडल ट्रस्ट (रजि) जयपुर

उपाध्यक्ष

1. विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र
2. योग क्षेत्र सेवा न्यास राजस्थान
3. श्री रामनन्द सन्त सेवा न्यास गलता घाटी जयपुर

ट्रस्टी

1. श्री रामानन्द आश्रम, गोवर्धन
2. श्री राम तपस्थल प्राचीन राममंदिर ब्रह्मपुरी (हरिद्वार)

अध्यक्ष

1. भारतीय शिक्षा समिति जयपुर प्रान्त
2. विद्याभारती जनशिक्षा न्यास राजस्थान
3. भारतीय जन सेवा प्रतिष्ठान राजस्थान
4. श्री बलराम भारतीय शिक्षा समिति
5. श्री बलराम दास जी जन्मशताब्दी समारोह समिति
6. श्री आमण माता सेवा समिति
7. श्री आमेरिया चैरीटेबिल ट्रस्ट जयपुर

दीपोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाओं सहित

इन्दर सिंह बागावास

बागावास केमीकल इण्डस्ट्रीज

एफ–१६५ रीको औद्योगिक क्षेत्र ब्यावर –३०५६०१

ऑफिस.– 01462-226220
मोबा.– 94140-10125
फैक्स - 01462-226025

सुरेश चन्द्र गोयल

अध्यक्ष-धौलपुर स्टोन गैंगसा एसोसियेशन 9799363804

श्रीराम जन्म भूमि विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सुरेश चन्द्र गोयल 9799363804 | पंकज गोयल 9414945373 | राहुल गोयल 9928816301

माँ वैष्णोदेवी गेंगसा इन्डस्ट्रीज

बाड़ी रोड़ बसेड़ी धौलपुर

महेश जिन्दल मोबा 9929496594
रमेश चन्द्र 9414879187

कृष्णा गेंगसा इन्डस्ट्रीज

नादनपुर मोड़, बाड़ी रोड़, बसेड़ी (धौलपुर)

बद्री प्रसाद गोयल मोबा 9928053981
मुन्ना लाल गोयल 9829404926

कैला देवी गेंगसा इन्डस्ट्रीज
कैला देवी इन्टरप्राइजेज

बाड़ी रोड़, बसेड़ी (धौलपुर)

राम अवतार गोयल मोबा 9950439525

पिन्क स्टोन इन्डस्ट्रीज

नादनपुर मोड़, बसेड़ी धौलपुर

संजय जायसवाल मोबा 9899394639
निष्णु सिंहल 9928199336

बसेड़ी स्टोन इन्डस्ट्रीज

नादनपुर मोड,बाड़ी रोड़, बसेड़ी (धौलपुर)

मुकेश चन्द्र गर्ग मोबा 9166952944
गिर्राज किशोर सिंहल 9462352197

बर्फानी स्टोन गेंगासा इन्डस्ट्रीज

नादनपुर मोड़, बसेड़ी धौलपुर

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Padam Jain

P.K.J.& CO.

Chartered Accountents

2203 'B' oberoi, Mohan Gokhale Road
Goregaon (Eeast) Mumbai 400063

हार्दिक शुभकामनाएँ

Mob. 9829073097
Ph. 01462-226478,226878

कैलाश चन्द मून्दड़ा

केसर सदन
आदर्श नगर, अजमेर रोड़, ब्यावर,
जिला अजमेर (राजस्थान)

प्रेस वक्तव्य

संघ को बदनाम करने का षड्यन्त्र– राम माधव

केन्द्र सरकार द्वारा 'हिन्दू' और 'भगवा' को आतंकवाद के साथ जोड़कर बदनाम करने की साजिश को रोकने के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देशभर में धरने देने का निर्णय किया। इसी क्रम में गत ८ नवम्बर को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री राम माधव जयपुर आये थे। उन्होंने भारती भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में निम्न वक्तव्य जारी किया था (स.)

गत ३१ अक्तूबर को जलगांव (महाराष्ट्र) में संपन्न हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने १० नवम्बर को केन्द्र सरकार द्वारा बदले की भावना और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए चलाए जा रहे 'हिन्दू' और 'भगवा' आतंकवाद के दुष्प्रचार के खिलाफ राज्य मुख्यालयों और जिला मुख्यालयों पर राष्ट्रव्यापी धरनों के अयोजन का निर्णय लिया था।

विगत कुछ समय से सत्ताधारी दल की ओर से कुछ नेता आतंकवाद को हिन्दुओं के साथ जोड़कर हिन्दू विरोधी और संघ विरोधी अफवाहों को हवा दे रहे हैं। इसी के साथ हिन्दू संतों का अपमान और हिन्दू संगठनों पर झूठे और बेबुनियाद आरोप लगाने का बेहूदा और भद्दा कार्य भी सिर्फ इसीलिए किया जा रहा है कि राष्ट्रवादी और देशभक्तों की ओर से आ रही चुनौतियों को दबाया जा सके।

हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज में चरित्र, अनुशासन और राष्ट्रवाद के जागरण का काम कर रहा है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पिछले ८५ वर्षों में राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। जहाँ तक आतंकवाद की बात है संघ सदा से ही 'सभी प्रकार के आतंकवाद' के प्रति असहिष्णु रहा है । चाहे वह जेहादी, माओवादी पूर्वोत्तर के विद्रोही, कश्मीरी या किसी अन्य प्रकार का आतंकवाद हो। अपनी इस नीति के कारण ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं ने जम्मू कश्मीर, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु और पूर्वोत्तर राज्यों में अपना बलिदान दिया है। यह विडंबना ही है कि कुछ स्वयंभू राजनीतिज्ञों द्वारा आतंकवाद के शिकार लोगों को ही आतंकवाद फैलाने का अपराधी बताया जा रहा है।

अजमेर ब्लास्ट में ए टी एस राजस्थान द्वारा फाइल की गई चार्जशीट में देवेन्द्र गुप्ता के अलावा पकड़े गए अभियुक्तों को गलत तरीके से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यकर्ता बताया जा रहा है। इसी प्रकार श्री इन्द्रेश कुमार को भी एक घटिया षड़यंत्र के तहत इस प्रकरण में घसीटा गया है। यहां तक कि चार्जशीट में ना तो उनके खिलाफ कोई सबूत ही प्रस्तुत किया गया है और न ही कोई निश्चित आरोप ही लगाया गया है।इससे यह साबित होता है कि इंद्रेश कुमार को किसी बेहूदे राजनीतिक षड़यंत्र में फंसाया जा रहा है, जिससे उनकी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिष्ठा को धूमिल किया जा सके।

यह भी गौर करने लायक तथ्य है कि जैसे ही चार्जशीट फाइल की गई राजस्थान सरकार और कांग्रेस पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं ने गैरजिम्मेदाराना तरीके से श्री इंद्रेश कुमार के खिलाफ अनर्गल बयानबाजी शुरू कर दी। जिसकी परिणति अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा संघ को कलंकित करने वाले प्रस्ताव के साथ हुई। इसके अलावा इन लोगों ने हिन्दू और भगवा आतंकवाद का भी हौव्वा खड़ा करने की कोशिश की। इन लोगों का नेतृत्व केन्द्रीय गृहमंत्री श्री पी.चिदम्बरम कर रहे हैं , जिन्होंने कुछ माह पूर्व भी भगवा आतंकवाद को हौव्वा खड़ा किया था।

अतः इन सभी बातों से हमें विश्वास हो गया है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को बदनाम करने और हिन्दुत्व के आंदोलन को कुचलने के लिए एक राजनीतिक षड़यंत्र रचा जा रहा है। सभी जानते हैं कि वोट पिपासु राजनीतिज्ञों का यह पुराना खेल है। हर बार अल्पसंख्यकों के वोट लेने के लिए ये राजनीतिज्ञ संघ को अल्पसंख्यकों का विरोधी घोषित करने से बाज नहीं आते।

आज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अन्य संगठनों द्वारा उत्पन्न किया गया हिन्दू आंदोलन राष्ट्रद्रोहियों और हिन्दू विरोधी ताकतों के गले में फांस बन गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक इन ताकतों का मुकाबला करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं । हाल ही में हुए अमरनाथ आंदोलन, तिरुपति देवस्थान आंदोलन और रामसेतु आंदोलन में इन स्वयंसेवकों की भूमिका को समाज ने भली प्रकार से देखा भी है।

हमें यह कहते हुए बहुत दुःख है कि हमारी सरकार अरुंधती राय और गिलानी जैसे नक्सली लुटेरों और जहर उगलते देशद्रोहियों के खिलाफ तो असहाय है लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे राष्ट्रवादी संगठन को प्रताड़ित करने के लिए तत्पर है।

पूरा देश राजनीति के इन षड़यंत्रों को अच्छी प्रकार से समझता है। राजनीतिक सत्ता को बनाए रखने के लिए ये राजनीतिज्ञ लगातार राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा कर रहे हैं। गत ६० वर्षों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर इन लोगों ने कई बार असफल हमले किये हैं। लेकिन समाज से प्राप्त आदर, विश्वास और प्रेम के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हर बार और अधिक ताकतवर होकर सामने आया है। हम सबने यह भी देखा है कि देश की जनता ने हर बार इन षड़यंत्रकारियों को बेरहमी से सबक सिखाया है। हमें यह पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू आंदोलन को बदनाम करने के लिए रचा गया यह षड़यंत्र भी पिछले षड़यंत्रों की तरफ विफल हो जाएगा और षड़यंत्रकारियों को उनके कुकृत्यों की कीमत चुकानी पड़ेगी। q

SUDHA HOSPITAL
& MEDICAL RESEARCH CENTRE PVT. LTD.

11-a, Talwandi,
Jhalawar Road,
Kota-324005
Ph. (O) 0744-301001-05
99297-86611

Ý yarb mO r Ed§ Ý yarg O@

- AIIMS ZEQXebr H$Ý yarbm{O Ò H$gdm{hE
- H$B¶ yabM@EEG, NCV, EMH
- n¥WH$ Ý yarb mO r dm{S>bH$Sm-ebm_aO _pñVîH$Áda, H$Sm_Ed§ {_JIJH$ad{`mH$b E
- Ý yarg O@H$Amm{VH$ Z gdm{hE

` yarb mO r

- Xya-rZ Ûam àm{ñQ>QH$Am n aeZ (T.U.R.P.)
- JXH$ nVaI H$ (P.C.N.I.) VHZH gAm naeZ
- ` yaQ>H$ nVaI H$ Xya-rZ Ûam Am naeZ
- {b Wm{Q>g

OZab Ed§ àm{ñQ>H$ gO@

- Xya-rZ Ûam Ur b ãbS>a, Ep{ÝS>g, h{Z©m Ed§ ~ƒ Xmzr H$ Am naeZ VWm AÝ g^r OZab gO@H$gdm{hE

- NDVH and LAVH Ûam d^ra@ H$ Am naeZ

ß brñQ>H$ gO@

- g_ñV H$ñ_{Q>H$ Ed§ ßbmñQ>H$ gO@H$ gdm{hE

OZab _{S>g Z Ed§ Z o\$m b m O r

- Sh{~Q>O ad{`mH$ gåbyO©{O Ed§ {S>Mm{bH$
- Jh@ad{`m{H$bS>b{V g H$ gdm{hE
- AÝ g^r~_m{a`mH$ \$Q>{e` Z Ûam Om©{Ed§ _ame©

Ap{Wam}

- Z{b S§, ß b S Ed§ {H$ b o[JH$ gdm{hE
- Ob S>Ë ramU H$ gdm{hE

àg{V Ed§ ramoJ

- 24 KÊQ>m g m Y m aU VWm {Q>ob ngdH$ gdm{hE
- S>EÊS>g H$ gdm{hE
- {Z g§VmZ Xån{Îm H$ Om Ed§ {M{H$Ëgm

{e e w amoJ

- ZdOmV{ee wh Z{M{H$Ëgm B H$B© (NICU)
- ~ƒ m H$ Q>r ©H$ gdm{hE

_Zmamo J Ed§ Z e m_w{© ({de bk

- m_Z{M{H$Ëgm H$ (H.H.B.A.S.), ZEQXebr
- Ze m_w{© e am, A\$r_, ñ_H$ JQ>H$ Ar{X
- gÕg gå~ÝYr H$ _Z mamJ H$ gg{V d ÚOm

Ë dMm {M{H$Ëgm

- AËm{YwZH$ {Ìd H$ Ur goar {d, {S>OmB©, {d^m{J

M_© Ed§ m{Z amo J {M{H$Ëgm (Skin & V.D.)

n ¡Wm o b m O r {d^m J Ed§ Medical I.C.U.

- ñm{VVMa EÊS>A{S> m{g~

- AmYw{ZH$ _erZ Ûam ñ_m H$ gr. Q>r. ñH$¡Z
- गेस्टोस्कोपी एवं कोलोनोस्कोपी

n¡Wm o b m O r {d^m J

- Fully Autoanaliser Ûam hmoZH$ OmM
- Chernolusence {d{Y Ûam Harmons H$ OmM

Audiometry Facilities

Diabetic Foot Care Centre

AN ISO 9001 : 2000 HOSPITAL

आपात कालीन सेवाएँ २४ घण्टे उपलब्ध

सुविधाएं
öX amoJ

- AÝ`mo{Ö ßbmñQ>r H$s gw{dYm CnbãY
- 24 KÊQ>o B©.gr.Or. gO@H$ gdm{hE
- 24 KÊQ>o E{ÝOÁm m{ñQ>H$ Ed§ EH$ mo nõ mmñQ>r H$s gdm{hE

1.	öX amoJ	S>m. amOrd {Ob-DM, S>m. _whå_X Ur-b
2.	öX eë` {M{H$Ëgm	S>m. E_.E. {M{V-M. Ch.
3.	OZab Ed§ àm{ñQ>H$ gO@	S>m. Aam`H$ A. Jmoëb-MS, S>m. H$O.Xn_m-MS
4.	H$Z - ZmH$ Ed§ Jbm	S>m. Aam`H$ e_m@MS, S>m. _Zf _bV-MS
5.	Ý yarg O@	S>m. H$_Ur[ae_m@M.Ch
6.	Ý yarb mO r	S>m. {XbrnH$ _mhída-DM
7.	Z o\$m b m O r	S>m. m{S>H$ H$ gO@-DM
8.	Ap{Wam	S>m. nr.H$ {d[eÌ-MS
9.	àgy{V Ed§ ramoJ	S>m. g{dVm A. Jmoëb-MBBS, S>m. Ob{hmam{MV-MS
10.	a{S>`mbm{O	S>m. b{bV e am dV
11.	{e e w amoJ	S>m. Z{V {Ob-MD, S>m. g{Zvh ÊS>odmb-MD
12.	EÊS>m{H«$Zmbm{O	S>m. A{_ b Oma-DM
13.	_Z amoJ	S>m. E.nr. gwßVm-MD
14.	M_© amoJ	S>m. amOrd OZ-MD, S>m. abD.da_m-MD
15.	XÝV amoJ	S>m. í d{V H$gm-BDS
16.	{\${O`moWoam{n	S>m. g{«\$b B©H$m-B.Ph.

श्रद्धांजलि

राजस्थान की कार्यवाहिका सुदेश जी मलिक नहीं रहीं

गत ३ नवम्बर को जब लोग दीपावली की तैयारियों में उत्साह से जुटे हुए थे और धन-तेरस की खरीददारी कर रहे थे, समाज जीवन को एक आघात लगा। महिलाओं को संगठित कर राष्ट्रोत्थान के कार्य में लगी राष्ट्र सेविका समिति की उत्तर पश्चिमांचल की सहकार्यवाहिका तथा राजस्थान की कार्यवाहिका श्रीमती सुदेश मलिक का इस दिन प्रातः ११ बजे निधन हो गया। वे ७२वर्ष की थी तथा काफी समय से अस्वस्थ चल रहीं थी। पन्द्रह दिनों से तो वे कृत्रिम श्वास पर थी।

वर्ष १९७४ में पहली बार राष्ट्र सेविका समिति का नाम सुना। उसी समय पता लगा कि महिलाओं में 'हिन्दुत्व' के आधार पर संगठन का पुनीत कार्य चल रहा है। जयपुर में उस समय पहली बार सुदेश मलिक जी से साक्षात्कार हुआ। वे और स्व. आशा जी पलनिटकर सेविका समिति के कार्य की धुरी थीं। दुर्दैव से अब दोनों ही इस दुनिया में नहीं हैं। आपात-स्थिति के समय वर्ष १९७५ में जो ऐतिहासिक सत्याग्रह हुआ उस समय उनकी ऊर्जा और विलक्षण कार्य-क्षमता को बड़े नजदीक से देखा। उस समय भी वे सम्पूर्ण राजस्थान का राष्ट्र सेविका समिति का काम देख रहीं थी। संघर्ष और कठिनाइयों से उनका साथ जन्म के समय से ही हो गया था।

उनका जन्म मुल्तान जिले के खानेवाल(अब पाकिस्तान में) में सन् १९३८ में हुआ। नौ साल की छोटी सी आयु में ही विभाजन की भीषण विभीषिका का सामना उन्हें करना पड़ा। उनका पूरा परिवार मीलों पैदल चल कर दंगाइयों से बचते हुए अपना सब कुछ छोड़ कर बड़ी कठिनाई से दिल्ली पहुँचा। आजीविका के लिये बच्चों सहित पूरा परिवार परिश्रम करता था। बच्चों की पढ़ाई भी गली में लगे रोशनी के खम्भे के नीचे तथा पुस्तकालयों से प्राप्त पुस्तकों से ही हो पाती थी। इन्हीं संघर्षों में सुदेश जी ने बी.ए. उत्तीर्ण किया। सन् १९६० में उनका विवाह संघ के प्रचारक रहे श्री राधाकृष्ण मलिक से हुआ और वे जयपुर आ गई।

जयपुर में ही वे राष्ट्र सेविका समिति के कार्य से जुड़ी। १९६८ में जयपुर नगर में सेविका समिति का संगठन खड़ा करने का दायित्व उन्हें मिला। सेविका समिति की स्थापना करने वाली वंदनीय मौसी जी से उनका निकट का सम्पर्क था। जयपुर आगमन पर वे मलिक जी के घर पर ही हमेशा रुकती थी। आपात-काल में सत्याग्रह के सफल संचालन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपात स्थिति हटते ही उन्हें राजकीय सेवा में शिक्षिका के रूप में आने का प्रस्ताव मिला जिसे स्वीकार कर वे अध्यापिका हो गई। १९९६ में सेवानिवृति के बाद वे पूरी तरह सेविका समिति को समर्पित हो दत्त-चित्त से संगठन के प्रसार में जुट गईं। उनकी कर्मठता सामाजिक कार्यों में लगे प्रत्येक कार्यकर्ता के लिये प्रेरक थी। उसी कर्मठता से अपने काम में समर्पित भाव से जुटे रहना ही उनकी स्मृतियों को आदरांजलि होगी।

पाथेय-कण की ओर से कर्मठता की प्रतिमूर्ति सुदेश ताई जी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

Mob. 98290 10175

श्रीराम जन्म भूमि विशेषांक के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

मोहन लाल गुप्ता

(विधायक किशन पोल,जयपुर)

ई-१०२ए जनपथ, शास्त्री नगर जयपुर

नव वर्ष एवं दिपावली की हार्दिक
शुभकामनाओं सहित

खण्डेलवाल मिनकेम

निर्माता क्वार्टस, फेल्सपार पाऊडर
एफ-18 रिको III फेस
अजमेर रोड़, ब्यावर(राजस्थान)

- राजेन्द्र खण्डेलवाल
- अजय खण्डेलवाल

मो.97844 23800, 9414010557

दीपो ज्योति परमज्योति दीप ज्योति जनार्दनः
द्वेष बुद्धि विनाशाय दीपः ज्योति नमो नमः

राष्ट्रीय पर्व दीपावली की दीपमालाएं सभी के जीवन में ज्ञान का आलोक प्रकाशित करते हुये राष्ट्र में एकता, अखण्डता, सामर्थ्य शक्ति, सुख, समृद्धि, समरसता का संचार हो।

व्यापार मंडल श्री विजयनगर

इन्द्रजीत विलन्दी अध्यक्ष	गुरुदीप सिंह खिण्डा महासचिव	देवेन्द्रपाल सिंह व.उपाध्यक्ष
राम चन्द्र दुआ कोषाध्यक्ष	सुरेश कुमार मुंजाल सचिव	प्रवीण कुमार मिढ़ा उपाध्यक्ष

अग्निर्ज्योति रविश्चन्द्रः विद्युदग्निश्च तारकः
सर्वेषाम् ज्योतिषाम् ज्योति दीपावल्यैः नमोनमः

दीप महोत्सव पर आप सबको हार्दिक शुभ कामनाएं। आपके परिवार में सुख समृद्धि भरपूर बनी रहे। व्यापार में वृद्धि हो। इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ

व्यापार संघ श्री विजयनगर

दिलीप कुमार विश्नोई अध्यक्ष	रतनलाल सोमाणी महासचिव	महावीर लखोटिया व.उपाध्यक्ष
कालुराम लेघा कोषाध्यक्ष	भंवर लाल लखोटिया सचिव	महावीर चाण्डक उपाध्यक्ष

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Shanti lal Jagetia

Tele Fax :0141-2280816
Phone :0141-2282432(R)

- *Nitin Pharma*
- *Shivam Enterprises*
- *Nidhi Enterprises*
- *Mangalam Associates*

H-77/A, Jakeshwar marg, behind tambi petrol Pump
Bani Park, Jaipur-3020016

श्रीराम जन्म भूमि विशेषांक
के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

नानक देव टैन्ट हाउस

लेखराज जेसवानी

पार्षद वार्ड नं.50
जयपुर नगर निगम
318, सिंधी कॉलोनी, राजापार्क, जयपुर

Ph. 3210213,3210214

श्रीराम मंदिर निर्माण राष्ट्र की सभी समस्याओं का समाधान है

'क्या राम लला ऐसे ही रहेंगे या फिर भव्य मंदिर में विराजेंगे !' पक्तियां भव्य मंदिर निर्माण के लिए हिन्दू समाज का आह्वान करती हैं।

–जशोदा एम.गर्ग, *केरू(जोधपुर)*

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि राष्ट्रीय गौरव, अस्मिता एवं स्वाभिमान की प्रतीक है। मुख पृष्ठ देखने पर भी आभास हुआ कि मंदिर का निर्माण अभी शेष है।

–मूलाराम लेघा' *जसनगर(जोधपुर)*

मुख पृष्ठ पर आपने चित्रों का बहुत ही सटीक संयोजन किया है। ध्वस्त ढांचा,तम्बू में रामलला और उसके बाद प्रस्तावित मंदिर प्रगति का संकेत देने वाले हैं।

–गोपाल सैकड़ा, *दौसा*

१६ सितम्बर अंक के मुख्य पृष्ठ पर तम्बू में रामलला देखकर वेदना हुई। ध्वस्त ढ़ांचे के मलबे और उत्खनन में प्राचीन मंदिर के अवशेष मिलने के बाद भी अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण में व्यवधान क्यों !

–हुकम चन्द चौधरी, *सपोटरा(करौली)*

आमुख कथा में आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है क्योंकि रामलला की प्रतिष्ठा

साभारः राजस्थान पत्रिका

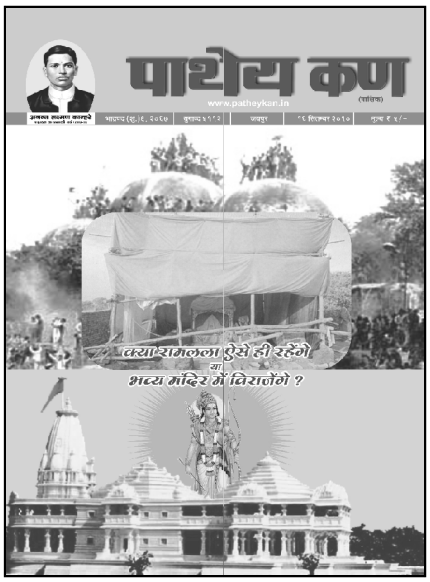

भारत की प्रतिष्ठा है।

–कालूदास वैष्णव, *पीलादर(उदयपुर)*

लोकतांत्रिक राष्ट्र में आजादी के ६४ वर्ष बाद भी श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर नहीं बन पाना देश की कमजोरी दर्शाता है।

–देवकी नन्दन शर्मा, *भगेगा(सीकर)*

आमुख कथा में भावी पीढ़ी के सामने प्रश्न खड़ा किया गया है तथा राष्ट्र की सभी समस्याओं के समाधान के लिए श्रीराम मंदिर निर्माण में सहयोग की अपेक्षा की गई है।

–कमलेश कुमार गुर्जर, *न्यारा(अजमेर)*

श्रीरामलला के ताले तो खुल गये किन्तु अब भी वे तम्बू में हैं अतः शीघ्र ही मंदिर का निर्माण होना चाहिए।

–आस्था जाकड़, *दौसा*

तुष्टीकरण के मार्ग पर अमरीका

अमरीका के भारत विरोधी रुख के कारण ही हमारे साधु-संतों का वहाँ अपमान होता रहा है। भारत को इसे ध्यान में रख कर नीति बनानी होगी।

– वीरमाराम पटेल, *ढीमड़ी (बाड़मेर)*

अमरीका में 'जीरो ग्राउण्ड' पर कुरान जलाने की धमकी पर भारत सरकार ने निंदा कर अमरीका की चापलूसी व मुस्लिम तुष्टीकरण का ही परिचय दिया।

–मंगलराम चौधरी, *सांगाणा(जालौर)*

इंण्डिया नहीं भारत

हमारे देश का नाम इण्डिया नहीं भारत करने का सांसद शांताराम का प्रस्ताव सराहनीय है।भारत शब्द की व्यापकता को संसद में प्रस्तुत कर श्री नाइक ने देशवासियों का उत्साह बढ़ाया है। अन्य सांसदों को भी उनका अनुकरण करना चाहिए।

–सांवला राम नामा, *भीनमाल (जालौर)*

–प्रेम प्रकाश खाण्डल, *रजवास (टोंक)*

–रोशन लाल गोखरू , *कांगनी(भीलवाड़ा)*

–रावताराम, *रेवदर (सिरोही)*

खण्डो बल्लाल की राष्ट्रभक्ति

बाल-किशोरों के पृष्ठ पर खण्डो बल्लाल की अद्भुत राष्ट्रभक्ति पढ़ी। उन्होंने स्वयं को तो राष्ट्रहित के लिए बलिदान किया ही साथ ही संभाजी के धुर विरोधी गणों जी को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।

–टेक चन्द शर्मा, *झुन्झुनू*

कोरिया की प्रगति

विश्व वृतांत में कोरिया की प्रगति का रहस्य पढ़ा। वास्तव में अनुशासन से ही राष्ट्र महान बनता है। नागरिकों की स्वधर्म, स्वराष्ट्र एवं स्वभाषा के प्रति अटूट निष्ठा ही उन्नति का कारण है।

–नैनाराम, भादरलाऊ*(पाली)*

'स्व' का प्रखर अभिमान ही कोरिया की प्रगति का रहस्य है। भारतीयों को भी कोरिया वासियों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

–दिलीप खत्री, *तिवरी(जोधपुर)*

उपभोक्तावाद के खतरे

आन्द्रे मैरी दुसात का आलेख 'पश्चिम की गलती भारत में नहीं दोहराई जाये ' हमारी आँखें खोलने वाला है।

–किशोर सोनी, *नयापुरा(पाली)*

विदेशी षड्यन्त्र

'पचास साल पहले ही बन गया था भारत में कंप्यूटर' सिद्ध करता है कि भारत कभी पीछे नहीं रहा किन्तु कुछ देश इसे पीछे दिखाने या करने का प्रयास कर रहे हैं।

–भूपेन्द्र सिंह तंवर, *श्रीमोहनगढ़(जैसलमेर)*

नीरज रेनवाल
निदेशक
99280-84509
94131-51673

विदुर नवोदय

सीनियर सैकण्डरी स्कूल
संकाय - विज्ञान वर्ग
राज. का आठवां सर्वश्रेष्ठ विद्यालय
1-ग-8, टीचर्स कॉलोनी, केशवपुरा, कोटा (राज.)
Ph. 0744-2401002

प्रोमो प्रिन्ट्स

95, हरि मार्ग, सिविल लाइन्स, जयपुर
Mob. No.09829327806 (Vivek Arora), 09829757804 (Dhruv Arora)

Manufacturer of:-
T-shirts
School Uniforms
woolen Jackets
sports wears
Track Suits
Corporate Uniforms

Printing on Garments:-
Digital Prints
Photo Prints
Rubber prints
Foil prints
Cap Printing
Studs Prints

माध्यमिक सरस्वती बालिका राष्ट्रीय विद्या मंदिर

पुलिस थाने के पीछे, कोटपूतली जिला जयपुर ३०३१०८
(भारतीय शिक्षा समिति, जयपुर से संबद्ध एवं आदर्श शिक्षा परिषद् जयपुर द्वारा संचालित)

आवश्यकता

विद्या मन्दिर के लिए सेवाभावी, परिश्रमी एवं निष्ठावान आचार्याओं (केवल महिला) की आवश्यकता है। नियुक्ति पूर्णतः अस्थायी एवं सत्र समाप्ती तक है। सेवा के आधार पर आगे भी सेवा वृद्धि पर विचार किया जा सकेगा।
१. वरिष्ठ आचार्या- विज्ञानः गणित, अंग्रेजी, संस्कृत   वेतनः योग्यतानुसार
२. आचार्य - सामान्य ०४ योग्यताः स्नातक (प्रशिक्षित एवं अनुभवी को प्राथमिकता)
आवेदित पद हेतु सादा कागज पर आवेदन के साथ प्रमाण-पत्रों की फोटो प्रति, अपनी पासपोर्ट साईज फोटो एवं स्वयं का पता लिखा डाक टिकट सहित लिफाफे के साथ आवेदन करें या मिलें। जिसके लिए कोई खर्चा देय नहीं होगा।

ॐ

श्रीराम जन्म भूमि विशेषांक
के प्रकाशन पर हार्दिक
शुभकामनाएँ

जय कुमार सोमानी

सुभाष नगर जयपुर 302016
eksck.9829099909

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

निर्मल नाहटा
पार्षद वार्ड नं.18 जयपुर नगर निगम
अध्यक्ष- अपराधों का शमन एवं समझौता समिति

नाहटा कलर स्टोन

जनपथ,चौमू हाउस, जयपुर (राजस्थान) Mob 9829085026

श्री गुरु जी छात्रावास

उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर, राजापार्क, जयपुर
(H$ j Zd_r go ÛmXe VH$ àde na j nh$ Ahmm àde)

h_ma {deft VmE§

1. gw\vdpñWV EdS>g{Yà A§lgo ` À$ A§dg Ë& 2. m{ñ>H$ EdS>é{M H$a ^mo OZ Ë& 3. {Z {_V I bH$ñ H$ñ` dñWm& 4. {dem bkmlb àm A{V{a³ H$ noB§&5. ardA H$g~go naUm{dÙm ^ mv H${dÙm` Ë&6. 54 d{ @mazd{dÙm` _IA~ VH$54 Nm ñh$ ~mo S>© ñWmZ Ë& 7. gwìdpñWV g§UH$(H$ã`yQ>a) n«erbmËl& 8. H$ nE H$Ër-ÛmXer _{dkmZ, dm{UÁ AmaH$ rg§$n_{ej UH$ì` dñWm Ë&

gr{Z ag H$ Sa {dkmZ naj mn[aUm

gì	H$b gS` m	àW_	{ÛVr	V¥Vr	AZwÎmrU©	CÎmrU© à{VeV	~moS>© ñWmZ
2009-10	109	80	29			100%	
gr{Z ag H$ Sa dm{UÁ naj mn[aUm							
2009-10	173	143	30			100%	
H$ nAi> ~moS>© naj mn[aUm							
2009-10	67	60	7	-	-	100%	100 H$ _[aQ> AmR>dm H$
g H$ Sa naj mn[aUm							
2009-10	110	64	26	-		100%	~moS>© _[aQ> _ 18 dm§

Xm_moXa Xg_mZr AÜj , à~Ý g{_{V | S>m. Ym{ZrdmV ^ Q>Zmr g{Md, à~Ý g{_{V | am_ZÝX Mm¡Yar àYmZmMm¶©

राजस्थान सोजत की मशहूर
सौन्दर्य व सुहाग का प्रतीक

एक्सपोर्ट क्वालिटी

REGD No. 567862

PH. 02960
(F) 222255
(R) 222782

xgyksr esagnh m|ksx

कलश मेंहदी पाउडर

कैलाश हिना पाउडर
सोजत सिटी (राज.) 306104
नेमीचन्द गहलोत, सम्पत राज, राकेश गहलोत
मो. 9414121782,9413878255